रजवाड़ी लोकगीत

सपादिका एवम् अनुवादिका

पद्मश्री लक्ष्मी कुमारी चूण्डावत

चित्र मुख पृष्ठ—पद्मश्री कृपालसिहजी शेखावत

चम्पालाल रांका एण्ड कं०
धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता
जयपुर-302003 फोन : 75241

आत्म निवेदन

यह तो एक तथ्य है कि पिछले दशक में लोकगीतो पर काफी लिखा गया है। सग्रह भी प्रकाशित हुए हैं। रेडियो और मच पर भी इनका प्रचार और प्रसार हुआ है। स्कूलो एव कालेजो के मच पर भी ये काफी चल रहे हैं, परन्तु साथ ही यह भी देखने मे आ रहा है कि जन-जीवन से इनका निष्कासन तेजी से होता जा रहा है। यह तथ्य चिंता पैदा करने वाला है। पहले जहा घर-घर मे लोकगीत गाये जाते थे, वर्षा की पहली झडी लगी, घर घर मे गीतो की ध्वनि मुखरित हो उठती। घर में सास बहू दो हैं तो दोनो ही मिलकर गाने लगती। चक्की पीसने के साथ तो लोक-गीतो और हरजस का अटूट सम्बन्ध था। खेतो मे काम करते समय गीत का सहारा था।

अब शनै शनै नहीं, तेजी के साथ यह आनन्द विलुप्त होता जा रहा है। इसके एक नही, कई कारण हो सकते हैं।

इधर सुसस्कृत समाज का ध्यान इस ओर झुका है। जहा बडे-बडे सास्कृतिक आयोजन होते हैं, वहां लोक नृत्य एव लोक-गीतो का प्रदर्शन अनिवार्य सा होता जा रहा है। यह लक्षण शुभ है। परन्तु थोडे से गिने चुने गीत ही बार-बार दोहराये जाते हैं। लोकगीतों के नाम पर तोड-मरोड कर शब्दो तथा धुनो का कचूमर निकाला जा रहा है वह बडा हानिकारक सिद्ध हुआ है।

यदि हम लाक-गीतो को अलग-अलग श्रेणियो मे विभाजन करें तो एक श्रेणी ऐसी है जिन्हे रजवाडी गीत कहा जाय। है तो ये भी लोकगीत ही क्योंकि लाखो लोगो मे गाये जाते रहे हैं। इन रजवाडी गीतो को साधारण लोकगीतो के मुकाबले अधिक परिष्कृत कहा जा सकता है—राग

की नजर से तथा साहित्यिक मापदण्ड मे। मुझे कुछ ऐसा लगता है कि जहा लोकगीतो पर काम हो रहा है वहा उसी के एक अग इन रजवाडी गीतो को भुलाया जा रहा है। स्पष्ट कारण तो नही कहा जा सकता परन्तु कोई इन्हे सामतवाद का प्रतीक समझता है तो कोई इनको विलास-गीत समझता है या जानकारी नही है। इन रजवाडी गीतो मे प्रेम, विलाप, शिकार, मदिरा, शूरता एव सामती सस्कृति ऊभर कर आई हुई है। इनकी धुनें परिपक्व हैं और कई पीढियो ने इन्हें परिष्कृत करने मे अपने आपको खपा दिया। अनेक गायक जातियो ने इन पर अथक परिश्रम किया है तथा कवि हृदयो ने इनमे शब्दो को चुन-चुन कर रखा है। राजस्थान की शासक-सस्कृति का एक सजीव चित्रण इन गीतो मे पाया जाता हैं। इतिहास, सस्कृति, साहित्य और राग इन सभी दृष्टियो से इन गीतो का महत्व है। ये गीत आजकल तेजी से विलुप्त होते जा रहे हैं। इनकी रक्षा करना, सभालना तथा प्रकाश मे लाना इस क्षेत्र मे कार्य करने वालो का कर्तव्य हो जाता है। इनकी धुनो को तो तेजी से भूलते जा रहे हैं। गायक भी कद्रदानी की कमी के कारण गाना छोडते जा रहे हैं।

रजवाडी गीतो का वर्गीकरण दो भागो मे किया जा सकता है। एक तो पेशेवर गायकों द्वारा गाये जाने वाले गीत, दूसरा गृहणियो द्वारा गाये जाने वाले।

पेशेवर गायको द्वारा गाये जाने वाले गीतो के साथ ताल, वाद्य तो होना ही है साथ मे शास्त्रीय सगीत का भी पुट होता है। वाद्यो मे ढोल, नक्कारा, ढोलक, सितार, सारगी, सिंधी सारगी और अब हारमोनियम प्रमुख वाद्य है। राजस्थान की माढ राग अपनी है और बडी प्रसिद्ध रही है। जैसलमेर प्रान्त का पुराना नाम माढ प्रदेश रहा है। इसी से इसका नामकरण माढ राग हुआ। इस प्रदेश की पुत्रिया भी माढेची कहलाती थी। इन गीतो मे यह शब्द उनके लिये प्रयुक्त होता रहा है। शुद्ध, देश, मारग, सूप, मामेरी तथा मारू रागो मे पेशेवर गायक गाते रहे हैं। वीरो के जागडे दिये जाते हैं तथा सिंधु भी देते हैं। जागडो का अभिप्राय होता है, जो वीर अद्मुन सारस और पराक्रम दिखाते हैं उनका वर्णन इनमे किया जाता है। जागड एक पेशेवर कौम भी है जो युद्ध मे तथा सवारी मे जागडे देते हैं अर्थात् गाते हैं। सिंधु राग युद्ध की रागिनी है।

वधनोरे केसर बटे, गावे संधवा गीत
तुझ गोरी रे कारणे, वाज रह्या रणजीत ॥

गौरी तेरे लिये यह युद्ध हो रहा है रणजीत (नक्कारे) बज उठे हैं, सिंधु राग गाई जा रही है।

पेशेवर गायको की सख्या भी मेरे अनुमान से पचास हजार से अधिक ही होनी चाहिये। राणा, दमामी, लघा, मागणियार, ढाढी, मिरासी, जागड, नगारची आदि कई जातियाँ हैं। जो गावो मे बिखरी पडी है। इन गायको द्वारा गाये अनेकानेक गीत राजस्थान के इस कोने से उस कोने तक लगातार गाये जाते रहे तथा एक से लोकप्रिय है।

उदाहरणत मूमल, वायरियो, रतन राणा, बाघो, लाखो, पणिहारी, घाटी को नगारो, सूवरियो, मुडियो नाहि महेश, काछबियो, घूसो आदि अनेकानेक नाम गिनाये जा सकते हैं। गृहस्थ महिलायें गायको के सगीत का पूरा-पूरा आनन्द लेती है। इनकी स्त्रियाँ भी ऊचे दर्जे की गायिकाए हैं। इन्हे मगलामुखी कहा जाता है। गवरी बाई जोधपुर, खुशाली बाई जैसलमेर, मागी बाई, नाराणी बाई, तुलसी बाई उदयपुर, ललता बाई किशनगढ की प्रतिभा से तो आज की पीढी भी सुपरिचित है। उदयपुर के पीछोला तालाब के नावघाट पर बसे नक्कारचियो के मोहल्ले को अनेक महिला प्रतिभाओ को जन्म देने का गौरव हासिल है। प्रत्येक रियासत और ठिकाने मे इनकी कला को प्रोत्साहन और सरक्षण भरपूर किया जाता था। नियमित रूप से शाम के समय ये मगलामुखिया ठिकाने के रावले मे जाकर गाती ही थी, एवज मे इन्हें खेत, जमीन, कुए आदि आजीविका का पूरा साधन दिया जाता। विवाह के अवसर पर तो ढोल की पूजा के साथ इन महिलाओ के ललाट पर तिलक के साथ मोतियो के अक्षत लगाकर विदा किया जाता था। पद्मश्री अल्ला जिलाई बाई ने वृद्धावस्था मे भी श्रोताओ को मत्र मुग्ध कर रखा है।

इन वर्षो मे श्री किसनजी (कुचामण), शकरलाल (घाणेराव), मुनीरखाजी (सीकर), शकर दमामी (पोकरण), ऊकारलालजी (अजमेर), शिवनारायणजी डग्गा (बगडी), मुन्नीलालजी (बीकमकौर), गणपतलाल डागी (जोधपुर), नूरमोहम्मद लघा, अल्लाउद्दीन लधा, खीवरो मागणियार, चन्द्र गधर्व (उदयपुर), दानसिंह जी (जयपुर), अब्दुल गनी (बीकानेर) आदि कई प्रसिद्धि प्राप्त गायक है जो रजवाडी गीतो की परपरा को जीवित रखे हुए हैं।

गृहस्थ महिलाए घर-घर मे रजवाडी गीत गाती है। हालाँकि गाते समय इनके साथ कोई ताल तथा वाद्य नही रहता। सामूहिक रूप से बैठ

रहता। दातारी करने का (इनाम बख्शीश देने का) उसे व्यसन था। 'ओळगू' गाने बजाने वाले उसे घेरे रहते हैं। वह खुले दिल और खुले हाथ से धन लुटाते रहना। 'ना' कहना तो उसने सीखा ही नहीं था। उसकी दातारी के अलमस्ती गीत अब भी गाये जाते हैं। गायक लोग प्रभात के समय बाघा के गीत गाते हैं। उनका विश्वास चला आता है कि बाघा का नाम लेकर दिन का प्रारम्भ करने से जीविका प्राप्त होती है।

बाघा का यह गीत स्टेन्डर्ड गीत है। घानी राग मे इन्ही शब्दो मे और उसी समय पर राजस्थान के सभी रजवाड़ो म गाया जाता रहा है। बचपन म हमारे सैकड़ों प्रभातो का प्रारम्भ इसी गीत को सुनते हुए हुआ। ढोलक के ऊपर दम्मामणिया गाती, शायद ही कभी ऐसा दिन गया हो जिस दिन मेरी माता जी ने यह गीत सुनने के बाद इनाम न दिया हो। उस समय की महिलाए इसके पीछे की गाथा को, गीत के मर्म और अर्थ को तथा राग एव पृष्ठभूमि को खूब समझती थीं। हम लोगो को समझाती थी।

उस युग की कई झलकिया यह गीत प्रस्तुत करता है। उस समय का अलमस्त जीवन, दातारी बिखेरने की चाह, शराब का प्रचलन, रोमांटिक जिन्दगी, गायको की कद्रदानी उस समाज का एक जीवित अग था। 'टोळे के टोळे खाजरू' वाक्य उस समय पशुधन की बहुतायत जाहिर करता है। जब बकरो के टोले मे "खाजरू" (नर बकरे) काटने के बडी तादाद म रखे जाते थे। मदिरा निकालने की भटि्टयां निजी तौर से रखी जाती थी। कलालिन का समाज म अपना एक अनूठा स्थान था।

इसी भांति 'लाखा" गीत ब्राह्म मुहूर्त मे राग विभास बेळावळ म गाया जाता था। तीसरे पहर म 'रिडमल' सामेरी राग में गाया जाता है। लाखा और रिडमल भी प्रसिद्ध, दानी वीर और प्रेमी हुए है।

रजवाडी गीतो म सोढा राणा का लेकर अनेक गीत गाये जाते हैं। रतन राणा तो प्रसिद्ध माढ है। धाट प्रान्त मे सोढा राजपूतो का आधिपत्य रहा। यह इलाका आजकल पाकिस्तान मे है। यह राजस्थान का ही भाग था। अमरकोट इस इलाके की राजधानी थी। यहाँ के शासको की पदवी राणा होने के कारण ये साढा राणा कहलाते हैं। लोक गाथाओ तथा लोक गीतो में सोढा का बहुत प्रसग आता रहता है। जैसलमेर बाडमेर तथा धाट प्रदेश के गायको ने और कथाकारो ने सोढो को लेकर अनेकानेक

रचनाए की है। मूमल की परिणय-गाथा महेन्द्रा के साथ चलती है जो ग्रमरकोट का सोढा राणा था। मूमल के प्रसिद्ध गीत मे कहा जाता है। 'हालो तो ले चालू ग्रमराणें रे देस' ग्रमराणा का तात्पर्य यहां ग्रमरकोट से है। थाट प्रदेश थार मरु का हिस्सा है। लम्बा चौडा सफेद रेगिस्तान होने के कारण इसे 'धोळी थाट' कहा जाता।

उमादे भटियाणी "रूठी राणी" के नाम से प्रसिद्ध रही है। यह जैसलमेर के राव लूणकरण की पुत्री थी और जोधपुर के राव मालदेव के साथ उसका विवाह हुआ था। इनकी शादी स १५९३ मे वैसाख कृष्णा ४ को हुई। उमादे ने स० १५९५ मे ग्रजमेर में 'रूसणा' लिया था। उसके रूसने का कारण उसकी दासी भारमली थी, यह कहानी सर्वविदित है। आगे चलकर उमादे जन्म भर रूठी ही रही। स० १६१५ मे कार्तिक शुक्ला १५ को रावजी की पगडी को गोदी मे लेकर उमादे केलवा गाव मे सती हुई थी।

यहा उमादे सम्बन्धी एक राजस्थानी लोकगीत दिया जाता है। लोक मानस इतिहासो के तथ्यो को कसौटी पर कसने का प्रयास नहीं करता। वह तो उन मूल तथ्यो को ग्रौर सत्य को ग्रपना लेता है। जिसमे मानव, मानव एक समान है। राव ग्रौर रक का उसमे भेद नहीं। उमादे भी ग्रपने पति से नाराज होकर कहती है—ग्राप ग्रपने महल-दुर्ग ग्रपने पास रखो। मैं खेती करके पेट भरूगी। नारी की पीडा नारी ही समझ सकती है। लोकगीत प्राय स्त्रियो के रचे हुए होते हैं। इस लोकगीत ने भी भटियाणी राणी की मर्मान्तिक व्यथा को समझा है। इतिहासकार ग्रौर साहित्यकार उस पीडा को नही समझ पाये हैं। किसी ने उसके मान की प्रशसा की है, किसी ने उसके स्वाभिमान को राजपूत चरित्र की महत्ता बताया है। पर उस 'रूठी राणी' के मर्म की व्यथा को लोकमानस ने समझा है। जीवन भर ग्रपूर्व दृढ़ता से ग्रपना हठ निभा लेने के बाद ग्रतिम समय मे वह नारी जाति को एक सदेश देती है। "बहिनो, तुम कभी मेरे जैसा लबा रूसना मत लेना। मैं ग्रपने प्रियतम से जीवन भर रूठी रही, मैं उस ग्राग मे धधकती रही, जिस ग्राग के मुकाबले में यह चिता की ग्राग भी शीतल है।" उमादे के मुँह से नारी के ग्रन्तस्तल की ध्वनि लोकमानस ने कहलाई है। उसने ऊपरी, शान ग्रौर ग्रान को नही देखा। उसने तो ग्रन्तस्तम की गहराई तक गोता लगा मानस की थाह ले ली है।

मजनू प्रेम गीत है। बडी सुन्दर राग मे गाया जाता है। इसमे नायक है एक मुसलमान और नायिका नागर ब्राह्मणी। दो सस्कृतियो का मिलन एक बोल मे साफ हो उठता है। नायिका कहती है। "मजनू टोपी परी रे उतार, पचरग लेर्‌यो बाध ले।" अपने प्रेमी को राजस्थान की सुन्दर पचरगी पगडी मे देखना चाहती है। इस इच्छा को उसने भी पूरा किया ही होगा।

'कलाळी' गीतो का रजवाडी गीतो मे एक विशेष स्थान है। अनेक कलाळी गाई जाती रही है। कई कलाळियों मे सुन्दर दोहे होते हैं। कुछ कलाळिया घटनात्मक होती है। पातुडी और 'सजन' कलालण प्रसिद्धि प्राप्त रही है। प्रमुख 'कलाळिया' उनके नाम पर गाई जाती हैं। प्रस्तुत कलाळी उक्त युग को प्रतिबिम्बि करती है जब कलाळो के घर पर मदिरा की भट्टिया निकला करती थी और समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति उनके घर पर जाकर पिया करते थे। पुरुष वर्ग मदिरा बनाने के काम मे लगा रहता था और महिलाए मदिरा पिलाने का धधा करते हुए भी अपनी प्रतिष्ठा एव आत्म-सम्मान को कैसे बनाये रखती थी, पातुडी कलाळ इसका प्रतीक है।

झालो गीत भी सुन्दर गीत है। 'झालो' नाम से तीन गीत गाये जाते है। 'झालो' शब्द अपने आप मे इतना सुन्दर और मीठा है। इस शब्द का अनुवाद किया जाय ऐसा दूसरा शब्द नहीं। सकेत कहें तो रूखा हो जायेगा। इशारा कहे तो अश्लील हो जायेगा। जो भाव 'झालो' शब्द मे है उसका वर्णन नही किया जा सकता। 'म्हा सू झालो सहियो न जाय' मैं गभीरता और कमनीयता के साथ मिठस है।

मधकर, पनजी, नागजी, ढोलामारू, जलाल, सोरठ, मजनू, रैण, झालो और काछबिया के प्रेम तथा रोमास की कथावस्तु सुनने वाले को आनन्द-सागर मे गोते लगवाती रहती है। मूमल की मधुरता, पणिहारी की पावनता, बाधा की अलमस्ती, रतन राणा का क्रन्दन, सूवरिया का शौर्य, मुर्दा मन म भी एक बार जीवन के अकुर जगा देते हैं। नथमल, राणो महदरो, खुमाणाजी, सोढो राणो, मध्ययुगीन राजस्थान की सस्कृति का साकार चित्र खीच देते हैं। मारवाड का 'धूसो', 'नाव की असवारी,' हजारी गुलदावदी रो फूल', एक अजीब समा बाध देते हैं।

हिचकी, ओळु, रतन मीयालो, चौमासो, रैण, गार्हस्थ्य की रग-बिरगी तस्वीरो का एक अनोखा अलबम है।

घाटी को नगारो, वीरों और गायको के स्मृतिगीत जागडे गाते हैं तो आखा के आगे युद्ध स्थली का दृश्य नाचने लगता है।

खेद है इन्हें गाने वाले कम बचे हैं। सुनने वाले और समझन वाला का ह्रास तेजी से होना जा रहा है। आज अगर कद्रदान आगे आयें तो ये विलुप्त होते हुए गीत बच सकत हैं।

रजवाडी गीतो मे यदि वीरतापूर्ण गीत न होते तो आश्चर्य होता। जिस प्रदेश ने सदियो तक आक्रमणकारियो के आक्रमण सहे हो, जहा के रहने वालो का मुख्य कार्य ही युद्ध मे भूझना रह गया हो उस तबके मे शौर्य पूर्णगीत गाये जाना स्वाभाविक रहा होगा। भभूर और भोमिया का अर्थ ही शहीद होना है। राती जग्गा मे देवी देवताओं के साथ भुभारजी भोमिया और सती माता का अभिनन्दन किया जाता है। शहीद एक स्थान पर होता है परन्तु उसकी पूजा गाव गाव मे होने लगती है। लोक-पूजा के के लिए न मन्दिर की आवश्यकता है न शास्त्रोक्त विधियो की। लोकमानस किसी भी स्थान पर अपने शहीदो की पूजा कर लेता है। किसी वृक्ष के नीचे, चाहे वह कैर हो, बेर हो या खेजडा, ध्वजा लगाकर पूजा स्थल बना दिया जाता है।

राजस्थान के साहित्य म वराह की शिकार को बडा महत्व दिया गया है। इसको वीरता का प्रतोक माना गया है। पाडा खुरा, एकल, सूर, सूवरियो, वराह, डाढाळ गैदन्ता भू डण भरतार आदि नामो से पुकारा गया है। शूकरी को भू डण और बच्चा को छेवरिया कहत हैं। सूअर की शिकार, घोडे दौडा कर भालो से की जाती थी। सर्दी इस शिकार की ऋतु समझी जाती है। शेर की शिकार का अपना आकर्षण रहा है। 'भगरो छोड दे वन का राजा गीत म वास्तविकतापूर्ण सुन्दर चित्रण हैं। सूअर की शिकार के गीतो के कुछ नमूने प्रस्तुत किये हैं।

रजवाडो में शिकार का व्यसन तो अवश्य था, परन्तु उनकी रक्षा का पूरा पूरा प्रबन्ध किया जाता था। रक्षित जगल होते। मजाल क्या उसमे कोई शिकार कर ले। ऋतु के विपरीत न खुद शिकार करते थे और न किसी को करने दिया जाता। गर्भाधान ऋतु म शिकार करना घोर पाप समझा जाता। मादा का वध नही किया जाता। बच्चो के बडे होने की आयु का पूरा पूरा ख्याल रखा जाता। पशु रक्षा सम्बन्धो नियमो के तोडने वाला को सख्त सजा देने का आम रिवाज था।

गीतो के महासागर मे से थोड़े रत्न निकाल कर विद्वानो के सामने रखने का छोटा सा प्रयास किया है। यह जानते हुए भी कि काफी त्रुटियां और अनेक कमिया रह गई हैं, विद्वद जन इन्हें परखेंगे और जिस भावना से यह कार्य किया है, उसे पसन्द करेंगे।

यह सही है कि कई गीत अधूरे भी हैं उनके बोल और पक्तिया मेरी जानकारी मे न होने के कारण छूट गई है। इन दिनो गायको को भी गाने के अवसर नही मिलने के कारण भूल पड गई है। कुछ याद है, कुछ भूल गये हैं। यह भी सही है कि केवल शाब्दिक और साहित्यिक स्वरूप ही मैं रख पाई हू। स्वर और ताल की कसौटी पर रखकर गायक गायेंगे तो उन्हे दिक्कतें भी आयेगी। ऐसी अनेक खामियो के बावजूद भी मैंने इस पक्ष को रखना उचित समझा।

मेरी मान्यता है कि रजवाड़ी गीतो को स्वर लिपि के साथ प्रकाशित करने पर ही इनके साथ न्याय होगा। इनके गायक बहुत थोडे रह गये है और तेजी के साथ भूलते जा रहे हैं। अत स्वरलिपि के साथ प्रकाशित करने की आज पूरी आवश्यकता है।

विनीत

लक्ष्मी कुमारी चूण्डावत

ज्ञातव्य बातें

राजस्थानी मे स्त्री-पुरुषो, पति पत्नी एव प्रेमी प्रेमिका को निम्नांकित नामो से पुकारा जाता है ।

अडबीला	अनोखा कवर जी	अलबेलो
अलवलियो	अलवलियो असवार	अन्तर कपटी
आलीजो	आलीजो भवर	आटीलो
अधारा घर रो चानणो	ईसर	उछाछळो
उमराव	उलझयो रेशम	ऊगतो सूरज
अचपळो	कन्थ	कमधजियो
कामणगारो	केसरियो	केसर रो क्यारो
केसरियो बालम	कोडीलो	कवर जी
ख्यालीडो	गढपतिया	गाढ़ा मारूजी
गायडमल	गाहड रा गाडा	गुमानीडो
गौरी रो सायबो	गौरी रो बालमो	गौरी रा सूरज
गौरी रो सूरज	धरण जांरण	धरण हेताळु
धरमड	चतर	चतुर सुजान
चितौडो	घुडला रो सिरणगार	छैल भवर
छैलो	जलाल	जलालो बिलालो
जलामारू	जसलोमी	जलो
जालम जोध	जोडी रा भवरा	जोडी रो वर
जोडी रो जलो	जोडी रो जोधो	झिलती जोड रो
झुकता बादल	ढोला	दिन दुल्हा
दिल जानी	दिसडी रा दिवला	दुनिया रो दीपक
दुसमरण रो साल	देसोती	धव

घणी	घणवाळा	धण रो सायबो
धीगड मल्ल	नटवरियो	नवल वनो
नैणा रो लोभी	नोखीलो	प्यारो
पना मारू	परणियो	परण्यो स्याम
पातळियो	पावणा	पिया
पिव	पीवल प्यारी रा ढोला	पीतम
फहरती फोजा रा माझी	फूटरमल	फूल गुलाब रा
फूला रो भारो	फौजा रा लाडा	फौजा रो माझी
वरसतो बादल	वरसाळु बादळ	बालमो
बाईजी रो वीर	बाकडली मूछा रो	बाकडली मूछा रो ढोलो
बिलालो	जलाल	बीभलिया नैणा रो
भरतार	भरजोडी रो	भालाळा
भोळी बाई रो बीर	भोळो भवरो	भवर
मतवाळो	मदछकिया	मदवा मारूजी
मन वसियो	मनभरियो	मन मेळू
मरद मूछाळो	मस्ताना कवरजी	माटी
माथा रो मोड	मान गुमानी ढोला	मारूजी
माणीगरा	माणेस	मिजलस रा माझी
मिजाजी ढोला	मिरगानैणी रो बालमो	मिमरी रा कुंभा
मीठा मारू	मीठा मैमान	मुरधरियो
मूछाळो	मूघा राज	मेवाडा
मेवासी	मवासी ढोलो	मोट्यार
मोटाराजवी	मौजी सायबो	रजिया
रणरसियो	रणबको	रसियो
राईवर	राज	राजा
राजन	राजाणी	राजकवर
राजिन्द	राजीडा	रायजादो
रावतियो	रीसाळु	रूडाराज
रग भीनो	रग रसियो	रगीलो
रग दूल्हो	लळवळियो	लसकरियो
लहर लोभी	लाखा रो लोडाउ	लाखा रो लहरी
लागणिया नैणारो	लाडा	लाडो

लाल नणद रो वीर	व्हालो	वना
वर	वादीलो	बींद
स्याम	नणद रो वीर	सरदार
साजन	सायबो	सावणिया रो मेह
सासू सपूती रा पूत	सासू सपूती रा जोध	सासू सुगणी रा पूत
साहिबो	साइनो	सावण रो सिणगार
सावळियो सिरदार	सावळिया	सिरदार
सिर रो सेवरो	सींगडमल्ल	सुगणा साहिब
सुगणो	सैलाणी भवरो	सेजा रो सवादी
सैण	सैलीवाळो	सैंणाळो
सैंणा रो सेवरो	सैंणा रो लोभी	सोजतियो सिरदार
हगामी ढोलो	हठीलो	हरियाळो
हिवडा रो जिवडो	हेताळू	हेम जडाऊ
हुसला हालो रा ढोला	हजा	हजा मारू

स्त्री

अपछर	अलबेली	अवला
अरधगी	अस्तर	आभा री बीज
आभा बीजळी	अपछरा	कामणी
कामणगारी	कामणी	कीरत्या रो भूमको
कू भवच्चा	केळुकाब	खजन नैणी
गुललजा	गुलहजा	गेंद गुलाल
गौरी	गौरगिया	गोरल
घर री नार	चाळा गारी	चित्राम री फूतळी
चित हरणी	चित चोर	चोतालकी
चूडाहाळी	चदमुखी	चदावदनी
छदगाली	छोटा लाडी	जगमोठी
जगव्हाली	जुवती	जोरावर लाडी
भोला लैणी	डावर नैणी	ढेल
तिरिया	तीखा नैणा	दारा
धण	नखराळी	नवलवनी
नाजकबनी	नाजो	नाजुकडी सी नार

धणी
धीगड मल्ल
नैणा रो लोभी
पना मारू
पातळियो
पिव
फहरती फोजा रा माफी
फूला रो भारो
वरसतो बादल
वाईजी रो वीर
विलालो
भरतार
भोळी बाई रो वीर
मतवाळो
मन बसियो
मरद मूंछाळो
माथा रो मोड
माणीगरा
मिजाजी ढोला
मीठा मारू
मूंछाळो
मेवासी
मोटाराजवी
रणरसियो
राईवर
राजन
राजिन्द
रावतियो
रग भीनो
रग दूल्हो
लहर लोभी
लागणिया नैणरो

धणवाळा
नटवरियो
नोखीलो
परणियो
पावणा
पीवल प्यारी रा ढोला
फूटरमल
फौजां रा लाडा
वरसाळू बादळ
बाकडली मूछा रो
जलाल
भरजोडी रो
भोळो भवरो
मदछकिया
मनभरियो
मस्ताना कवरजी
मान गुमानी ढोला
माणेस
मिरगानैणी रो बालमो
मीठा मैमान
मूघा राज
मेवासी ढोलो
मौजी मायबो
रणबको
राज
राजाणी
राजीडा
रीसाळू
रग रसियो
लळबळियो
लाखा रो लोडाउ
लाडा

धण रो सायबो
नवल बनो
प्यारो
परण्यो स्याम
पिया
पीतम
फूल गुलाब रा
फौजां रो माफी
बालमो
बाकडली मूछा रो ढोलो
बीभलिया नैणा रो
भालाळो
भवर
मदवा मारूजी
मन मेळू
माटी
मारूजी
मिजलस रा माफी
मिसरी रा कुंभा
मुरधरियो
मेवाडा
मोट्यार
रजिया
रसियो
राजा
राजकवर
रायजादो
रूडाराज
रगीलो
लसकरियो
लाखा रो लहरी
लाडो

लाल नणद रो वीर	व्हालो	बना
वर	वादीलो	बींद
स्याम	नणद रो वीर	सरदार
साजन	सायबो	सावणिया रो मेह
सासू सपूती रा पूत	सासू सपूती रा जोध	सासू सुगणी रा पूत
साहिबो	साइनो	सावण रो सिणगार
सावळियो सिरदार	सावळिया	सिरदार
सिर रो सेवरो	सीगडमल्ल	सुगणा साहिब
सुगणो	सैलाणी भवरो	सेजा रो सवादी
सैंण	सैलीवाळो	सैणाळो
सैणा रो सेवरो	सैणा रो लोभी	सोजतियो सिरदार
हगामी ढोलो	हठीलो	हरियाळो
हिवडा रो जिवडो	हेताळू	हेम जडाऊ
हमला हाली रा ढोला	हजा	हजा मारू

स्त्री

अपछर	अलबेली	अबला
अरधगी	अस्तर	आभा री बीज
आभा बीजळी	अपछरा	कामणी
कामणगारी	कांमणी	कोरल्यां रो झूमको
कू भवच्चा	पेळुकाब	सजन नैंणी
गुललजा	गुलहजा	गेंद गुलाल
गोरी	गोरगिया	गोरल
घर री नार	चाळा गारी	चित्राम री पूतळी
चित हरणी	चित चोर	चीनालको
चूडाहाळी	चदमुखी	चदावदनी
छरगाली	छोटा लाडी	जगमीठी
जगव्हाली	जुवती	जोरावर लाडी
झोला लैंणी	डावर नैंणी	ढेल
तिरिया	तीखा नैंणा	दारा
धण	नखराळी	नवलवनी
नाजकवनी	नाजो	नाजुक्यों री नार

नाजुकडी नानकडी नार नार
नारी नितवण नेनकडी नाजू
प्यारी पदमण पदमणी
परणी पराण पियारी पातळ पेटी
पातळडी पातुडी पिक बैणी
पूगळ री पदमणी पून्यू रो चाद फूतळी
फूलवती बहू बागा री कोयलडी
बादळ वरणी बाला भाम
भामण भारज्या महला
मारवण मारवणी मारू
मारुणी माणणी मिजाजण गौरी
मिरगा लोचनी मिरगा नैणी मीठा बोला
मीठा मरवण मूघ मेवामण
मोवनी मोटा घर की नार मदगत
रमणी रायजादी रगभीनी
रगरेळी रगीली रभालाडी
लाडी लाडीसा लुगाई
वनता बनी
वल्लभा वाम वीनणी
सदा सुवागण सायधण सायजादी
सारग बैणी सावणगढ री तीजणी सारग नैणी
सावण री तीज सुगणी सुवागण
सुगणी नार सुन्दर सुन्दर गौरी
हरियाळी हिरणाखियां हजा
हसाहाली

निम्नलिखित श्री जहूर खा मेहर के द्वारा सग्रहित किये गये हैं।

अतरियो बनडो अधारै घर रो चानणो अलबलियो असवार
आखडल्या रो ठार आतमा रो आधार ऊगता भाण
ऊगतै सूरज रो तेज ऊजळ दतो कानूडो
कान कवर सा काया री कोर
काळजै री कूप केळू री काब केळू रो पाण
केसर बरणो केसरियो भरतार कोटडिया रो रूपक

कोडीलो	खावद	
गाडाळ	गायड रो गाडो	गुडळो बादळ
गोपिया मायलो कान्ह	घर रो आधार	घर रो धणी
चतर रो चाद	छैल छबीलो	जीव री जडी
जोडी रो भरतार	जोबन रो जोड	तन रो ताईतियो
तारा बिचलो चाद	नैणा री जोत	टोळी माय सू टाळको
टोळी रो टीकायत	ढळती नथ रा मोती	परदेसियो
पीरजादो	म्हालो	फूटरियो
फूला बिचलो गुलाब	बागा मायलो चपलो	बागाँ रो सूवटो
बाताळु		भवरियै पटा रो
भाया रो लाडलो	मजलस रो माभी	मदछकियो मारू
मनभरियो	मन रो मोती	मन रो मीत
महला मायलो दिवलो	मन रो तीमण	महला रो मान
माथै रो मोड	मारूडो	
मिजाजी	मिसरी रो डळो	महमत मोरियो
राय	रिडमलो	रीसाळु राजा
रूप रो डळो	लळवळियो सरदार	लाखीणो भरतार
लाडो	बाढाळो	ससार रो सुख
सइयां	सईजादो बनडो	सरद पूनै रो चाद
सगा रो सूवटियो	सावळियो मोटियार	समदा जिस्या अथाह
साता बैना रो वीर	मायधण रो चीर	सायरमल
सायर सोढो	सासू जायो	सासू रो मोबी
सिर रो सेवरो	सुदर रो सायबो	सूरज रो साखियो
सेजा रो सुख	सैणा रो सूवटो	हरियाळो बनडो
हाटा मायलो हीरो	हाथा रो खतमी	हाथा री खामची
हिवडै रो हमीर	हिवडै रो हार	हीयै री जोत
हीयै रो हार	हथेळी रो दीयो	हिवडै रो हास
हेताळु हसलो	अचूकरा बोलणो	कमोदणी रो चाद
गिणगोर रो ईसर	गुण सागर	घण गीसाळु
चवरी रो रूप	चूडलै रा रूप	जीव रो आसरो
तुनक मिजाजी	घण रो धणी	नैणा रो वासी
नैणा रो चानणो	परदेसी सूवटियो	परभात रो रूप

बागा रो छैल	बागा रो मवरो	मनचोर
मन रो राजा	मडियोडो मोर	मिणधर
राग रो रसिया	राग रो रीझाळू	सुख रो सागर
सवाग रो चीर	सवाग रो धणी	सजा रो धणी
सेजा रो सिणगार	सेजा रो सूवटियो	सजा बिचलो स्याम
सेजा रो सरूप	सोरमियो	सजनी रो सूम्रो
सेजा रो सुखवासी	ग्रतर रो छकियो	ग्रलबेलो ग्रोठी
काचँ किरसलियें रा रूप	घणनेहाळु	घण बिलमाऊ
घणरूपाळु	घणसकाळु	घणहसा
घुडला रो ग्रसवार	छिरजगारो	जगमोवणो
थोडा बोली रो सायबा	नथडी रो मोती	नखराळो
नैनी नणद रो वीर	फूल बनी रो सायबो	बागा मायलो केवडो
बाजूडे री लूब	मिसरी मेवो	मैला रो मेवासी
मोवनगारो	रखडी रो उजास	रेजो रेसम
रेसम रो भारा	लाला बिचलो मोनी	ग्रतर रो फूवो
ग्राख्या रो काजळ	नैंणा रो नीर	नेतल रो भरतार
माथा रो मैंमद	रगीलो बादळ	बाडी रा भौंरा
केतकी रा कथ	मोजारा बगसण हार	ग्राख्या रा ग्रजन
सोळा कळा सुजान	चतुर बुद्ध रा जाण	धरती सा धीमा
भाखर जिस्या भारी	सुखकरण	दुख भजक

अनुक्रमणिका

क्रम सख्या		पृष्ठ
1.	सती	1
2.	भोमियाजी	4
3.	पाबूजी	6
4.	रतन राणा	8
5.	आयो आयो मेवाड़ा रो साथ	10
6.	म्होरतियो	12
7.	गाधण	14
8.	सोकड़ घूमर लेवे ए	17
9.	तीज	19
10.	तीज	21
11.	गणगौर	23
12.	सावण	25
13.	गुमानीड़ा	27
14.	रसिया री सेज	29
15.	हिचकी	32
16.	मारूजी	34
17.	नादान विछियो	36
18.	कलाळी	38
19.	पातुडी कलाळ	40
20.	झूमादे कलाळ	45
21.	दारूडी	48
22.	डूंगरिया पे मदडो	50
23.	कुंवरजी नं झालो	52
24.	ओळुं	54
25.	गरवो राजा	56
26.	बको घोड़ो	58
27.	मल्हार	60
28.	निरखणदो	62

29. जलो 64
30, भटियाणी राणी 66
31. मूमल 72
32. सोरठ 73
33, नागजी 75
34 सोढा राणा 77
35. राव खगार 80
36. मूंधा राज पधारिया 82
37. सियाळो 83
38. ओळु 85
39 खुमाणाजी 87
40. फामडी 90
41. सूवरियो 92
42 जावो मेवाडा सूरा री सिकार 95
43. मगरो छोड दे 97
44. बाघजी 100
45. लोहारी 103
46 प्यारा लागो म्हारा मजनू 105
47 कीम कर जाऊ 108
48 नेडी तो नेडी करजो पिया चाकरो 110
49 घूंसो 114
50 जागडो दुर्गादास जी को 116
51 लाखो फूलाणी 118
52 भाखर रा भोमिया 120
53 सुपनो 123
54 मनडा मोती 125
55 कुरजा 127
56 पणिहारी 133
57 मंडियो नाहि महल 137
58 ओळु 140
59 गोरबन्द लूंबाळो 142

सती

कठा रा वाजा वाजिया हरजी सू हेत लग्यो
कठा रा घुडिया है निसाए हरजी सू हेत लग्यो
केरपुरा वाजा वाजिया हरजी सू हेत लग्यो
राणी मा सती रा घुडिया निसाए हरजी सू हेत लग्यो

धाभाई जी ने वेग बुलाय हरजी सू हेत लग्यो
म्हारा वनजी ने सपाडो कराय हरजी सू हेत लग्यो
दरजी ने वेग बुलाय हरजी सू हेत लग्यो
राणी माँ सती रे पोसाक सीवाय हरजी सू हेन लग्यो

सोनीडा ने वेग बुलाय हरजी सू हेत लग्यो
राणी मा सती ने गणो पैराय हरजी सू हेत लग्यो
सोनीडा ने वेग बुलाय हरजी सू हेत लग्यो
राणी मा सती ने गणो पैराय हरजी सू हत लग्यो

कू कर छोडया मेडी गोखडा हरजी सू हत लग्यो
राणी कू कर छोडया रग म्हल हरजो स हेत लग्यो
हस हस छोडया मेडी गोखडा हरजी सू हेत लग्यो
मुळकत छोडया रगम्हल हरजी सू हेत लग्यो
वाया ! सरग नेडो घर दूर हरजी सू हेत लग्यो
दूध सोळावत दाभिया हरजी सू हेत लग्यो
वाया ! वू कर ढाबोली आग हरजी सू हत लग्यो

29	जलो	64
30,	भटियाणी राणी	66
31	मूमल	72
32	सोरठ	73
33,	नागजी	75
34	सोढा राणा	77
35	राव खगार	80
36	मूंघा राज पधारिया	82
37	सियाळो	83
38	ओळु	85
39	खुमाणजी	87
40	फामडी	90
41	सूवरियो	92
42	जावो मेवाडा सूरा री सिकार	95
43	मगरो छोड दे	97
44	वाघजी	100
45	लोहारी	103
46	प्यारा लागो म्हारा मजनू	105
47	कीम कर जाऊ	108
48	नेडी तो नेडी करजो पिया चाकरो	110
49	धूसो	114
50	जागडो दुर्गादास जी को	116
51	लाखो फूलाणी	118
52	भाखर रा भोमिया	120
53	सुपनो	123
54	मनडा मोती	125
55	कुरजा	127
56	पणिहारी	133
87	मुडियो नाहि महस	137
58	ओळु	140
69	गोरबन्द लू वाळो	142

सती

कठा रा वाजा वाजिया हरजी सू हेत लग्यो
कठा रा घुडिया है निसाण हरजी सू हेत लग्यो
केरपुरा बाजा वाजिया हरजो सू हेत लग्यो
राणी मा सती रा घुडिया निसाण हरजी सू हेत लग्यो

धाभाई जी ने वेग बुलाय हरजी सू हेत लग्यो
म्हारा बनजी ने सपाडो कराय हरजी सू हेत लग्यो
दरजी ने वेग बुलाय हरजी सू हेत लग्यो
राणी माँ सती रे पोसाक सीवाय हरजी सू हेत लग्यो

सोनीडा ने वेग बुलाय हरजी सू हेत लग्यो
राणी मा सती ने गैणो पैराय हरजी सू हेत लग्यो
सोनीडा ने वेग बुलाय हरजी सू हेत लग्यो
राणी मा सती ने गणो पैराय हरजो सू हेत लग्यो

कू कर छोडया मेडो गोखडा हरजी सू हत लग्यो
राणी कू कर छोडया रग म्हल हरजो स हेत लग्यो
हस हस छोडया मेडी गोखडा हरजी सू हत लग्यो
मुळकत छोडया रगम्हल हरजी सू हेत लग्यो
वाया ! सरग नेडो घर दूर हरजी सू हेत लग्यो
दूध सोळावत दाझिया हरजी सू हेत लग्यो
वायां ! कू कर ढावोली आग हरजो सू हत लग्यो

ज्यू जळ डोयो माछळी हरजी सू हत लग्यो

वाया ! ज्यू ई डोवू ली आग हरजी सू हेत लग्यो

या गावा रे गौरवें लम्बी वधी खजूर, हरजी सू हेत लग्यो

जा चढ सती माता जोविया हरजी सू हेत लग्यो

राजा अजीतसिंहजी रा कुळ बहू हरजी सू हेत लग्यो

राणा भोमसिंहजी रा धीय हरजी सू हेत लग्यो

तार्यो तार्यो पीयर सासरो हरजी सू हत लग्यो

तारगो है माय मोसाळ, हरजी सू हेत लग्यो

कहा वाजे बज रहे हैं ? कहा के झण्डे फहरा रहे है ?

करेडे म बाजे बज रहे हैं और सती मां के झण्डे फहरा रहे हैं।

सती को स्नान कराने उनकी पोशाक बनवाने और जेवर घडाने के लिये धाभाई जी दर्जी और सुनार को बुलाओ।

उनका मन हरि म लग गया है वह सती होगी।

सती माता, आपन अपनी सपदा कैसे छोड दी ? राणी ! कैसे अपना रग महल छोड दिया ?

बहिनो हसते हसते सपदा छोड दी मुस्कुराते हुए रग महल त्याग दिया। मुझे घर तो दूर और स्वग समीप दिखाई दे रहा है। मेरा मन पति मे लग गया है।

गरम दूध देह म लग जाने पर ही जलन होन लगती है। आप अग्नि म कैसे प्रवेश करोगी ?

बहिनों, जैसे मछली पानी में आनन्द से तैरती है उसी प्रकार मैं भी आग मे प्रवेश कर जाऊगी। मेरा मन पति मे लग गया है।

गाव के आसपास लबे-लबे खजूर के पेड खडे हैं। सती के दर्शन करने इतने लोग आये कि उन पडो पर चढकर दर्शन किये।

अजीत सिह की कुल वधु और भीमसिह जी की दुहिता बनें कु वर ने अपने ससुराल, पीहर और ननिहाल के कुल को उज्ज्वल कर दिया।

नोट—केरपुरो-मेवाड में करेडा, चूंडावतों का ठिकाना है। करीब डेढ़ सौ साल पहिले यहां की कुल वधु बनें कु वर चांपावतजी सती हुई थी। यह गीत उनकी स्मृति मे पूजा के समय महिलायें गाती है।

भोमियाजी

बैठो रगडै री जाजम ढाळ
भाया न हलो मारियो
अमल कटोरा गाळिया
लीजो अमळां री मनवार
सूरा चढसी वा'र मे
वरजै थानै भाया रो सारो साथ
महलां मे वरजे राणियाँ
वरजे म्हारो सौ ई परवार
वीरा मत जावो वरजतडा
झिगरिये झिगरिये वाजे ढोल
राठौडो रण मे भू भियो
गैरी नगारा री ठौड
राठौडो रण मे भू भियो
झटकै वटकै उड धडाका सीस
गिरभा गरणौटो माडियो
ताजै म्हारी जरणी रो दूध
भाया ने लागे म्हेंणियो

धोळी धोळा धजा खेजडी, आज्यो धणिया पामणा
भरने भादवै री रात, सूरज साम्ही थारी पूतळो

पूज थाने सेरियो रो लोग

दूहो

कैरी, बोरी, जाळ री, अगर चनण रो रुख
पाट थांन पलासडो तपै भोमिया भूप ।

शत्रु का अचानक आक्रमण हो गया ।

रग की जाजम बिछाओ । साथियो को, भाईयो को बुलाओ ।

आक्रमण का मुकाबला करने की तैयारी करो ।

कटोरे म अफीम घोलो । कसूबे की मनुहारें लो और दो । यह मिलन मनुहार मृत्यु को आलिगन करने को जाने का निश्चय है ।

शूरा आक्रमणकारियो को ललकारने जायेगा । भाई मना कर रहे हैं, महिलायें भी जाने से रोक रही है । पारिवारिक जन भी बरज रहे हैं ।

भू भारू ढोल बज रहा है । राठौड वीर युद्ध मे जूझेगा ।

नक्कारो पर गहरी चोब पड रही है । राठौड वीर रण क्षेत्र मे डटेगा ।

धड लुढक रहे है, मस्तक कट रहे । गीद्ध पक्षी उन पर मडरा रहे हैं ।

यदि युद्ध मे न लडता तो माँ का दूध लज्जित होता । खानदान पर कलक का धब्बा लगता ।

राठौड वीर युद्ध मे वीरता से लडता हुआ शहीद हो गया ।

ऐसे ही शहीदो की पूजा की जाती है ।

नर नारी पूजा करते हैं । उनके स्मारक स्थान पर ध्वजा फहरा रही है ।

पाबूजी

भालेळा ऊंचो चढू नीचो उतरू
चढ निरखूं ए राठौडा री जान
सहेल्या ए पाल पधारिया

वे तो आडा जी वन खड हो रह्या
वठ अटकी ए राठौडा री जान
सहेल्या ए पाल पधारिया

दोय खाती बुलाऊं म्हारे बाप रा
कटवादू ए वन खडिया रा रूंख
सहेल्या ए पाल पधारिया

वे तो आडा जी परवत हो रह्या
वठै अटकी ए राठौडा री जान
सहल्या ए पाल पधारिया

दोय ओड बुलाऊं म्हारे बाप रा
फुडवादू ए परबतिया रा टोळ
वे तो आडी जी नदिया हो रही
वठै अटकी ए राठौडा री जान
सहेल्या ए पाल पधारिया

दोय तैरूडा बुलाऊं म्हारे बाप रा

रूकवादूं ए नदिया री नीर
सहेल्या ए पाल पधारिया

भालेळा कैरे कोसा मे भालो भळकियो
कं कोसा मे ए केसर घोडी री हीस
सहेल्यां ए पाल पधारिया

भालेळा अस्सी ए कोसा मे भालो भळकियो
सौवा कौसा मे केसर घोडी री हीस
सहेल्या ए पाल पधारिया

वीर पाबूजी की बरात आई है। भावी पत्नी फूलमदे की उत्कठा का पार नही। बार बार ऊपर बरात देखने को चढ़ती है, उतरती है और कहती है, सखिया, पाबूजी पधार आये पर मार्ग मे वन बाधक हो रहा है। पाबूजी दिखाई नही देते।

बढइया को बुलाऊ और वन को कटवा दू। पाबूजी पधार रहे हैं।

देखो, पर्वतो ने ओट कर रखी हैं। ओडो को बुलाओ, इन पर्वतो को तोड डाले। पाबूजी के दर्शन तो हो।

नदिया बह रही है। पाबूजी की बरात को रुकना पडेगा।

तैराको को बुलवा नदी का पानी रूकवा दूगी।

देखो, पाबूजी पधार रहे हैं। कितनी दूर से इनका भाला चमक रहा है। कितनी दूर से केसर घोडी का हिनहिनाना सुनाई दे रहा है।

अस्सी कोस दूर से भाले की चमक दिखाई देती है। सौ कोस से केसर घोडी की हीस सुनाई दे रही है।

नोट—जब पाबूजी विवाह मण्डप में भांवर ले रहे थे। उसी समय देवल चारणी ने आकर फरियाद की उसकी गायों को खीची डाका डालकर ले जा रहे है। उसी समय सोढी फूलमदे से अपना गठबधन छुड़वा कर पाबूजी आक्रमणकारियों से लड़ने चले गये। पाबूजी युद्ध में काम आ गये। अर्द्ध-विवाहिता पत्नी फूलमदे सोढी सती हो गई।

रतन राणां

म्हारा रतन राणा, एकर तो ग्रमराणै घोडो फेर

ग्रमराणै मे बोले सूवा-मोर हो जी म्हारा रतन राणा
ग्रमराणै मे बोले सूवा-मोर, बागा बोले छै काळी कोयलडी
रे म्हारा सायर साढा, एकर सू ग्रमराणै घोडा फेर।

ग्रमराणै मे महूडै रो पेड हो जी म्हारा रतन राणा
ग्रमराणै मे महूडै रो पेड, महूडा माही सू मद नीसरे
रे म्हारा सायर सोढा, एकर सू ग्रमराणै घोडो फेर।

ग्रमराणै मे घरट मडाय, हो जी म्हारा रतन राणा
घर घरिये मे घरट मडाय, गेहूडा पिसीजै ग्राटइया राणै राव रो
रे म्हारा सायर सोढा, एकर ता ग्रमराण घोडो फेर।

ग्रमराणै मे घड र सुनार हो जी म्हारा रतन राणा
ग्रमराणै मे घड रे सुनार, पायलडी घडादे रिम-झिम बाजणी
रे म्हारा सायर सोढा एकर तो ग्रमराण घोडो फेर।

भटियल ऊभी छाजइय री छाव, हो जी म्हारा रतन राणा
भटियल ऊभी छाजै ग्राय, ग्रासूडा ढळकाव कायर मोर ज्यू
रे म्हारा सायर सोढा, एकर तो ग्रमराण घोडो फेर।

ग्रमराणै मे घोर ग्रधार, हो जी म्हारा रतन राणा
ग्रमराणै मे घोर ग्रधार, बिलखण नै लागा महल माळिया
रे म्हारा सायर सोढा, एकर तो ग्रमराणै घोडो फेर।

मेर रतन राणा, एक बार तो तुम अपने घोडे को फिर से अमराणे की ओर मोडो। तुम्हारे बिना अमराणा प्रदेश अन्धकारमय हो रहा है। मेरे सोढा राणा यह महल कोट सूने सूने लगते हैं। एक बार तुम लौट आओ।

तुम्हारी पत्नी भटियाणी रानी छज्जे की छाह के नीचे खडी तुम्हारे वियोग मे कायर मयूरनी की भाति आसू टपका रही है। चले आओ सोढा राणा! एक बार लौट कर तो आओ।

तुम्हारे अमरकोट के घर घर मे घरट्ट चल रहे हैं और मोढो की फौज के लिये आटा पीसा जा रहा है।

मेरे सायर सोढा, अमराणे मे महुए के पेड हैं। महुओ के फूलो की भट्टी निकाली जा रही है और मद चू रहा है।

मेरे रतन राणा, एक बार मद पीने आ जाओ।

अमराणे मे सुनार गहने घडते हैं। मेरे लिये भी रिमझिम पायल घडवादो।

अमराणे मे तोते और मोर बोल रहे हैं, बागों मे कोयल बोल उठी है। सुन्दर ऋतु आई है।

प्रियतम! एक बार अपना घोडा अमराणे की तरफ मोडो।

नोट—सन् 1843 में अंगरेजों ने अमरकोट पर अधिकार कर लिया। वहां के लोगों का नेतृत्व रतन राणा ने सभाला। अंग्रेजों के खिलाफ गरिल्ला युद्ध वर्षों तक चला। अन्त में रतन राणा को अरावली की पहाड़ियों में जाना पड़ा। अंग्रेजों ने उनको फांसी पर चढ़ा दिया।

अमरकोट सोढा वंश के राजपूतों का राज्य था। विभाजन में अब सिंध पाकिस्तान मे चला गया।

रतन राणां

म्हारा रतन राणा, एकर तो ग्रमराणँ घोडो फेर

ग्रमराणँ मे बोले सूवा-मोर हो जी म्हारा रतन राणा
ग्रमराणँ मे बोले सूवा-मोर, बागा बोले छै काळी कोयलडी
रे म्हारा सायर सोढा, एकर सू ग्रमराणँ घोडो फेर।

ग्रमराणं मे महूडे रो पेड हो जी म्हारा रतन राणा
ग्रमराँणं मे महूडे रो पेड, महूडा माही सू मद नीसरे
रे म्हारा सायर सोढा, एकर सू ग्रमराणँ घोडो फेर।

ग्रमराणँ मे घरट मडाय, हो जी म्हारा रतन राणा
घर घरिये मे घरट मडाय, गेहूडा पिसीजै ग्राटइया राणँ राव रो
रे म्हारा सायर सोढा, एकर ता ग्रमराण घोडो फेर।

ग्रमराणं मे घड रे सुनार हो जी म्हारा रतन राणा
ग्रमराणं मे घड रे सुनार, पायलडी घडादे रिम-झिम बाजगी
रे म्हारा सायर सोढा एकर तो ग्रमराणं घोडो फेर।

भटियल ऊभो छाजइय री छाव, हो जी म्हारा रतन राणा
भटियल ऊभी छाजै ग्राय, ग्रासूडा ढळकाव कायर मोर ज्यू
रे म्हारा सायर सोढा, एकर तो ग्रमराण घोडो फेर।

ग्रमराणँ मे घोर ग्रधार, हो जी म्हारा रतन राणा
ग्रमराणँ मे घोर ग्रधार, विलखण नँ लागा महल माळिया
रे म्हारा सायर सोढा, एकर तो ग्रमराणं घोडो फेर।

मेर रतन राणा, एक बार तो तुम अपने घोडे को फिर से अमराणे की ओर मोडो। तुम्हारे बिना अमराणा प्रदेश अन्धकारमय हो रहा है। मेरे सोढा राणा यह महल कोट सूने सूने लगते हैं। एक बार तुम लौट आओ।

तुम्हारी पत्नी भटिआणी रानी छज्जे की छाह के नीचे खडी तुम्हारे वियोग मे कायर मयूरनी की भाति आसू टपका रही है। चले आओ सोढा राणा! एक बार लौट कर तो आओ।

तुम्हारे अमरकोट के घर घर म घरट चल रहे हैं और सोढो की फौज के लिये आटा पीसा जा रहा है।

मेरे सायर सोढा, अमराणे मे महुए के पेड हैं। महुआ के फूलो की भट्टी निकाली जा रही है और मद चू रहा है।

मेरे रतन राणा, एक बार मद पीने आ जाओ।

अमराणे म सुनार गहने घडते हैं। मेरे लिये भी रिमझिम पायल घडवादो।

अमराणे मे तोते और मोर बोल रहे हैं, बागो मे कोयल बोल उठी है। सुन्दर ऋतु आई है।

प्रियतम! एक बार अपना घोडा अमराणे की तरफ मोडो।

नोट—सन 1843 में अगरेजों ने अमरकोट पर अधिकार कर लिया। [illegible] नेतृत्व रतन राणा ने समाला। अग्रेजों के खिलाफ गरिल्ला युद्ध [illegible] अन्त में रतन राणा को अरावली की पहाडियों में [illegible] फांसी पर चढ़ा दिया।

अमरकोट सोढा वश के राजपूतों का राज्य था। [illegible] से चला गया।

आयो आयो मेवाड़ा रो साथ

आयो आयो मेवाडा रो साथ
आधो कसूमल ने आधो केसरिया
छापर भळक्या छै सैल
घाटी रो नगारो म्हे सुण्यो जी राज
घोडला री वाजी खुरताळ
हुसत्या रा वाज्या वीर घट टोकरा जी राज
साथीडा तो चाल ऊपर वाट
मेवाडाजो चालै रग रा मारगा
साथीडा रे चांदा रो उजास
आलीजा रे दीवला दोय बळै जी राज
साथीडा ने गोठ दिराय
आलीजा रे सूळा मद सोयता
साथीडा ने डैरो दिराय
साथोडा ने दासिया देवाय
आलीजा रे म्हेला मीठा बोली जी साथ
साथीडा ने सीख दिराय
प्यारा ने राखू दस दिन पावणा जी राज

देखो मेवाडी सरदार ग्रपने दल के साथ ग्रा रहे हैं। केशरिया ग्रौर कसूमल रंग की पगडी बांधे वे नजर ग्रा रह हैं।

वह देखो, मैदान मे चमक दिखाई देती है। ये साथ वालों के भाले हैं।

ग्रब पहाडी के उपर चढ रहे है, नक्कारे की ग्रावाज सुनाई दे रही है।

घोडो की खुरताले वज रही है। हाथियो के गले मे वीरघट टोकरे वज रहे हैं।

साथ वाले उवड खाबड रास्ते से चले ग्रा ग्रा रहे है। मेवाडी दल नायक सीधे मार्ग से पधार रहे हैं।

साथी चाद के उजाले मे ही चले ग्रा रहे है। ग्रौर उनके ग्रागे दो मशाले जल रही हे।

सभी ग्रा पहुचे। साथियो को गोठ दो। ग्रालीजाह की सूळा ग्रौर कवाब मे खातिर करो।

साथियो के ठहरने का इन्तजाम करा दिया है। मेवाडी सरदार के सोने के लिये छोटे पायो का पलग बिछाया है।

साथियो की सेवा के लिये दासिया तैनात है। ग्रालीजाह की सेवा के लिये, मधुर भाषिणी गौरी हाजिर हो गई।

साथियो को तो विदा करदो ग्रपने घरो को। ग्रपने प्रिय को यहा दस दिन पाहुने रखू गी।

म्होरतियो

हलचल हुई हलकार
मेवाडा रा साथ मे रे लाल
भरलो मातीडा सू थाळ
सुन्दर गोरी म्होरतियो पूछाव
बामण रा बेटा थू ई म्हारो वीर
वीर म्हारा म्होरतियो दीजे चूकाय
एक म्होरतियो गया चूक मेवाडा म्हारा
दूजो म्होरतियो बारा बरसा आवसी
उर दोनी लाल कबाण सुन्दर गोरी
जोसीडा रो तो सोस म्हे तोडा रे लाल
हस हस दोनी म्हा ने सीख सुन्दर गोरी
साथीडा सू छेटी म्हा पडा रे लाल
सीखडलो तो दीवो नी जाय सैणाँ रा लोभी
छाती ने फाटे हिवडो म्हारो ऊवकै रै
काजळिया सू रुघ्या म्हारा नैण
विदळी तो लागी लाल गुलाल की रे लाल

हलचल हलकार मच रही है ।

चाकरी पर प्रिय को प्रस्थान करना है ।

मेवाडा को अपने दल के साथ विदा होना है ।

मोतियो से थाल भर कर गौरी जोशी से मुहूर्त दिखाने चली ।

ब्राह्मण के बेटे ! तुम मेरे भाई हो । मुहूर्त टाल दे ।

ब्राह्मण का बेटा बोला, एक मुहूर्त था वह तो निकल गया । अब दूसरा शुभ दिन बारह साल के बाद आयेगा, मेवाडा राजा ।

गौरी लाओ, मेरी लाल कमान मुझे दो । इस जोशी का सिर अभी उडाता हू ।

प्रिये, मुझे विदा दो । हस हस कर विदा दो । मेरे साथ वाले दूर निकल जायेंगे ।

विदा तो मुझ से दी नही जाती । छाती फट रही है हिया उबक रहा है ।

काजल से मेरे नेत्र भर गये दिखाई नहीं देता ।

लाल गुलाल की बिंदली फैल गई ।

हलचल हलकार हो रही है । प्रस्थान हो रहा है ।

---

* (प्रस्थान करते समय, विदा देती हुई महिलायें उपरोक्त गीत गाती है ।)

राणाजी की चाकरी अच्छी है और उदयपुर शहर भी अच्छा है। मेरे सरदार, मुझे अपने साथ ले चलो।

राणाजी के रसोवडे की खिचडी अच्छी है, पिछोला सागर भी अच्छा है। मुझे साथ ले चलो।

यह कहते कहते गाधण की आखें डबडबा गई।

सरदार ने अपने फेंटे से आसू पोछे और हृदय से लगा लिया।

प्यारी गाधण, साथ ले चलना सभव नही। अपने घर चली जाओ।

•

सोकड़ घूमर लेवे ए

ईंट पडावे घर थारे ए जीजीवाई
ईंट पडावे घर थारे
ये तो म्हेल चुणावे घर म्हारे ए
सोकड घूमर लेवे ए
म्हेल चुणावे घर थारे ए जीजीवाई
म्हल चुणावे घर थारे
ये तो गोख झुकावे घर म्हारे ए
सोकड घूमर लेवे ए
दातण करे घर थारे ए जीजीवाई
दातण करे घर थारे
ये तो दातण फाडे घर म्हारे ए
सोकड घूमर लेवे ए
जीमण जीमे घर थारे ए जीजीवाई
जीमण जीमे घर थारे
ये तो धुरळा राळे घर म्हारे ए
सोकड घूमर लेवे ए
यूं मत जाणें राजन म्हारा ए जीजीवाई
यूं मत जाणो राजन म्हारा
माई दस दिन दिया थांने उधारा ए
सोकड घूमर लेवे ए

सौतों का विवाद है।

छोटी कहती है, जीजीबाई, क्या गुमान करती हो।

पतिदेव तुम्हारे घर के लिये ईंटें बनवाते हैं तो महल मेरे लिये भी चुना जाता है।

महल तेरे लिये बनता है तो झरोखे मेरी तरफ झुकाये जाते हैं।

दातुन तेरे यहा करते हैं तो दातुन मेरे यहा आकर फाड़ते हैं।

भोजन तुम्हारे यहा करते हैं तो कुल्ले मेरे घर पर।

जीजीबाई, यह मत समझ लेना कि पति मेरा हो गया है।

मैंने तो दस दिनो के लिये तुम्हें उधार दिया है।

नोट—बड़ी सौत को छोटी जीजी बाई कहती है। छोटी सौत 'लोडी' कहलाती है।

तीज

आवँ जी बैठो कोयलडी, दोय सवद सुणावँ जी
जाय ढोलै जी नैं यूं कहीजै, पैली तीज पधार
खरचो खिदाऊ म्हारा बाप की पैली तीज पधार
खरची घणी है म्हारी मारुणी, नी है राणा जी री सीख
घुडलो खिदाऊ म्हारा बाप को, पैंली तीज पधार
घुडला घणा है म्हारी मारुणी, नी दे राणा जो सीख
आडो तो गौरी नदिया फिर रयी, बैरण हुई रे बनास
कीर रा वेटा म्हारा वीरा, म्हारे ढोले जी ने पार उतार
काई तो देस्यो रीझ रो, काई तो देस्यो ईनाम
चढिया री कटारी देस्या रीझ रो, सेज चढिया रो सिरोपाव।

आम के पेड़ पर बैठी कोयल मीठी मीठी बोल रही है।
तू जाकर ढोला से कह तीज पर पधार आने को।
मैं अपने बाप से खर्चा भिजवा दूंगी। तीज पर आने को।

प्रिय ! खर्चा देने को मेरे पिता के पास बहुत है, परन्तु राणाजी मुझे इजाजत नही दे रहे हैं।

अपने बाप के घोडे भिजवादू । तीज पर पधारो ।

प्रिये ! घोडो की कोई कमी नही । राणाजी सीख नही बख्शते ।

मार्ग म ग्राडी नदिया वह रही है । यह बनास नदी तो सौतिन की भाति मार्ग रोके बह रही है ।

कीर के बेटे, मेरे भाई हो तुम । मेरे ढोले को बनास नदी के पार उतार ला ।

पार उतार लाने की आप क्या तो रीझ देंगी और इनाम देंगी ।

कमर की कटारी पार करने पर रीझ मे मिलेगी । सेज मे आने का सिरोपाव दूगी ।

तीज

तीज रमण रो लागो अजी चाव,
ओ जी लीजो मचोलो सावण तीज रो
आलीजा चपले हिंडोळो घालियो
हींडै म्हारी सहेल्या रो साथ

मारूजी लीजो मचोलो सावण तीज रो
अजी हिंडोळे हीडै सा हीडै
म्हारे आलीजा रो साथ

ओ आलीजा म्हे न पन्ना मारू हीडस्या
लाल चूडा गळ बांह. लीजो मचोलो सांवण तीज रो
आलीजा जी बादीला, बागां बागा गोठा जीमस्या
जीमै जीमै सहेल्या रो साथ

लीजो मचोळो सावण तीज रो ।

अणहद हद घाट्या पै घोडा हीस्या
चावल चमक्या छै सेल
लीजो मचोलो सांवण तीज रो
म्हांने तीज रमण रो कोड

तीज खेलने की चाह जगी है। सावन की तीज पर आओ, झूला झूलें।

चंपे के पेड की डाल मे झूला बाधा। मेरी सहेलियाँ झूला झूल रही है।

प्रिय, झूले की पेंग भरो।

मेरे मारूजी के साथी भी झूला झूल रहे हैं।

मैं और मेरे पन्ना मारू भी झूलेंगे।

लाल लाल चूडिया पहने बाहो को गले मे डालूगी। बागो मे गोठें करेंगे।

मेरी सहेलियो का समूह गोठे जीमेगी।

सावन की तीज पर झूले का मचोला लें।

सावन की तीज मनाने 'वे आगये हैं। दूर की घाटियो मे घोडा के हिन हिनाने की आवाजें आ रही है।

चंबल नदी के पास भालो की नोकें चमक उठी हैं।

मुझे तीज खेलने का बडा चाव लग रहा है।

आओ सावन का झूला झूलें।

गरागौर

कणगच काटो मे सुण्यो ।
काई दिल मे आटो काई ओ राज
रग रो भालो जोर वण्यो ।

खरी दुपैरी नीसरया
काई ऊभा बडला हेट ओ राज
थारी तो दाभै पगथळी
काई म्हारा दाभे नैण ओ राज

म्हारे तो लीली काचळी
काई थारे कसूमल पाग ओ राज
ऊंची तो करग्या आगळी
काई धुळग्या चारू नैण ओ राज

गया न राजन वावड्या
काई खागो रहियो किवाड ओ राज
धघमरा तेल दिवलै वळियो
काई वासी रहियो बराव ओ राज

यै म्हारे आजो पावणा
काई सै गणगोर्‌या री रात ओ राज
घोडलो तो हीस्यो वाररो
काई घरै आयो परदेसीडो राज

लीली तो सीसी मद भरी
कांई नकासी रो प्यालो हाथ ओ राज
आप पीवें धरण पावसी
कांई दे दै गळा री आरण ओ राज

सेर मिठाई दो जणा
काई लागी लूटा लूट ओ राज
प्रेम पछेवडो दो जणां
काई लागी खेंचा तांरण ओ राज ।

भरी दुपहरी मे परदेस को चले ।

वड के पेड के नीचे खडे हो विदा ली ।

तुम्हारे,तो केवल पाव ही जल रहे हैं। पर मेरे तो तुम्हे जाते देख नैन जल रहे हैं ।

मेरे नीले रग की कचुकी थी उनके कसूमल रग की पगडी थी ।

जाते समय अगुली ऊची कर विदा मागी उस समय चारों नयन मिले ।

गये हुए राजन वापिस लौटे नही, प्रतीक्षा मे सारी रात किंवाड अधखुला रखा । आध मन तेल दीपक मे जल गया और मेरा बनवा बासी रहग्या ।

घोडा हीसा, परदेशी ठीक गरणगौर की रात को मेरे पाहुना आ गया ।

नीले रग की शीशी मे मद भरा है, नक्कासीदार प्याला हाथ में है । आप पी रहे हैं । पत्नी को गले की सौगन्ध दिला पीला रही है ।

सेर भर मिठाई है दोनो लूट लूट कर खा रहे है ।

प्रेम पछेवडा है, दो व्यक्तियो मे खीचा तान हो रही है ।

---

* गणगौर का त्योंहार राजस्थान में बसन्तोत्सव पर्व के रूप में मनाया जाता है । प्रभात काल में शिव पार्वती का पूजा की जाती है । रात्रि को विनोदपूर्ण उल्लास और आल्हाद बढाने वाले गीत गाये जाते है । यह गीत इसी त्योंहार पर गाया जाता है ।

लीली तो सीसी मद भरी
कांई नकासी रो प्यालो हाथ म्रो राज
म्राप पीवै घरा पावसी
कांई दै दै गळा री म्राए म्रो राज

सेर मिठाई दो जरा
कांई लागी लूटा लूट म्रो राज
प्रेम पछेवड़ो दो जरां
कांई लागी खेंचा तांरा म्रो राज ।

भरी दुपहरी मे परदेम को चले ।

वड के पेड के नीचे खडे हो विदा ली ।

तुम्हारे,तो केवल पाव ही जल रहे हैं । पर मेरे तो तुम्हे जाते दे
रहे हैं ।

मेरे नीले रग की कचुकी थी उनके कसूमल रंग की पगडी थी ।

जाते समय म्रगुली ऊची कर विदा मागी उस समय चारों नयन

गये हुए राजन वापिस लौटे नहीं, प्रतीक्षा मे सारी रात कि
रखा । म्राध मन तेल दीपक में जल गया म्रौर मेरा बनवा व

घोडा हीसा, परदेशी ठीक गरागौर की रात को मेरे पाहुना

नीले रग की शीशी मे मद भरा है, नक्कासीदार प्याला ह
पी रहे हैं । पत्नी को गले की सौगन्ध दिला पीला रही है

सेर भर मिठाई है दोनो लूट लूट कर खा रहे है ।

प्रेम पछेवडा है, दो व्यक्तियो मे खीचा तान हो रही है

---

* गणगौर का त्योंहार राजस्थान में बसन्तोत्सव पर्व के रूप मे
में शिव पार्वती का पूजा की जाती है । रात्रि को वि
बढाने वाले गीत गाये जाते है । यह गीत इसी त्योंहार

मेरे सिर के आभूषण लाना, गुमान भरे रसिक।

आलीजाह, मैं तुम्हारी सोहबत मे अपना गजरा भूल आई।

मेरी साडी को तुमने मसका कर फाड डाला।

गुमानीडा, मैं तुम्हारी सेज म अपना गजरा भूल आई।

विलाला, मैं तुम्हारी मोहब्बत मे गजरा भूल आई।

मैं तो भूल आई, गुमानीडा तुम्हारे महल मे अपना गजरा।

झरोखे मे बैठे रसिक, मेरा मुजरा स्वीकार करो।

मैं मोहब्बत मे गजरा भूल आई।

मेरे नथ के ऊपर के रत्न जडित झूमके तो तुमने तोड डाला।

गुमानीडा, मैं तो तुम्हारी खिलवत (एकान्त) मे गजरा भूल आई।

जलाला! मिजाजीडा! ख्यालीडा! गुमानीडा! तेरी सोहबत मे मैं गजरा भूल आई।

वीलाला जी बिराज्या चौणी गोखडे रे लोल
सगळा उमरावा री जोड

नादानडी रसिया री सेज फूला भरी रे लोल
आलीजाजी बिराज्या सूरज गोखडे रे लोल
हसती घूमे गजराज

नादानडी रसिया री सेज फूला भरो रे लोल
आलीजा विराज्या सेज मे रे लोल
छोटा लाडीसा उभा हुजूर

नादानडी रसिया री सेज फूला भरो रे लोल
वारी हो मेवाडा आपरा रूप पे रे लोल
अमर करे एकलिंग

नादानडी रसिया री सेज फूला भरी रे लोल

मैं तुम्हें पाच रुपये रोकड दूगी। मुझे श्रीजी के महल वता दो।

रसिया की सेज फूलो से भरी है।

सासूजी, तुम्हारी काख धन्य है। जिसने हीरा, मोती और लाल जैसे पुत्रो को जन्म दिया।

सफेद रग के वढिया नस्ल के घोडे पर मोती जडा जीन कसा है।

केशरिया रग का वागा पहने हुए है सिर पर गज मोहर की बेशकीमती पगडी बाध रखी है।

रसिया की सेज फूलो से भरी है।

कमर मे बाकी कटार बाध रखी है और सीरोही की बनी असली तलवार लटक रही है।

रामपुरा का बना भाला हाथ मे है। पीठ पर गैंडे के खाल की ढाल पडी है।

रसिया की सेज फूलो से भरी है।

चीन से आये टाइल्स के बने गोखडे मे विलाला बिराजमान है। समक्ष सरदारो उमरावो की जोड बैठी है।

सूरज गोखडे मे आलीजा बैठे है, सामने गजराज हाथी घूम रहे हैं।

रसिक की सेज फूलो से भरी।

आलीजा सुख सेज मे बैठे हैं। उनकी प्रिय पत्नी सेवा मे उपस्थित है।

मेवाडा, आपके इस स्वरूप और शोभा पर न्योछावर हू।

श्री एकलिग आपको अमर करे।

रसिक की सेज फूलो से भरी है।

हिचकी

गैला मे चीतारे राजन मारगिये चीतारे
चालतडा हिचकी घडी ए घडी आवे ए
म्हारा साईनां रो जीव दुख पावे ए
हिचकी घडी ए घडी मत आवे ए
बागा मे चीतारे राजन बावडिया चीतारे
हिचकी फुलडा बिणता दूणी आवे ए
हिचकी घडी ए घडी मत आवे ए
म्हारो सैलाणी भवर दुख पावे ए
हिचकी घडी ए घडी मत आवे ए
खेलता चीतारे राजन पासा मे चीतारे ए
हिचकी चौपड खेलता दूणी आवे ए
हिचकी घडी ए घडी मत आवे ए
म्हारा छैल भवर रो जीव दुख पावे ए
म्हैला मे चीतारे साजन गोखा मे चीतारे
हिचकी म्हैला दूणी आवे ए
हिचकी घडी ए घडी मत आवे ए
म्हारा सैलाणी भवर रो जीव दुख पावे ए
ढोल्या मे चीतारे राजन सेजा मैं चीतारे ए
हिचकी पौढतणा दूणी आवे ए
म्हारा आलोजा रो जीव दुख पावे ए
हिचकी घडी ए घडी मत आवे ए

आते जाते मार्ग चलते हर समय याद करती रहती है ।

मार्ग चलते हिचकी तू बार-बार मत आ, मेरे प्रियतम के जी को दुःख होता है ।

बाग और बावडियो मे मनोरजन को जाते ही याद आने लगती है ।

फूल चुनते समय तो हिचकी और ज्यादा आने लगती है ।

अरी हिचकी, बार बार आकर सैलानी भवर को दुःख मत दो ।

पासे डालते समय याद आने लगती है ।

महलो मे जाते ही याद ताजा हो जाती है ।

शय्या देख कर भी स्मरण हो आता है ।

सोते समय तो हिचकी दुगुनी आने लगती है ।

निरन्तर याद करते रहने से हिचकी चलती रहती है ।

हिचकी, तू पल पल मत आ । तेरे बार बार आते रहने से प्रवासी पति को कष्ट होता है ।

मारूजी

ए तो मारूजी मतवाळा सु दर रा सायवा मारू जी

ये तो देसूरी रे ग्राडे घाटे थ मिळिया मारूजी
थे थारी ठडी ने भारी रो पाणी पावो रे मारूजी
म्हारी ठडी भारो रो पाणी लागणो गोरादे
लागै छै तो लागण दो थोडो पावो रे मारूजी

ए तो मारूजी मतवाळा सु दर रा सायवा मारूजी

थ तो पिणघटिये पिणघटिये चाल मती चालो मारूजी
था ने कोईक चूडळाहाळी नजर लगासी मारूजी
था रे डावा पग रे काळो डोरो बाधो रे मारूजी
ए तो लाल लपेटे छैले मोह्यो रे मारूजी

ए तो मारूजी मतवाळा सु दर रा सायवा मारूजी

था रे सोरठ री तरवार भाला सार रा मारूजी
ए तो वाकडळी तरवार भाला लोहे रा मारूजी
था ने सीरोही रा राव केवू घरे ग्रावो रे मारूजी
था ने जोधाणा रा राव केवू घरे ग्रावो रे मारूजी

ए तो मारूजी मतवाळा सु दर रा सायवा मारूजी

था ने सोजत रा सिरदार केवू घरे ग्रावो रे मारूजी
था ने पाली रा परधान केवू घरे ग्रावो रे मारूजी

थाँने नागौर रा छैल केवूं घरे आवो रे मारूजी
था ने सासूजी रा कवर केवूं घरे आवो रे मारूजी

ए तो मारूजी मतवाळा सुन्दर रा सायबा मारूजी
हूँ तो केवतडी लाज मरू घरे आवो मारूजी

यह तो मतवाला मारू है, सुन्दरी का प्रेमी।

अरावली पर्वत माला के देसूरी के दर्रे मे मिले।

मारू, अपनी भारी का ठडा पानी मुझे पिलाओ।
गौरी, मेरी झारी का पानी तो मन मोहने वाला है।

मारूजी, मन मोहने वाला है तो होने दो। थोडा पिला दो।

यह तो मतवाला मारू है सुन्दरी का सायबा।

मारुजी, तुम पनघटो पर कभी मत जाना। कोई सुन्दरी तुम्हारे नजर लगा देगी। अपने बायें पाव पर काला डोरा बाधलो ताकि नजर न लगे। लाल पगडी वाले छैले ने मेरा मन मोह लिया।

सौराष्ट्र की बनी तलवार और बीजळमार का भाला तुम्हें शोभा दे रहा है। बाकी तलवार बांधे ऐसे सुन्दर लग रहे हो कि तुम्हें क्या कह कर पुकारू।

तुम्हें सिरोही का राव कह कर पुकारू या जोधपुर के राजा कह कर?
तुम्हे सोजत के सरदार कह कर बुलाऊ या पाली का प्रधान बोलू?

तुम्ह नागौर का छैला कह कर सबोधन करू?
तुम्ह सासुजी के कुवर कह कर बुलाऊ?

मारु मतवाले, घर आओ।

मुझे कहते लाज लग रही है। घर आओ। सुन्दरी के सायबा! मतवाले मारु!

नादान बिछियो

रगड रगड पग धोवती पिछोला थारी पाळ
मारूडा जी गम गयो नादान बिछियो

ऊंचा रागाजी रा गोखडा ग्रो रसिया
नीची तो या पिछोला री पाळ
मारूडा जी गम गयो नादान बिछियो

सात सहेल्या रे झूलरे ग्रो रसिया
पाण्यु ने गई तळाव
मारूजी गम गयो नादान बिछियो

घडो न डूबे ताल मे ग्रो रसिया
ई डोणी तिर तिर जाय
मारूडा जी गम गयो नादान बिछियो

पग देवू तो पीडी थरहरे ग्रो रसिया
छिटक पडे जी गोरो गात
मारूडा जी गम गयो नादान बिछियो

जळ केरा तो माछळ ग्रौजकिया ग्रो रसिया
झाझर केरी झणकार
मारूडा जा गम गयो नादान बिछियो

रगड रगड पग धोवती पिछोला थारी पाळ
मारूडाजी गम गयो नादान बिछियो

पिछोले की पाल पर रगड रगड अपने पैर धो रही थी। बिछिया पानी मे गिर गया, खो गया।

ऊपर राणाजी के भव्य गोखडे हैं। नीचे पिछोला लहरा रहा है। मेरा सुन्दर बिछिया खो गया।

सात सहेलियो का झूमका पिछोला पर पानी भरने गया। ओह मेरा बिछिया पानी मे गिर गया।

तालाब मे घडा नही डूब रहा है। इँडोणी तिर तिर जा रही है।

गहरे पानी मे पांव रखते मेरी पिंडुली थरहराती है। मेरा गोरा गात गिर पडेगा।

रगड रगड कर पाव धो रही थी पिछोला के घाट पर मेरा बिछिया खो गया।

नुपूरो की झकार से पानी के मगर मछलिया चौंक पडी।

पिछोला तेरे घाट पर रगड रगड पांव धो रही थी मेरा बिछिया खो गया।

कलाली

सज्जन कलाळण मोवनी, म्हारा म्हैल तळे मत ग्राव
थारा विछिया बाजणा म्हारा ग्रालीजा रो ग्रौर सुभाव

प्याला भर भर पाविया, ग्राघी कर कर वाह
सोक कलाळी स्याम नै, मोहियो दारु माय ।।

सज्जन कलाळणी मोवनी म्हारा गोखां तळे मत ग्राव
थारा नैण ज लागणा, म्हारा ग्रालीजा रो ग्रौर सुभाव

दीधो मद थै किस दाव सू , वाका सीधो भाळ
लीधो धण रो लाडलो, कीधो गजब कलाळ ।।

दारू रो प्यालो भलो, दुपट्टा रो झालोह
कामण तो पतळा भला, मारू मतवाळोह ।।

छलवलिया घोडा भला, ग्रलवलिग्रा ग्रसवार
मद छकिया मारू भला, मरवण नखरेदार ।।

सज्जन कलाळण मोवनी म्हारा म्हेल तळे मत ग्राव
थारा विछिया वाजणा म्हारा ग्रालीजा रो ग्रौर सुभाव
थारा नैण ज लागणा म्हारा ग्रालीजा रो जलल मभाव

सज्जन कलालिन, मिहरबानी करके तू मेरे महलों के नीचे मत गुजर। तेरे बिछिया की ध्वनि मोहक है। इधर मेरे आलीजा और ही मिजाज के हैं।

बाह पसार कर प्याले भर भर पिलाकर इस सौत कलालिन ने मेरे पति को मोह लिया।

कलालिन ! मेरे झरोखे के नीचे मत आ। तेरी आंखो मे मोहिनी है। मेरे उनका सुभाव अलग है।

सीधी, तिरछी नजर करके क्या जाने तूने किस अदा से मदिरा पिलाकर मेरे लाडले को छीन लिया। तूने गजब किया कलालिन।

प्याला तो मदिरा से भरा अच्छा लगता है, साड़ी के अचल से किया संकेत अच्छा लगता है। मतवाला प्रेमी और पतली कामिनी सुन्दर लगती है।

छबीले घोड़े और उन पर अलबेले सवार अच्छे लगते है। मद छका प्रेमी और नखराली प्रेमिका भली लगती है।

पातुड़ी कलाल

चढिया कंवरसा सूरा री सिकार सिकार ग्रो कवरसा
कोई कीरत्या झुक ग्राई गढ रे कागरे ग्रो राज ।
चढिया कवरसा ढळती माझल रात रात ग्रो कवरसा,
काई दिन नै उगता ग्रो सूवर मारियो ग्रो राज
काई ढळती नै मारियो काळो मिरगलो ग्रो राज
बैठ्या कवरसा दलीचो ए दलीचो विछाय ग्रो कवरसा,
काई पातुडी कलाळी ग्रो पाणी नीसरी ग्रो राज ।
थू छै कलाळी घणी रा सरूप सरुप ग्रो कलाळी
काई थारा नैणा रो पाणी लागणो ग्रो राज ।
कै नी कलाळी थारा घडुल्या रो मोल मोल ग्रो कलाळी,
काई दमडा चुकावे ग्रो बेटा रावळा ग्रो राज
मोल तो कवरसा कह्यो नी जाय जाय ग्रो कवरसा,
काई म्हारो धुडल्यो नै ग्रो राज रो घोडलो ग्रो राज ।
थोडो सो कलाळी पाणी तो पिलाव पिलाव ग्रो कलाळी
काई कदरा तिरसाया ग्रो बेटा रावळा ग्रो राज ।
पाणी तो कवरसा पिलायो नी जाय जाय ग्रो कवरसा,
काई घरां नै पधारो फूल दारू पावस्या ग्रो राज ।
कैवे नी ग्रे कलाळी घर रो सैनाण सैनाण ग्रो कलाळी
काई घरा पधारे ग्रो बेटा रावळा ग्रो राज ।
सूरज साम्ही पातुडी री पोळ पोळ ग्रो कवरसा,

काई कँळ तो भवूकं ग्रो कलाळी रे वारणे ग्रो राज ।
चढिया कवरसा ढळती माभल रात रात ग्रो कवरसा,
काई खू दायो घुडलो ग्रो कलाळी रे वारणे ग्रो राज ।
खोले नी कलाळी ए घर रो किवाड किवाड ग्रो कलाळी,
काई कदरा ऊभा ग्रो वेग रावळा ग्रो राज ।
ग्रा काई कवरसा ग्राया री वार बार ग्रो कवरसा,
काई रैण ग्रधारी ग्राभा भुक रह्या ग्रो राज ।
ग्राप रा कवरसा घुडला पाछा मोड मोड ग्रो कवरसा,
काई पातुडी री दुखे बाई ग्राखडो ग्रो राज ।
धीरे ग्रो कवरसा घोडला धीरे खू दाय खू दाय ग्रो कवरसा,
काई खुरिया सू फूटे कलाळी रो ग्रागणो ग्रो राज ।
ग्रा काई कलाळी केवा री बात बात ग्रा कलाळी,
काई काच तो बिडाय दू पातुडी रे ग्रागणे ग्रो राज,
काई भीता ढोळाऊ ग्रो भाभा हीगलू ग्रो राज ।
धीमा ग्रो कवरसा धीमा धीमा बोल बोल ग्रो कवरसा
काई पोळ्या मे सूता ग्रो सुसरो जी साभळे ग्रो राज ।
देस्या ए पातुडी सुमराजा गाम गाम ग्रो कलाळी
काई ए दिल्ली न ग्रो दूजो ग्रागरो ग्रो राज ।
धीमा ग्रो कवरसा धीमा धीमा बोल बोल ग्रो कवरसा,
काई भाटी पै सूता ग्रो सायब साभळ ग्रो राज ।
देस्या ए पातुडी सायब नं परणाय परणाय ग्रो कलाळी
काई एक गौरी ने ग्रो दूजी सावळी ग्रो राज ।
खोल कलाळी घण ग्रजड किवाड किवाड ग्रो कलाळी
काई कदरा ऊभा लाखीणा थारे वारणा ग्रो राज ।
कैवे नी पातुडी थारा दुवारा री मोल मोल ग्रो कलाळी
काई दमडा चुकावे ग्रो बेटा रावळा ग्रो राज ।

काई प्याले रा लँस्या पूरा डोढ सौ राज ।
थें छो पातुडी अधक सरूप सरूप ओ कलाळी
काई घाल मुट्ठी मे पातुडी ने ले चला ओ राज ।
मुट्ठी मे कवरसा राखो नी रूमाल रूमाल ओ कवरसा,
काई नार परायी लारे ना चलै ओ राज ।
थें छो पातुडी अधक सरुप ओ कलाळी,
काई घाल पेचा मे थाने ले चला ओ राज ।
पेचा मे कवरसा ए कलगी टाक टाक ओ कंवरसा,
काई नार पराई ओ लारै ना चलै ओ राज ।
थू छै कलाळी वडी ए सरूप सरूप ओ कलाळी,
काई घाल नैणा मे ओ पातुडी नै ले चला ओ राज ।
नैणा मे कवरसा सुरमो ओ सार सार ओ कंवरसा,
काई नार पराई ओ झगडो मागसी ओ राज ।
दीसे ए कलाळी इधकं से रूप रूप ओ कलाळी
काई घाल मुखडा मे ओ पातुडो ने ले चला ओ राज ।
मुखडा मे कवरसा था विडला चाव चाव ओ कवरसा,
काई नार पराई जीवडो क्यू डूले ओ राज ।
थे छो कलाळी अधके से रूप रूप ओ कलाळी,
काई घाल हिवडै मे पातुडी नै ले चला ओ राज ।
हिवडा मे राखो कवरसा घर री नार नार ओ कवरसा
काई नार पराई ओ झगडो मागसी ओ राज ।

रात ढल रही थी । कीरना नक्षत्र गढ के कगूरा की सीध मे नीचे आ गया था । कुवरजी शिकार चढे । सूरज निकलते सूअर का शिकार किया । वन्य पशुओ का भी शिकार किया ।

गलीचा बिछा कुवरजी बिश्राम करने लगे । पातुडी कलाली पानी भरने निकली ।

कु वरजी बोले, कलाली, तू बडी सु दर है । तेरी आखों मे मोहिनी है । तेरे घडे का मोल बता, मैं मूल्य चुकाऊगा ।

कलाली बोली, कीमत तो इसकी बहुत ज्यादा है । मेरा घडा और तुम्हारा घोडा बराबर है ।

कलाली, पानी तो पिलाओ । कभी का प्यासा हू ।

कु वरजी, पानी तो मैं पिलाती नही । आप घर आइये । बढिया दुबारा पिलाऊगी ।

कलाली, अपन घर का निशान तो बता । हम घर आयेंगे ।

कु वरजी, मेरा नाम पातुडी कलाल है । सूर्य के सामने मेरे घर का दरवाजा है । द्वार के बाहर केले के पेड हैं ।

आधी रात को कु वरजी घोडे पर सवार हो पातुडी का दरवाजा खटखटाया ।

पातुडी, दरवाजा खोल । कभी से खडा हू ।

कु वरजी, यह कोई आने का वक्त है । अधेरी रात है ऊपर से बादल छा रहे हैं ।

कु वरजी, अपना घोडा वापिस मोड लो । पातुडी की बाई आख दुख रही है ।

कु वरजी, अपने घोडे को जोर से मत कूदाओ । उसके खुरो से मेरा आगन टूट जायेगा ।

कलाली, यह भी कोई कहने की बात है । तेरे आगन को काच से जडा दूगा । दिवालो को हीगलू से लीपा दूगा ।

कु वरजी, धीरे बोलो, पौल म मेरे ससुरजी सो रहे हैं ।

कलाली, इसकी चिता छोड । तेरे ससुरजी को जागीर मे गाव दे दूगा, दिल्ली और आगरे जैसा ।

कु वरजी, धीरे बोलो, मदिरा चुआने की भट्टी पर मेरे पति सो रहे हैं ।

कलाली, इसकी भी फिक्र मत कर । तेरे पति की दो दो शादिया करा दू गा । एक गोरी और दूसरी सावली पत्नी ला दू गा ।

कलाली, अपने वज्र कपाट खोल। देखती नहीं कितना प्रभावशाली व्यक्ति तेरे घर के बाहर खडा है। अपने बढिया दुबारा का मोल बता। अभी दाम चुकाता हू।

कुवरजी, कीमत क्या बताऊ। बहुत कीमती दुवारा है। एक एक प्याले का मोल डेढ सौ रूपये है। बोतल के पूरे पाच सौ पचास होते हैं।

कलाली, तुम बहुत ही सुन्दर हो। तुम्हे मुट्ठी मे बन्द कर ले चलूगा।

कुंवरजी, मुट्ठी मे तो अपना रूमाल ही रखो पराई स्त्री को साथ नही ले जा सकते।

कलाली, तेरे रूप का मुकाबला नही। मैं तुम्हे पाग के पेचो मे दबा कर ले जाऊगा।

कुंवरजी, पाग मे तो छोगे कलगी टाको। पति की पत्नि आपके साथ जाने वाली नही।

पातु, मैं तुम्हे आँखो मे डाल कर ले कर चला जाऊगा।

कुंवरजी, आँखो मे तो सुरमा डालो। पराई स्त्री ले जाने पर युद्ध होगा।

कलाली, बहुत ही मोहक लग रही हो। मुख मे रख कर तुम्हे ले चलूगा।

कुंवरजी, मुख म पान रख कर चाबो। परस्त्री पर जी क्यो चलाते हो।

पातुडी, मैं तुम्हे हृदय मे रखूगा।

कुंवरजी, हृदय मे आप अपनी पत्नी को रखें। पर स्त्री पर झाकने की कीमत म मस्तक देना पडता है।

झूमादे कलाल

टूंक विचै टोडा विचै रसिया म्हारा
अध विच वसै छै कलाळ

झूंमादे कलाळ री ए मदछकिया जी ने मोया ए
कांये री भाटी तपै ए झूमा
कांये री चकै सुरनाळ

झूमादे कलाळ री ए राठौड़ी राजा ने मोया ए
सोने री भाटी तपै ए रसिया
रूपारी चकै सुरनाळ

झूमादे कलाळ री ए घरा हेतु जी ने मोया ए
किता मण महूड़ा गाळिया ए झूमा
किता मण बूरा खांड

झूमादे कलाळ री ए दुवारो दे मोया ए
दस मरा महूड़ा गाळिया ए रसिया
नवमरा गाळी बूरा खांड

झूमादे कलाळ री ए विलाला ने मोया ए
भाटी तो भमरा भमै ए रसिया
उमंगी फिरै छै कलाळ

झूमादे कलाळ री ए गुमानीडा ने मोया ए
भाटी तपँ दुवारा नीसरे रसिया
तपँ रे कलाळी धण रो रूप

झूमादे कलाळी ए मद छकिया ने मोया ए
उठ न कलाळी भर घडो ए झूमा
दुबारा रो मोल सुणाव

झूमादे कलाळी ए राठौडी राजा नें मोया ए
मोल तो कह्यो नी जाय ए रसिया
घडा रा तो लैस्या पूरा पाच सौ

झूमादे कलाळ री ए मनमेळु ने मोया ए
म्हारा राठौडा रो घुडलो ऐ झूमा
देश्यो कलाळण थारे वार

झूमादे कलाळ री दुवारो दे मोया ए
कै सोवे रावळी पायगां ए बैरण
कै सोवे राठौडो असवार

झूमादे कलाळ री ए दुवारो दे मोया ए
दूध अरोगो दुवारो छोडो रसिया
छोडो कलाळी धन रो हेत

झूमादे कलाळी ए दुवारो दे मोया ए
दूध छोडा दूवारो नी छोडा ए गौरी
नी छोडा कलाळी धन रो हेत

झूमादे कलाळ री ए दूवारो दे मोया ए
मोया थैं मोय नीं जाणिया ए झूमा
मोहिया ए दे दे दूबारा रा दाव

झूमादे कलाळी ए दूवारो दे मोया ए

टूंक ग्रौर टोडा गाव के बीच कलाली रहती है। वहां मदिरा की भट्टी निकाली जा रही है, इसी भूमादे कलाली ने मेरे मद छकिया को मोह रखा है।

भूमा किसी की बनी भट्टी तप रही है ग्रौर किस की बनी सुग्नाल से मदिरा ढुल-ढुल कर चू रही है।

सोने की बनी भट्टी तप रही है ग्रौर चादी की सुरनाल से मदिरा बूद-बूद कर टपक रही है। इसी कलाली ने मेरे प्यारे को मोह रखा है।

कितने मन महूग्रे ग्रौर कितने मन खाड दुवारा निकालने के लिए पानी मे डाली है। नौ मन महूग्रे ग्रोर दस मन खाड गलाई है।

भट्टी से निकली खुसबू पर भवरे-मडरा रहे हैं। कलाली उमग भरी फिर रही है। भट्टी तप रही है, दुवारा टपक रहा है, साथ ही इस कलाली का रूप भी तप रहा है। भूमादे ने मेरे मद मे छके पति को मोहित कर लिया है।

भूमादे उठ, मद का घडा भर ला। दुवारा का मोल तो वता। दुवारे का मोल तो कहा नही जाता घडे के पूरे पाच सौ लू गी। इस भूमा ने मेरे मनमौजी पति को मोहित कर लिया।

मैंने ग्रपने राठौडी राजा का घोडा कलालिन के घर पर देखा यह या तो रावले के ग्रस्तबल मे ही शोभा देता है या राठौडी सवार की सवारी मे ही। भूमा ने दुबारा पिला-पिलाकर मेरे ग्रालीजा को मोहित कर लिया है।

मेरे राजा तुम दूध पिग्रो, दुवारा पीना छोड दो ग्रौर इस भूमा कलाली का का नेह भी छोड दो। इसने तुम्हे दुबारा पिला-पिला कर मोहित कर रखा है।

गौरी ! मैं दूध छोड दूंगा पर दुबारा नहीं छोडूगा ग्रौर न हीं भूमा कलाली का नेह ही छोड सकता।

भूमा, तूने मेरे रजिया को मोहा जरूर है पर तुझे मोहना नही ग्राता। तूने तो उसे दुवारे के दाव दे दे कर मोह रखा है। प्रेम के वशीभूत थोडे ही किया है।

दारूड़ी

ढोलो म्हाने रे माडाणी माडाणी दारू पावे
यो तो बगल छुपाया दारू पावे

दारू मीठो दाख रो, सूळा मीठी सिकार
सेजा मीठी कामणी, रण मीठी तरवार ।
ढोलो म्हाने माडाणी माडाणी दारू पावे

कै दारू आगरे, कै दारू अजमेर
पीवण वाळो सायबो, सौ रिपिया सेर ।।

ढोलो म्हाने माडाणी माडाणी दारू पावे
सीसो तो धक धक करे, प्यालो करे पुकार
धण ऊभा अरज करे, पीवो राज कु वार ।।

ढोलो म्हाने माडाणी माडाणी दारू पावे
दारू पीवो रग करो, राता राखो नैण
वैरी थारा जळ मरै, सुख पावेला सैण ।।

ढोलो म्हाने माडाणी माडाणी दारू पावे
यो तो बगल छुपाया दारू पावे
यो तो अधर दलीचा रग माणे

ढोला मुझे मनुहारें दे दे कर पिला रहे हैं।

अपने पहलू मे बैठा कर दारू पिला रहे हैं।।

मदिरा दारू की अच्छी होती है। शिकार के सूळे स्वादिष्ट होते हैं। शैया मे कामिनि और युद्ध मे तलवार प्रिय होती है।

मदिरा बढ़िया होती है आगरे की या अजमेर की। उसे पीने वाला मायवा सौ रुपये सेर भर खरीदता है।

ढोला मुझे बड़े आग्रह से मनुहारें दे देकर पिला रहे हैं।

बोतल म से धक धक मदिरा गिर रही है। प्याला लबरेज है। पत्नी खडी मनुहार नजर कर रही है। "राजकुमार पीजिये।"

मदिरा पी रहे हैं, मौज मना रहे हैं, आखो म रग है। दुश्मन जल भर रहे हैं मित्र आनंदित है।

मेरा ढोला मुझे बडे आग्रह मे मदिरा पान करा करा है। अपने पहलू मे बैठाकर पिला रहे हैं। गलीचे पर सुखोपभोग कर रहे हैं।

डूंगरिया पै मदड़ो

पीवे म्हारा मेवाडा रो साथ
डू गरिया पै मदडो पीवे ।

ग्राप भल पीजो रा
ग्रापरा साथीडा ने पाजो
मिरगा नैणी हिचक चीतार ।।

ग्रगग्गा सगग्गा नदी वैवे, नदियन लागे नाव ।
हिरणी हो हेलौ देवू, ग्रावोजी प्रीतम ग्राव ।

पीवे म्हारा ग्रालीजा रो साथ
डू गरिया पै मदडो पीवे ।

फौज घटा खग दामणी, वू द तीर घण नेह
वालम ग्रकेली जाण के, मारण ग्रायो मेह

मोरिया थाने वरजिया मत चढ बोल खजूर
था सू जळहर टुकडे, म्हा सू साजन दूर

पीवे म्हारा ग्रालीजा रो साथ
डू गरिया पै मदडो पीवे

सावण ग्राया सायबा, पगा विलू वी गार
वृच्छ विलू वी बेलडी, नरां विलू वी नार

पावे म्हारा चित्तौड़ा रा साथ
डूंगरिया पै मदड़ो पीवे
आप भल पीजो रा

आपरा साथीड़ा ने पाजो
पिराण पियारी हिचक चोतार

मेरे मेवाड़ा अपने साथियों के साथ पहाड़ों पर मदिरा पी रहे हैं।

आप भले ही पीओ, अपने साथियो को भी पिलाओ पर अपनी मृगनयनी की याद करते करते।

नदी जोरो से चढ रही है पानी का प्रवाह तेज होने से नाव भी नहीं डाली जाती। मैं हरिनि की भाति विव्हल हो पुकार रही हू, आओ, प्रियतम, चले आओ।

घटा रूपी सेना चढी है, खडग का कार्य बिजलिया कर रही है, वर्षा की बूदें तीखे तीर हैं। बालम के बिना अकेली जान यह मेह मुझे मारने आया है।

मयूर, मैंने तुम्हे मना किया था कि तू खजूर पर चढ मत बोलना। तुझसे तो मेघ निकट पडता है पर मेरे साजन तो दूर हैं।

मेरे आलीजा अपने मित्रो के साथ पहाड पर वर्षा का आनन्द लेते मदिरा पी रहे हैं।

सावन का महिना आया, गीली मिट्टी पैरों से चिपकने लगी है। वल्लरिया वृक्षो के गले लग रही हैं। और स्त्रिया पुरुषो का आलिंगन कर रही है।

मेरे चित्तौडा अपनी मित्र मंडली के साथ पहाडी पर बर्षा का आनन्द ले रहे हैं, मदिरा पी रहे हैं, पिला रहे हैं।

आप अवश्य पीओ और पिलाओ। परन्तु साथ ही अपनी प्राण प्यारी को याद करते जाओ। इतना याद करो कि मुझे हिचकी आये।

डूंगरिया पै मदड़ो

पीवे म्हारा मेवाडा रो साथ
डू गरिया पै मदडो पीवे।

आप भल पीजो रा
आपरा साथीडा ने पाजो
मिरगा नैणी हिचक चीतार ।।

अगग्गा सगग्गा नदी वैवे, नदियन लागे नाव ।
हिरणी हो हेलौ देवू, आवोजी प्रीतम आव ।

पीवे म्हारा आलीजा रो साथ
डू गरिया पै मदडो पीवे ।

फौज घटा खग दामणी, बू द तीर घणा नेह
बालम अकेली जाण के, मारण आयो मेह

मोरिया थाने बरजिया, मत चढ बोल खजूर
था सू जळहर टुकडे, म्हा सू साजन दूर

पीवे म्हारा आलीजा रो साथ
डू गरिया पै मदडो पीवे

सावण आया सायबा, पगा विलू वी गार
बृच्छ विलू वी वेलडी, नरा विलू वी नार

पीवे म्हारा चित्तोड़ा री साथ
डूगरिया पै मदडो पीवे
आप भल पीजो रा

आपरा साथीडा ने पाजो
पिराण पियारी हिचक चोतार

मेरे मेवाडा अपने साथियो के साथ पहाडो पर मदिरा पी रहे हैं ।

आप भले ही पीओ, अपने साथियो को भी पिलाओ पर अपनी मृगनयनी की याद करते करते ।

नदी जोरो से चढ रही है पानी का प्रवाह तेज होने से नाव भी नही डाली जाती । मैं हरिनि की भाति विव्हल हो पुकार रही हू, आओ, प्रियतम, चले आओ ।

घटा रूपी सेना चढी है, खडग का कार्य बिजलिया कर रही है, वर्षा की बूदें तीखे तीर हैं । बालम के बिना अकेली जान यह मेह मुझे मारने आया है ।

मयूर, मैंने तुम्हे मना किया था कि तू खजूर पर चढ मत बोलना । तुझसे तो मेघ निकट पडता है पर मेरे साजन तो दूर हैं ।

मेरे आलीजा अपने मित्रो के साथ पहाड पर वर्षा का आनन्द लेते मदिरा पी रहे हैं ।

सावन का महिना आया, गीली मिट्टी पैरो से चिपकने लगी है । वल्लरिया वृक्षो के गले लग रही हैं । और स्त्रिया पुरुषो का आलिंगन कर रही है ।

मेरे चित्तौडा अपनी मित्र मडली के साथ पहाडी पर वर्षा का आनन्द ले रहे हैं, मदिरा पी रहे हैं, पिला रहे हैं ।

आप अवश्य पीओ और पिलाओ । परन्तु साथ ही अपनी प्राण प्यारी को याद करते जाओ । इतना याद करो कि मुझे हिचकी आवे ।

कुंवरजी ने झालो

अनोखा कुंवरजी ओ बापजी झालो देवूं घर आय

झालो तो देती लाज मरूं हो सायबा देखे देवर जेठ
गोरी रा बालमा हो सायबा
झालो देवूं घर आय।
अणी झाला रै कारण ओ सायबा
छोड्या माय ने बाप ओ सायबा
छोड्यो सहेलियां री साथ

अनोखा कुंवरजी ओ सायबा झालो देवूं घर आव।
झालो तो झालो काई करो हो सायबा
झालो मझल मेवाड़ ओ सायबा
ओ सायबा झालो बड़ो सरदार
अनोखा कुंवर जी ओ सायबा
गोरी तो ऊभा गोखड़े ओ सायबा
दे दे घूंघठड़ा री ओट
चतर पियाजी रो चौधणो ओ सायबा
लागी मरम री चोट

अनोखा कवरसा ओ सायबा झालो देऊं घर आय।

अनोखे कु वरजी–झाला (बुलाने का सकेत) दे रही हू घर आओ ।

झाला देते लाज लग रही है । देवर जेठ न देखले कही । इसी झाले के खातिर तो मा बाप को छोडा है ।

सहेलियो का साथ छोडा है ।

झालो झालो' क्या कहते हैं । झाला तो मभ मेवाड मे है ।

गोरी गोखडे म खडी है । घू घट के पट से झांक रही है । चतुर पिया का झाकना मर्म की चोट दे गया ।

कु वरजी, झाला दे रही हू । घर आओ ।

ओलूं

आवणिया करो नी म्हारै देस जी, म्हारी जोडो रा ढोला
आवणिया करो नी म्हारे देस।

था ही आया दूधा वूठो मेह जी, पिया प्यारी रा ढोला
आवणिया करो नी म्हारे देस।

एक तो अरज जी म्हारी जोडी रा ढोला
दूसरी अरज म्हारा राज

तीसरी अरज कयो मानो जी, पिया प्यारी रा ढोला
आवणिया करो नी म्हारे देस

था ही आया लागै म्हारो ने जी पिया प्यारी रा ढोला
आवणिया करो नी म्हारे देस।

एक तो नगारो पिया प्यारी रा ढोला
दूसरो नगारो म्हारा राज

तीसरे नगारे चढ आम्रो जी, म्हारी जोडी रा ढोला
आवणिया करो नी म्हारे देस।

मेरी जोडी के ढोला, अब घर आ जाओ।

तुम्हारे अपने पर हैी मेरे तो दूध की वर्षा होगी।

जोड़ी के राजा, मेरी एक ग्रर्ज है, मेरे राजा मेरी दूसरी ग्रर्ज है। प्यारी के प्रिय, तीसरी ग्रर्ज भी मेरी यही है।

ग्रब घर ग्रा जाग्रो।

तुम्हारे घर ग्राने पर ही तो मेरा नेह सफल होगा।

पहले नक्कारे के डंके तैयार हो जावो, दूसरे नक्कारे *की ग्रावाज पर सवार हो जाग्रो, तीसरे नक्कारे पर प्रस्थान कर दो मेरे राजा।

ग्रब घर ग्रा जाग्रो।

---

* युद्ध और सवारी पर चढ़ने के लिए नक्कारे की आवाज सांकेतिक होती थी। तीसरी बार नक्कारा बजाना प्रस्थान की सूचना होती थी।

गरवो राजा

म्हारे गरवा राजा रे मनडं मे थें ही, थें ही वसो

गरवा राजा रे आवतडा जाएा तो
सामी दासी मे'ला रे

गरवा राजा रे आंगणिये मे ऊभा
जाएौ सो'ळा सूरज ऊभा

गरवा राजा रे थारै नाकडलै री डाडी
सा मै सूरज माडी । म्हारे ।

गरवा राजा रै मादळियो डोरो मे
जोवडलो गोरी मे । म्हारे ।

गरवा राजा रे थारे माथै रो घूमाळो
आछो फूला भरियो भारो । म्हारे ।

गरवा राजा रे थारे कडिया रो कटारो
सूधो कामरा गारो । म्हारे ।

गरवा राजा रे थारे दातां री बत्तीसी
म्हाने हसने बताओ । म्हारे ।

गरवा राजा रै ऊठा री असवारी
घुडला कोतल सोवे । म्हारे ।

गर्वीले राजा, मेरे मन मे तुम ही तुम बस रहे हो।

पता लग जाय तुम आ रहे हो तो स्वागत करने को दासी भेजू।

गर्वीले राजा, आगन मे खडे ऐसे तेजस्वी लग रहे हो मानो सोलह सूरज निकल आया हो।

गले का मादलिया (ताबीज) डोरी मे है, तुम्हारा जी गोरी मे है।

गर्वीले राजा, तुम्हारे सिर पर बाधा धुमाला तो जैसे फूलो का भारा है।

तुम्हारी कमर म बधा कटारा तो सीधा ही कामणगारा जादू डालने वाला है।

गर्वीले राजा, जरा हस कर मुझे अपने दातो की बत्तीसी तो दिखाओ।

गर्वीले राजा ऊट पर सवार है आगे घोडे हैं।

बंको घोड़ो

बको थारो घोडो म्हारा राज जी
बको थारो जोडो आलोजा जी,
बको थारो साईना रो साथ जी,
बको म्हारो राठौडा रो साथ जी,
हा जी रे मीठा बोलो रा ढोला गरवो राजा
बको म्हासू आडो-डोडो बोले म्हारा राज
किण थाने चाळा ढोला चाळिया जी हो
कुण थाने दीनी सुगणी सीख ओ
हा जी रे मीठा बोली रा ढोला
बको म्हासू आडो-डोडो बोलै म्हारा राज
साथीडा तो चाळा चाळिया जी हो
वीरो सा दीनी सुगणी सीख ओ
साथीडा रे हो जो जी धोवडी
वीरा सा री बधज्यो बेल
हा जी रे मीठा बोली रा ढोला
बको म्हासू आडो डोडो बोले म्हारा राज
थे तो म्हारै आज्यो ढोला जी हो ए जी पावणा म्हारा राज जी
करने घुडला रो घमसाण हो
अण हा जी रे
म्हारो बको राजा आडो-डोडो बोल म्हारा राज ।

मेरे राजा, तुम्हारा घोडा भी बाका है, तुम्हारा जोडा भी बाका है।

तुम्हारे साथी लोग भी बाके हैं।

मीठा बोली के राजा, तुम मुझसे टेढे टेढे क्यो बोल रहे हो ?

किसने तुम्हें किसने विदेश जाने का सुझाव दिया है।

किसने तुम्हें इजाजत दी है।

बाके राजा, आज टेढे टेढे क्यो बोल रहे हो ?

मेरे साथियो ने सुझाव दिया है। मेरे बडे भाई ने इजाजत दी है।

तुम्हारे साथियो के बेटी जन्मे। बडे भाई की वश बेलि बढे।

बाका राजा, टेढी टेढी बातें कर रहा है।

तुम जावो। वापिस आना मेरे राजा, घोडो से घिरे हुए दलपति बनकर।

मल्हार

हेली म्हारो हा रा
पिव म्हारो हा रा
मेहला रग माणें ।।

पड पड बू द पलग पै, कड कड बीज कडक्क
साय धण सेजा अकेला, धड धड हियो धडक्क ।
हेली म्हारो हा रा, पिव म्हारो हा रा
मेहला रग माणे

परनाळा पाणी पडै, भींजे गढ री भींत
सूता आवे ओजका, राजन आवे चीत ।।
हेली म्हारो हा रा, पिव म्हारो हा रा
मेहला रग माणे

आज धरा दिस उमग्यो, मोटो छाटा मेह
भीजी पाग पधारस्यो, जद जाणू ली नेह ।। 3 ।।

सावण आयो सायबा, गाढा माणो रग
घर बैठा राजस करो, हरिया चरै तुरग ।। 4 ।।

धर धर चगी गोरडी, गावे मगळाचार
कथा मत चुकावजो, तीज तणो तिवार ।। 5 ।।
हेली म्हारो हा रा पिव म्हारो हा रा
मेहला रग माणे

मेरा प्रिय महलो मे आनन्द का उपभोग करता है।

पलग पर 'पड पड़' शब्द करती मेह की बूदें पड रही है। 'कडकड' करती हुई कर्कश बिजली कडक रही है। साय धरण (पत्नी) अकेली शैय्या मे है। उसका हृदय 'धड धड' कर रहा है।

नालो मे से पानी गिर रहा है। गढ की भींत भीग रही है। बार-बार प्रियतम की याद आती है और मैं सोती हुई चोक पडती हू।

आज चारो ओर से मीटे छींटो का मेह उमड रहा है।

हे प्रिय, यदि भीगी हुई पगडी से आज घर पधारोगे तभी समझूगी तुम मुझे वास्तव मे प्रेम करते हो।

प्रियतम सावन का महिना आगया है। हम खूब आनन्द करें।

तुम सुरगी पगड़ी बाधो। घोडों को हरा चरने को खुला छोड दो।

घर घर मे कामिनियां गीत गारही है त्योहार मना रही है। मेरे कथ, तीज का त्योहार मत चूक जाना। घर चले आओ।

मल्हार

हेली म्हारो हारा
पिव म्हारो हा रा
मेहला रग माणे ।।

पड पड बूंद पलग पै, कड कड वीज कडक्क
साय घण सेजा अकेला, धड धड हियो धडक्क।
हेली म्हारो हा रा, पिव म्हारो हा रा
मेहला रग माणे

परनाळा पाणी पडै, भीजे गढ री भीत
सूता आवे ओजका, राजन आवे चीत ।।
हेली म्हारो हा रा, पिव म्हारो हा रा
मेहला रग मांणे

आज धरा दिस उमग्यो, मोटी छाटा मेह
भीजी पाग पधारस्यो, जद जाणूंली नेह ।। 3 ।।

सावण आयो सायबा, गाढा माणो रग
घर बैठा राजस करो, हरिया चरै तुरग ।। 4 ।।

घर घर चगी गोरडी, गावे मगळाचार
कथा मत चुकावजो, तीज तणो तिवार ।। 5 ।।
हेली म्हारो हा रा पिव म्हारो हा रा
मेहला रग माणे

मेरा प्रिय महलों में ग्रानन्द का उपभोग करता है।

पलंग पर 'पड़ पड़' शब्द करती मेह की बूंदें पड़ रही है। 'कड़कड़' करती हुई कर्कश बिजली कड़क रही है। साथ धण (पत्नी) अकेली शैय्या मे है। उसका हृदय 'धड धड़' कर रहा है।

नालो मे से पानी गिर रहा है। गढ़ की भीत भीग रही है। बार-बार प्रियतम की याद ग्राती है ग्रौर मैं सोती हुई चौंक पड़ती हूं।

ग्राज चारो ग्रोर से मोटे छींटो का मेह उमड रहा है।

हे प्रिय, यदि भीगी हुई पगड़ी से ग्राज घर पधारोगे तभी समझूगी तुम मुझे वास्तव मे प्रेम करते हो।

प्रियतम सावन का महिना ग्रागया है। हम खूब ग्रानन्द करें।

तुम सुरगी पगड़ी बाधो। घोडो को हरा चरने को खुला छोड़ दो।

घर घर मे कामिनिया गीत गारही है त्योहार मना रही है। मेरे कंथ, तीज का त्योहार मत चूक जाना। घर चले जाम्रो।

निरखणदो

ग्रागी रीजो ए सैंया पाछी रीजो ए
ग्रो जो म्हारा ऊगता सूरज ने
म्हाने निरखण दीजो ए

सीयाळा री रुत हो गेंदा
ग्रो जी ढोला थूरमा दूसाला
रावला लारा लीजो सा
ग्रागी रीजो ए सैंया पाछी रीजो ए
ग्रो जी म्हारा केसर रा क्यारा न
म्हाने निरखण दीजो ए

ऊनाळा री रुत हो गेंदा
ग्रोजी ढोला जपुर को डाडी रा
पखो लारे लीजो सा
ग्रागी रीजो ए सया पाछी रीजो ए
ग्रो जी म्हारा मोतीडा री ल वा ने
म्हाने निरखण दीजो ए

चौमासा री रुत हो गेंदा
ग्रो जी ढोला डेरा ने तबू
रावळा लारा लीजो सा

आगी रीजो ए सैया पाछी रीजो ए
ओ जी म्हारा वरसालू बादळ ने
म्हाने निरखण दीजो ए
निरखण दीजो ए परखण दीजो ए

सहेलियो ! जरा पीछे हटो, इधर रहो। मुझे आने दो, मेरे उगते सूर्य को मुझे निरखन दो।

शीत रितु आगई है। ढोला, शाल दुशाला, अपने साथ ले जाना।

सखियो ! जरा हटो ! मुझे आने दो। मेरे केशर के क्यारे जैसे सुन्दर पति को निरखने दो।

गर्मी की रितु आयेगी। ढोला, जयपुर की डाडी का पखा साथ में ले लो।

सखियो, मुझे अपने मोतियो की लूब जैसे प्रिय को निरखने दो।

वर्षा रितु आयेगी। डेरे, तवू साथ लेते जाओ।

सहेलियो, जरा पीछे हटो। मुझे आने दो। मेरे बरसालु बादल जैसे मारू को निरखने दो।

निरखने दो मुझे परखने दो।

जलो

माई म्हारी कोई रे बतावो जलाजी ने आवता

जलाला भूलूं नही बिलाला सो वैण
घोडो चढने राखियो, लाल गुलाबी नैण
माई म्हारी ए बीभळिया नैणा रो जलो म्हारो
माई म्हारी कोई ने बतावो जलाजी ने आवता
जलो ऊभो बजार मे, कूदा रहयो केकाण
साम्ही ऊभी बूबना, बावें विरह रा बाण

माई म्हारी फरहरियें फौजा मे जलो लागे फूटरो
माई म्हारी कोई ने बतावो जलाजी ने आवतो
पागडिया पचास लडे, कांधे दुपट्टो लाल
भरी सभा मे ओळखू, म्हारो सैण जलाल

माई म्हारी लाखा री बधाई जले मारू री म्हे देवा
माई म्हारी कोई ने बतावो जलाजी ने आवता
म्हू धिरणी कबूतरी, चढ जावू आकास
वठा सू खावूं लोटणी, जावूं जला रे पास

माई म्हारी ए वाकडलो मूंछा रो जलो लागे फूटरो
माई म्हारी कोई तो बताओ जलाजी ने आवता ।

मेरे जला को कोई आता हुआ तो बतादो।

जला, तुम्हे भूला नही जाता तुम्हारी बातें नही भूली जाती। लाल नयनो वाला घोडे पर सवार जला भूला नही जाता। कोई मुझे मेरे, विव्हल नेत्रो वाले जला को आता हुआ तो बतादो।

जला बाजार मे खडा है, उसका घोडा कूद रहा है। सामने बूबना खडी है, विरह बाणो से व्यथित हो रही है। झण्डे लहराती फौजो मे मेरा जला, सेना नायक जला कितना सुन्दर लग रहा है।

पचास लडवाली पगडी, कधे पर लाल रग का दुपट्टा। मेरे प्रियतम जलाल को लाखो, लोगो के बीच मे पहचान लू। जला जैसा ठाठदार कही छिप सकता है? मेरे प्रियतम जलाल को कोई आता बता दे तो मुँह मागी उसे बधाई दू।

जी मे आता है लोटन कबूतरी की भाति आकाश मे चढ जाऊ। वहाँ से लौटनी लगावू जो जहाँ जला हो उसके पास जा पहुचू। बाकडली मूछो वाला मेरा जला बडा सुन्दर है। मेरे जला को कोई आता हुआ तो बताओ।

---

* बूब्ना और जलाल की एक प्रसिद्ध लोकगाथा है। ये सिंध के उस आंचल मे हुए थे जो अब पाकिस्तान में है पर पहले राजस्थान में था। जलाल नायक का नाम था पर यह नाम इतना लोकप्रिय हुआ कि प्रेमी का पर्यायवाची शब्द बन गया।

भटियांणी राणी

अगरियो ने गाजे ए भटियाणी राणी छप्पर चुवँ
हो रे चनण लेरिया जाय कुण कुण ने वळ जासी
रावमाल महाराजा री चाकरी, कागद मोहे वाचे सुणाव
म्हे ई ने जास्या हा रावमाल महाराजा री जाकरी
हा रे म्हे ई जास्या लार वणोजणने वळे लागा ग्रो
रावमाल तेजी ताजण हा रे वटोजण लागी डोर
छाणोजण ने वळ लागा ग्रो रावमाल चोखा चावळिया
हा रे दळोजण लागी दाळ म्हे ही जास्या ए भटियाणी
महाराजा री चाकरी हा रे म्हे ही जास्या लार
हस हस ने वळे दीनी ए भटियाणी राणी सीखडी
हा रे ज्यू चित लागे काम छाती ने भरीजे ग्रो रावमाल
हिवडो उबके हा रे सीखज मा सू दिवीय न जाय
छाती ने जडावू ए भटियाणी माणक मोतिया
हा रे हियो थारो मोतिया सू जडाव
झव झव ने वळे झूमे ग्रो रावमाल घोडा रे पागडँ
हा रे डव डव भरिया नैंण ग्रासू ने पू छिया ग्रो
रावमाल पीळो फामडी हा रे लीवी म्हाने हिवडँ लगाय
दातणिया ने करता ग्रो रावमाल मोसो बोलियो
भटियाणी रो पिव परदेस कासदिया ने तेडू ग्रो
रावमाल कागद मोकला हा रे दीजो रावजी रे हाथ

एड ने वळे छड़े ओ रावमाल लिखसू ओलमा
हा रे अधविच सात सिलाम
गोखा ने वळे बैठा ओ रावमाल कुरळा करै
हा रे कागद दियो हाथ, बाची ने वळ निरखिया
रावमाल मन माय हरखाय हा रे हिवड दिया रे लगाय
कुरळा ने वळ करस्या ओ रावमाल गढ रे कागरे
हा रे जीमस्या भटियाणी रे हाथ
आया ने सुणीजे ओ रावमाल रावजी मेडले
हाँ रे नवमण उडै रे गुलाल
आया ने सुणीजे ओ रावमाल रावजी बाग मे
हा रे साथीडा ने दूणी गोठ
आया ने सुणीजे रावमाल रावजी चोवटे
हा रे औळखिया ढाडी डूम
आया ने सुणीजे रावमाल रावजी चौक मे
हा रे मोतीडा रो थाळ भरेस
आया ने सुणीजे रावमाल रावजी म्हेल में
हा रे भटियाणो सज्यो सिणगार
घडी दोय ने वळे लागे ओ रावमाल माथा धोवता
हा रे ढील करो रे मोटा राव
घडी दोय ने वळ लागे ओ रावमाल सीस गूथावता
हा रे ढील करो रे मोटा राव
घडी दोय ने वळ लागे आ रावमाल कपडा पैरता
हा रे ढील करो रे मोटा राव
घडी दोय ने वळ लागे ओ रावमाल गहणो परता
हा रे ढील करो रे मोटा राव
पहले ने पावडिय ओ रावमाल भटियाणी पग दियो
हा रे भबरक दिवलो हाथ
दजे ने पावडिय ओ रावमाल भटियाणी ए पग दियो

हा रे जळहर भारी हाथ
तीजे ने पावडिये ओ रावमाल भटियाणी पग दियो
हा रे फूला रो पुडियो हाथ
चौथे पावडिये ओ रावमाल भटियाणी पग दियो
हा रे अतर री सीसी हाथ
आगला ने वळ गई ने रावमाल भटियाणी राणी देखियो
ए जी दोय मुख नैण चार
भारी ने गुडाई ओ रावमाल भटियाणी राणी जोरसू
हा रे दिवलो दियो बुभाय
धब धब करी ने ओ रावमाल मेला सू हेटा उतरिया
हा रे बैठा ओवरिया माय
पहिला ने मनाउ ओ रावमाल राव जी पधारिया
हा रे मानो रे मोटा घर री धीय
दूधडला ने पीधा ओ रावमाल घर री डावडी
हा रे छाछडला रा किस्या रे सवाद
दासड रो जायो ओ रावमाल घोडे चढे
कवर भटियाणी रो चरवादार
दूजे ने मनाउ ओ रावमाल सुसराजी पधारिया
हा रे मनो रे मोटा घर री धीव,
ऊचा ने मेलू ओ रावमाल म्हारे सुसराजी रे बैसणा
हा रे लुळ लुळ लागू पाव
जीवतडो तो राखू ओ रावमाल सू रूसणा
हा रे मरसी तो जास्या लार
तीजे नै मनाऊ ओ रावमाल सासूजी पधारिया
हा रे मनो रे मोटा घर री धीय
ऊचा ने वळे मेलू ओ रावमाल मारे सासूजी रा बैसणा
हा रे लुळ लुळ लागू पाव

श्रांवंतडे भवनश्रो रावमाल रावजी सूं बोलस्या
हा रे मरगी तो जास्या लार
माळा ने वळे लीधो श्रो रावमाल हाथ मे रे
हा रे रटे रे श्री किसनजी रो नाम
छोडो नी भटियाणी मदिर माळिया छोडो श्रोवरे री भीत
यो लो श्रो माराजा मदिर माळिया यो लो श्रोवरे री भीत
म्हे तो वळ जावस्या श्रो रावमाल म्हारा बाप रे
हा रे करस्या खेती रो काम
लारे तो वळे मेल्या श्रो रावमाल रावजी ए मोळिया
हा रे दीजो भटियाणी रे हाथ
जाय नें वळे केवजो श्रो रावमाल रावजी ए समरिया राम
हर हर कर ने श्रो रावमाल भटियाणी बैठा हुश्रा
हा रे हाथ मे लिया नारेळ
राते नाडे श्रो रावमाल भटियाणी राणी सत लियो
हा रे जोधाणां सू सात सिलाम
ऊडा ने रूसणिया श्रो रावमाल बाई बेना मत करजो
हा रे रूसणिया रे घर रो निवास
ऊडा ने रूसणिया ए म्हारी बेन्या म्हे कीधा
हां रे रावजी सूं पडियो रे विजोग

मेघ गरज रहा है। छप्पर चू रहा है। राव मालदेव की चाकरी मे कौन-कौन जा रहा है, कागज बाच कर तो सुना।

राव मालदेव चाकरी मे जा रहे हैं। घोडो के लिए ताजणा (चाबुक) बनाये जा रहे हैं। डोरे मे बट डाला जा रहा है।

चावल छाने जा रहे हैं, दाल दली जा रही है। राव मालदेव चाकरी मे जा रहे हैं।

मूमल

सोढो राणो सावणिये रो मेह
मूमल आभा बीजळी
बरसण लाग्यो मेह व
झबूकण लागी बीजळी

सोढो राणो राय चम्पे रो फूल
मूमल केलू कामठी
महकण लाग्यो चम्पे रो फूल
लळकण लागी केळु कामठी

सोढो राणो काजळिया री रेख
मूमल बिंदली जडाव री
सोढो राणो मोतीडा रो हार
मूमल गळा री धुकधुकी

सोढा राणा सावन के मेह सा आल्हाद कारी है तो मूमल काली घटा मे दमकने वाली दामिनी। मेह बरसने लगा, दामिनि दमकने लगी।

सोढा राणा चपे का फूल है तो मूमल कदली का झाड। चपे का फूल महकने लगा। कदली झोके खाने लगी।

सोढा राणा काजल की रेखा है। मूमल रत्न जडित बिंदी है।

सोढा राणा मोतियो का हार है। मूमल गले की माला की धुक्धुकी है।

सोरठ

वाज रिया ग्रलबेला जो पिया प्यारी सा रा विछिया रिम-झिम
मीठा बोली सा रा विछिया रिमझिम

सोरठ गढ सूं ऊतरी, झाझर रै झणकार।
धूजै गढ रा कागरा, गाज रियो गिरनार। वाज०।

सोरठ सीस गु थाय कै, चदा सामो मत जोय।
के तो चदा गिर पडै र रैंण ग्रंधारी होय। बाज०।

सोरठ म्हे तनै ग्रोळखी, घू घट रै पट माय।
जाणे चमकी बीजळी, काळै बादळ माय। बाज०।

बीझा मे तनै ग्रोळख्यो, भरी हताया माय
जाणे फूल्यो केवडा, चगी बाडी माय। बाज०।

सोरठ डाळी ग्राम की, ऊगी विसमी ठाय
बीझो बादर हो रियो, कद टूटै कब खाय। बाज०।

रिमझिम विछिया बज रहे हैं पिया प्यारी सोरठ के।

मीठी मीठी बोलने वाली सोरठ के बिछिये बज रहे हैं रिमझिम।

मूमल

सोढो राणो सावणिये रो मेह्
मूमल आभा बीजळी
बरसण लाग्यो मेह् व
झबूकण लागी बीजळी

सोढो राणो राय चम्पे रो फूल
मूमल केलू कामठी
महकण लाग्यो चम्पे रो फूल
लळकण लागी केळु कामठी

सोढो राणो काजळिया री रेख
मूमल बिंदली जडाव री
सोढो राणो मोतीडा रो हार
मूमल गळा री धुकधुकी

सोढा राणा सावन के मेह् सा आल्हाद कारी है तो मूमल काली घटा मे दमकने वाली दामिनी। मेह् बरसने लगा, दामिनि दमकने लगी।

सोढा राणा चपे का फूल है तो मूमल कदली का झाड। चपे का फूल महकने लगा। कदली झोके खाने लगी।

सोढा राणा काजल की रेखा है। मूमल रत्न जडित बिंदी है।

सोढा राणा मोतियो का हार है। मूमल गले की माला की धुकधुकी है।

सोरठ

बाज रिया अलबेला जो पिया प्यारी सा रा बिछिया रिम-झिम
मीठा बोलो सा रा विछिया रिमझिम

सोरठ गढ सू ऊतरी, झाझर रै झणकार ।
धूजै गढ रा कागरा, गाज रियो गिरनार । बाज० ।

सोरठ सीस गु थाय कै, चदा सामो मत जोय ।
के तो चदा गिर पडै र रेण अंधारी होय । बाज० ।

सोरठ म्हे तनै ओळखी, घू घट रै पट माय ।
जाणे चमकी बीजळी, काळै बादळ माय । बाज० ।

बीझा मे तनै ओळख्यो, भरी हताया माय
जाणे फूल्यो केवडा, चगी बाडी माय । बाज० ।

सोरठ डाळी ग्राम की, ऊगी विसमी ठाय
बीझो बादर हो रियो, कद टूटै कद खाय । बाज० ।

रिमझिम बिछिया बज रहे हैं पिया प्यारी सोरठ के ।
मीठी मीठी बोलने वाली सोरठ के बिछिये बज रहे हैं रिमझिम ।

सोरठ गढ से नीचे उतरने लगी। उसके पाजेब की झकार से गढ के कगूरे धूजने लगे। गिरनार पहाड गूज उठा।

सोरठ, तुम बाल गूथा कर चाद की तरफ मत देखना चांद गिर पडेगा, रात अधेरी हो जायेगी।

सोरठ ! मैंने तुम्हे घूघट के पट मे भी पहिचान लिया। जैसे काले बादल मे बिजली चमकी।

बीझा तुम्हें भी मैंने पहिचान लिया भरी सभा म जैसे बगीचे मे केवडा का फूल खिला।

सोरठ ग्राम वृक्ष की डाली है परन्तु ऐसे विषम स्थान मे उगा है जहां पहुच नही हो पा रही। बीझा बन्दर की भाति ताक लगाये बैठा है। कब टूटे और कब खावू।

नागजी

नागजी घड़ियक घोड़लो फेर रे प्यारा
वडला तो वाळी वावडी श्रो नागजी ।।

नागजी काजळ जितरो भार रे प्यारा
घाल नैणा में ले चलूं श्रो नागजी ।।

नागजी तनक जोड़ मत तोड़ रे प्यारा
कतवारी रा ताग ज्यूं श्रो नागजी ।।

नागजी म्हे दाडम था दाख रे प्यारा
एकण वाड़ी नीपज्या श्रो नागजी ।।

नागजी म्हे चौपड था सार रे प्यारा
एकण जाजम ढाळिया श्रो नागजी ।।

नागजी म्हे चावळ थां मूंग रे प्यारा
एकण थाळी परूसिया श्रो नागजी ।।

नागजी पड़े न जूनी प्रीत रे प्यारा
नैण जो लागियोड़ा नागजी ।।

नागजी, एक घडी के लिये अपना घोडा दौडाने वड वाली वावली पर आना ।

नागजी, काजल की भांति मैं तुम्हें आंखों मे डालकर ले चलू ।

नागजी, प्रीत के तार बड़े मजबूत होते हैं । कच्चे सूत की भांति इन्हें मत तोड़ना ।

नागजी, तुम अनार हो मैं दाख हू । एक ही बाग मे नीपजे हैं ।

नागजी, मैं चौपड़ हू तुम गोटी हो, एक ही जाजम पर बिछाये गये हैं ।

नागजी, मैं चांवल हू तुम मूग हो, एक ही थाली में परोसे गये हैं ।

नागजी, एक बार नयन मिल जाने पर प्रीत कभी पुरानी नहीं पड़ती ।

सोढा राणा नेहडलो लग्यो ग्रधरात
परदेसी ढोला प्रीतडली तोडी परभात

लूंगा ने सरीखो बारो लाक रा
काई पाना ने सरीखा सुंदर पातळा
सोढा राणा नेहडलो लग्यो ग्रधरात
मीठा बोली रा ढोला प्रीतडली तोडी परभात

मरूं ए के जीवूं म्हारी माय रा
कोई रूप तो वखाण्यो लोडी सोक रो
सोढा राणा नेहडलो लग्यो ग्रधरात
हसा हाळी रा ढोला प्रीतडली तोडी परभात

थें नोज मरो ए म्हारी धीय
पडी झक मारो लोडी सोक रा
सोढा राणा नेहडलो लग्यो ग्रधरात
पिवल प्यारी रा ढोला प्रीतडली तोडी परभात

चादनी रात छिटक रही थी। सोढा राणा का लश्कर उधर से निकला।

सोढा राणा, तुमने ग्राधी रात को तो नेह लगाया। प्रभात को ही प्रीत तोड कर जाने लगे।

मार्ग रोक कर एक बात पूछना चाहती हू। वह दूसरी पत्नी ऐसी कैसी रूपवती है जिसके लिए उमगित मन ग्राधी रात को ही रवाना हो गये।

वह पत्नी बडी रूप वाली है, तुम से भी ज्यादा सुन्दर है। सूरज के समान

यह निर्मल है। दूध का सा उसमे उफान है, दही जैसी उज्जवल है। लौग की सी बनावट अग की, पान जैसी पतली है।

विवाहिता मा के पास जाकर रोने लगी—

मां, मर जावू मैं तो। सोढा राणा ने तो मेरी छोटी सौत के रूप को सराहा। सोढा आधी रात को आया, प्रभात होते ही प्रीत तोड कर जा रहा है।

मेरी बेटी, तू क्यो मरती है। छोटी सोत पडी झक मारे।

सोढा राणा, तुमने आधी रात को तो नेह लगाया, प्रभात को ही प्रीत तोड कर जाने लगे।

राव खंगार

ये कस्ये घोडे राव खगार
कस्ये जी घोडे राणो सूमरो
ये घोळे घोडे राव खगार
ग्रलल बछेरे राणो सूमडो
ये कस्ये फेंटे राव खगार
ये कस्ये लपेटे राणो सूमरो
ये घोळे फेंटे राव खगार
ये लाल लपेटे राणो सूमरो
सुए सूमडा जी री नार
दिन दस दो नी राणो सूमरो
ये सूमरो जी दियो य न जाय
सेजा रो सवादी, राणो सूमरो
मागो मागी गोठ नही होय
माग्या घी रो कस्यो चूरमो
ये घट से तो भर भर देय
घाल काटी मे पाछो तोल
ये सूमरो जी दियो य न जाय
लाखा रो लडाउ राणो सूमरो
मागी मागी सेज नही होय
माग्या राजन रो कस्यो पोढणो

कैसे घोडे पर राव खगार सवार है श्रौर कैसे घोडे पर राणा सूमरा।

सफेद घोडे पर राव खगार श्रौर चपल बछेरे पर राणा सूमरा।

राव खगार के श्रौर राणा सूमरा के कैसा फेंटा है ?

सफेद फेंटा राव खगार ने बाध रखा है श्रौर लाल रग की सुन्दर पाग राणा सूमरा ने।

सूमरा की स्त्री दस दिन राणा सूमरा को हमे उधार ही दो।

सूमरा जी दिया नही जाता, वह रसिक है।

माग कर कोई गोठ थोडे ही दी जाती है ? मागे हुए घी का पकवान क्या बनाना ?

बाट से तोल-मोल कर देना श्रौर पीछे काटे से तोल कर श्रपना ले लेना।

राणा सूमरा को कैसे दे दू, वह लाखो का प्यारा है।

सुना, शैय्या मागी नही मिलती है, मागे हुए साजन का कौन सा मिलन ?

वाईसा ठंड पड़ै ग्रो लसकर मे
कूंकर काढूं हो वेरण रात

चार महिना ग्रो वाईसा सियाळो जी लाग्यो
वाईसा ठड पड़ै जी लसकर मे
कूंकर काढूं हो वेरण रात।

ननद बाई। ग्राज वडे जोर की ठड पड रही है। डूगरो मे साभर सूग्रर तक ठड से काप रहे हैं।

मैं कैसे इस जाडे को पति बिना सहन करू ?

बाग मे ग्रनार दाख ठड से जल गये हैं, पनघट पर पनिहारिनें जाडे से धूज रही है, बाजार मे, महलो मे स्त्री पुरुष ठड से पीडित हैं।

मैं ग्रकेली कैसे इस जाडे को सहन करू ?

पाच ग्रशर्फी खर्च कर रखडी बनाई है पर उसे निरखने वाला तो लश्कर मे बैठा है।

बेरिन रात को कैसे बितावू ?

चार चार मास की शीत ऋतु को मैं पति बिना कैसे काटूगी ?

* हेमन्त रितु को सीयाला कहा जाता है। विभिन्न रितुओ के गीत होते है। जो उस मौसम में गाये जाते है।

ओलुं

माथा नें मेमद घडावजो सा
ओळु रखडी रे वीच

ओळु घणी आवै म्हारा राज
जी नीद नही आवै म्हारा राज
राज री ओळु म्हे करा ओ
हा ओ गढपतिया राज
म्हारी करेयन कोय

ओळु घणी आवै म्हारा राज
नीद नही आवै म्हारा राज
ओळु तो हरिया डूगरा ओ
हा ओ मुरघरिया राजा
ओळु हरिय रूमाल

ओळु घणी आवैं म्हारा राज
धान नही भावै म्हारा राज
हिवडा ने हाथ घडावजो सा
ओळु छतिया रे वीच

ओळु घणी आवे म्हारा राज
घडी ए ने आवडे म्हारा राज
ओळु कर पीळी पडी

बाईसा ठंड पडै ग्रो लसकर मे
कूंकर काढूं हो बेरण रात

चार महिना भ्रो बाईसा सियाळो जी लाग्यो
बाईसा ठड पड़ै जी लसकर मे
कूंकर काढूं हो बैरण रात ।

ननद बाई । ग्राज बडे जोर की ठड पड रही है । डूगरो मे साभर सुग्रर तक ठड स काप रहे है ।

मैं कैसे इस जाडे को पति बिना सहन करू ?

बाग मे ग्रनार दाख ठड से जल गये हैं, पनघट पर पनिहारिनें जाडे से धूज रही है, बाजार मे, महलो मे स्त्री पुरुष ठड से पीडित हैं ।

मैं ग्रकेली कैसे इस जाडे को सहन करू ?

पाच ग्रशर्फी खर्च कर रखडी बनाई है पर उसे निरखने वाला तो लश्कर म बैठा है ।

बैरिन रात को कैसे बितावू ?

चार चार मास की शीत ऋतु को मैं पति बिना कैसे काटूगी ?

* हेमन्त रितु को सीयाला कहा जाता है । विभिन्न रितुओ के गीत होते है । जो उस मौसम में गाये जाते है ।

श्रोलुं

माथा नें मेंमद घड़ावजो सा
श्रोळुं रखड़ी रे बीच

श्रोळुं घणी श्रावै म्हारा राज
जी नींद नही श्रावै म्हारा राज
राज री श्रोळु म्हे करा श्रो
हां श्रो गढपतिया राज
म्हारी करेयन कोय

श्रोळुं घणी श्रावै म्हारा राज
नींद नही श्रावै म्हारा राज
श्रोळुं तो हरिया डूंगरां श्रो
हां श्रो मुरधरिया राजा
श्रोळुं हरियें रूमाल

श्रोळुं घणी श्रावै म्हारा राज
धान नही भावै म्हारा राज
हिवड़ा ने हांस घडावजो सा
श्रोळुं छतियां रे बीच

श्रोळुं घणी श्रावे म्हारा राज
घडी ए ने श्रावड़े म्हारा राज
श्रोळुं कर पीळी पड़ी

घोडला ने जी ठाणा बधावूं ए खुमाणाजी
हसती झुकावूं माणक चौक मे जी राज
वेलिया ने जी दाणो दिरावूं ए खुमाणाजी
कुरिया ने झुकावूं बाळु रेत मे जी राज
साथीडा ने ओ जी दूबारो पिलाऊ ए खुमाणाजी
आप रे जीमण ने सूळा मद सोयता जी राज
ऊठ सबेरे सैंया पूछी बात ए खुमाणाजी
रात री रीझा मे काई देगयो जी राज
कैता सैंया म्हांने आवै लाज ए खुमाणाजी
मैंमद रे भरोसे रखडी ले गयो जी राज
कैता सैंया म्हाने आवै लाज ए खुमाणाजी
लगर रे भरोसे पायळ ले गयो जी राज

मेरे घर के पीछे से रास्ता जाता है। इसी रास्ते खुमाणाजी का लश्कर निकला।

मैं नीद मे सो रही थी। खुमाणाजी के लश्कर के आधा आदमी केसरिया और आधे कसूमल रग की पाग बाधे हुए मेरे सिरहाने से निकले। खुमाणाजी, राह रोक कर मनुहार करती हू, आज मेरे यहा मेहमान बनो। मृगनयनी आज रहू तो सही पर रहा नहीं जाता। तुम्हारे जैसी ही रूपसी मेरी प्रतीक्षा कर रही है।

खुमाणाजी वह पत्नी कैसी सुन्दर है? वह किसके उनिहार है?

वह इतनी सुन्दर है कि तुम्हारा मुह और उसकी पगथली बरावर है तुम्हारे जैसी तो उसके दासिया हैं।

मेरी मा मैं मरू या जीऊ? खुमाणाजी ने उस पत्नी के रूप सौन्दर्य का बखान किया।

मेरी मृगनयनी बेटी, तुम क्यों मरो ? सोढा राणा की लडकी वह सौत मरे।

खुमाणजी, घोडो को अस्तबल मे बधा दू, हाथियो को म.णक चौक मे बैठा दू, बैलो को दाना दिला दू, ऊटो को वालूरेत मे बैठा दू, साथियो को शराब भिजवा दू और आपके लिए सूळा, पुलाव और शराब तैयार है।

प्रभात मे उठने पर सहेलियो ने पूछा, तुम्हारे पति रात को प्रसन्न होकर क्या दे गये ?

सखियो, कहते हुए लज्जा आती है। मैंमद के भरोसे मेरी रखडी ले गया और लगर के भरोसे मेरी पायल ले गया, अर्थात् अपने सिर के आभूषण की जगह मेरे सिर का आभूषण ले गया और अपने पाव के जेवर की जगह मेरी पायल ले गया।

सामती घरों में गाया जाने वाला गीत है। बहु विवाह प्रथा का बहुत प्रचलन था। अपनी सेना की टुकडियों के साथ प्रवास में इधर उधर आना जाना ज्यादा रहता था।

फामड़ी

गाढा मारू फामडी रो रस थें लियो
मेवाडा ढोला सेर दिल्ली रा वजार मे
मेवाडा मारु फामडी विकाऊ आई हो
गाढा मारू फामडी रो रस थ लियो
मेवाडा मारु ए कुरण फामडी मोलवे
ए कुरण चीरेला दाम ए
गाढा मारु फामडी रो रस थे लियो
मेवाडा ढोला सुसरोजो फामडी मोलवे
मेवाडा ढोला सायवा जी चीरेला दाम
गाढा मारू फामडी रो रस थे लियो
मेवाडा ढोला ए कुरण ले घर आवसी
मेवाडा मारु ए कुरण ओढरण जोग
मेवाडा मारू फामडी रो रस थे लियो
मेवाडा मारू देवर ले घर आवसी
मेवाडा ढोला भाभीसा ओढरण जोग
गाढा मारू फामडी रो रस थ लियो
मेवाडा ढोला लीली तो सीसी मद भरी
मेवाडा मारू नकसी रो पियालो हाथ
गाढा मारू फामडी रो रस थे लियो

फामडी का रस मेरे प्रियतम, तुमने लिया है ।

मेवाडी स्वामी, दिल्ली के बजार मे फामडी बिकने ग्राई है । कौन खरीदेगा इसे ? कौन दाम चुकायेगा ?

मेरे प्रियतम, तुमने इस फामडी का ग्रानन्द लिया है ।

समुरजी फामडी खरीदेंगे। मेरे पति दाम चुकायेंगे ।

ग्रो मेवाडी स्वामी, फामडी को कौन घर पर लेकर ग्रायेगा ? इस फामडी के योग्य ग्रोढने वाली कौन है ?

फामडी का रस मेरे प्रियतम ने लिया ।

देवर घर पर ले ग्रायेगा। वह कहेगा इस फामडी को ग्रोढने योग्य भाभीजी है ।

फामडी का रस मेरे प्रियतम ने लिया ।

नीले रग की शीशी मदिरा से भरी है । नक्कामीदार प्याला हाथ मे है ।

फामडी का ग्रानन्द मेरे प्रियतम ने लिया ।

फामड़ी एक प्रकार की शाल होती है ।

सूवरियो

गयो छो गयो छो बागां वाळी सैल ए वाढाली म्हारी भूंडण ए
केसर रा क्यारिया रूदला म्हे कर्‌या

गयो छो गयो छो पणघट वाळी वाट ए वाढाली म्हारी
भूंडण ए पणघट रा घाटा पैं पाणी म्हैं पीयो

जावो जावो बजारा रे बीच ए वाढाली म्हारी भूंड्‌ण ए
खवरा तो लाज्यो परण्या स्याम री

गई छी गई छो वजारा रे माय गजदता म्हारा सूरा रे
खवरा तो लाई छूं परण्या स्याम री

आगे तो गई छी लुहारडा री दुकान गजदता म्हारा सूरा रे
गोळा ता घड़िया छं पूरा डोढसो

गई छो गई छी म्हे सिकलीगर री दुकान गजदन्ता म्हारा सूरा रे
भाला तो सवार्‌या छै बीजळसार रा

आगे गई छी म्हे रावळा रे माय भाखर रा भोमिया रे
हळद्‌या तो पीस रही छी आदण उकळै

होग्या छै होग्या घुडला ऊपर सवार गजदता म्हारा सूरा रे
धोळी तो नळिया रा आवै रापडा

होग्या छै तो पड्‌या हो जाय ए वाढाली म्हारो भूंडण ए
कतरा एक नें पैरादू लावो काचल्या

थाने डर लागे तो करलो हिरणा सूं हेत ए वाढाळी म्हारी भूंडण ए
ले जावो थें छेवरिया नें लार नें ।

हिरणा रा जाया खावें लीलो पीळी दोब गजदता म्हारा सूरा रे
थारा तो जायोडा खावें गेहूं गादल्या

थाने डर लागे तो पीयरिये पूंचादू ए वाढाळी म्हारी भू डण ए
जामण रा जाया रे रीजे साथ मे

नी छैं पीयरिया मे म्हारे जामण जायो बीर भाखर रा भोमिया रे
था सू रे वीछडिया जीणू नी हूवे

भूंडण चढ रडक्ली म्हारी वाट न जोय
म्हे सिर सू प्यो राज ने हरि करें सो होय ।

तेज प्रहार करन वाली शूकरी, आज मैं बाग की तरफ सैर करने चला गया था वहा की केसर की क्यारियो को मैंने रौद डाला । मेरी वाढाली, पनघट की ओर चला गया था, वहा पनघट पर मैंने पानी पिया । अवश्य ही मेरे बारे मे शहर मे चर्चा चल रही होगी । पैंने वार करने वाली मेरी शूकरी, तुम जरा बाजार मे जाकर पता तो लगाओ, तुम्हारे पति की वहा क्या चर्चा हो रही है ?

मेरे गजदन्ता शूर, मैं बाजार जा अपने स्वामी के समाचार ले आई हू । हाथी के से दांत वाले मेरे बहादुर पति, लोहार की दुकान पर मैं गई, वहा तुम से लडने के लिए पूरे डेढ सौ गोले तैयार हो गये हैं । मेरे गजदन्ता, सिकलीगर की दुकान पर जाकर मैंने पता लगाया, वहां बीजलसार के भाले तुम पर वार करने को सुधारे जा रहे हैं, पहाडा के स्वामी, मैं रनिवास की ओर चली गई, वहा देखा कि तुम्हारा मास पकाने के लिए गर्म पानी खौल रहा है । मसाले मे हल्दी पीसी जा रही है । मेरे बहादुर, राजपूत तुम्हारी शिकार के लिए घोडों पर सवार हो गये हैं ।

तेज प्रहार करने वाली मेरी शूकरी, वे घोडो पर सवार हो गये हैं, तो होने दो, मैं भी कितनी स्त्रियो को लम्बी काचली पहिना दूगा, उन्हें विधवा कर दूगा ।

आलीजा शिकार पर जाने के लिए कमर कस रहे है और डेरो-डेरो पर जा कर चौबदार जल्दी तैयार होने को कह रहा है।

पत्नी पति से कहती है, आप शूकर की शिकार करने जाइए और लौटते हुए मेरे लिए मृग की शिकार करके लाना।

आलीजा, आपने शूकर, बारहसिंगा और मृगो को किससे मारा ?

शूकर और बारहसिंगा को भाले से मारा तथा बर्छी से मृगो को।

शूकर, बारहसीगो तथा मृगो को यहा कैसे लाये ?

गाडियो पर लाद कर शूकर और बारहसीगा को लाया तथा ऊटो पर लादकर मृगो को।

इनका मास सारे शहर मे बटा दो, ब्राह्मण और वैश्यो को टाल देना।

—

मंगरो छोड़ दे

मगरो छोड दे रे वन का राजा मारयो जासी रे
मगरो छोड दे

मगरा री अडक्या खडक्या न्हार ज ऊडो गाजे र
आवया वाळा उदैसिंघ जो नत री खबरा लावे रे
पग पग प डाक दौडावै थारी जो खोजा चाले रे
ए खबरा सुण सिकारी राजा वेगा पधारे र
मगरो छोड दे ।

मगरो छोड दे असल सुनैरी मारयो जासो र
मगरो छोड दे ।

न्हारे मगरे डैरा तणिया फौजां भारी रे
सोळा नै बत्तीस लार चढिया घेरो भारी रे
मगरो छोड दे

मगरो छोड दे नवहत्या मारयो जासी र
मगरो छोड दे

भैसा बाधे बकरा बाधे थनै जमावे रे
खाळे खाळे हायो जो ऊभा तरगस ताण्या रे
मगरो छोड दे

मगरो छोड दे इलमत्या मारयो जासी रे
मगरो छोड दे

ग्रडवड खडवड तासा बाजे सोर करे सरणाटा रे
नोकरिया रा भाला भळक्या तारा चमक्या रे
मगरो छोड दे

मगरो छोड दे ग्रसल सुनेरी मारयो जासी रे
मगरो छोड दे

ग्रोळु दोळु घेरो घाल्यो हाको फाडे रे
राणा फतै सिघजी ग्रोदी विराज्या भरी बदूका रे
मगरो छोड दे

देसूरी री नाळ उतरजा पाली ने दे जा पूठ रे
डोडो टळ जारे सुनेरी मारयो जासी रे
मेवाडी राजा रे यो ही चाळो रे मगरो छोड दे

मगरो छोड दे रे वन का राजा मारयो जासी रे

वन के राजा, पहाड छोड कर चला ला। ग्रन्यथा मारा जायेगा।

पहाड की कन्दरायें ग्रौर घने जगल शेर की दहाड से गूज रहे हैं।

शिकार खाने के ग्रधिकारी ग्रावया गाव के रहने वाले उदैसिहजी तुम पर बरावर नजर रखे हुए हैं। तेरी गतिविधि की सूचना डाक दौडा करके प्रतिदिन भेजते है। तुम्हारे पाव के निशानो के पीछे पीछे चलते हैं। सूचना मिलते ही शिकारी राजा शीघ्रता से शिकार पर ग्राते हैं, पहाड छोड दे। ग्रसल सुनहरी शेर, तू मारा जायगा।

म्हारे मगरे के स्थान पर डेरे तबू तन गये हैं। भारी फौज साथ म है। सोलह बत्तीस उमराव भी साथ चडे हैं। तेरा जबरदस्त घेराव किया जा रहा है।

पहाड छोड कर चला जा। नौहत्थे सिह, तू बचेगा नही मारा जायगा।

भैंसे और बकरे खज पर बाध कर तुम्हे हिला रहे हैं। नाले नाले पर हाथी खडे कर दिये हैं। तरकश ताने शिकारी चढे हैं।

पहाड छोडकर भग जा। डलमत्था (बडे सिरवाला) मारा जायेगा।

जोर जोर से तासे (आवाज करने वाला वाद्य) बज रहे हैं। पटाखे छोड कर तुम्हे गुफा छोडने को बाध्य कर रहे हैं। सैकडो हाका देने वालो के हाथो म भाले चमक रहे हैं तारो की भाति। चारो ओर से घेरा डाल दिया है, कही हाका चीरकर तुम निकल नही जाओ।

ओदी पर राणा फतेहसिहजी बैठे हैं हाथ मे भरी बन्दूक है तू पहाड छोड कर चला जा। वन के राजा, वन नही छोडा तो मारा जायेगा।

अरावली पर्वत माला के देसूरी नाम के दर्रे से होकर नीचे मैदान मे उतर जा। पाली कस्बे के पार होजा। टेढे तिरछे मार्ग से निकल मेवाड राज्य की सीमा से बाहर निकल जा। तभी तेरी जान बचेगी। मेवाडी राजा को शेर की शिकार का व्यसन पड गया है।

बाघजी

परभाते धानी गाईजै, लीजै बाघ को नाम
भूखा नैं भोजन मिले, गढपतिया नैं गाम
ओ जी ओ कलाळण मदवो आवै बाघजी
दुवारा रो छकियो

सूम सवारै मिळजो मती, मिळजो तीजा पौर
दातारा रा खूसडा, सूमा रा सिरमोड
ओ जी ओ कलाळण मदवो आवै बाघजी
दुवारा रो छकियो आवै बाघजी

आम फळै नीचौ नमै, अरड जावै अकास
दातार व्हेतो रीझ करै, सूमडियो सिट जाय
ओ जी ओ कलाळण मदवो आवै बाघजी
दुवारा रो छकियो आवै बाघजी

दिन मथारै आवियो छाजा ढळ री छाह
उठो बाघजी नीदाळवा, छोडो गळ री बाह
ओ जी ओ कलाळण मदवो आवै बाघजी
दुवारा रो छकियो आवै बाघजी

गरण गरण घट्टी फरै पाणी भरै पणिहार
उण वेळा रो बाघजी घूमै कलाळी रे वार

ओ जो ओ कलाळण मदवो आवै बाघजो
टोळे टोळे खाजरू भट्टियां भट्टियां चार
जिण दोळे भेळा हुवा आसो नै रिड़माल
ओ जो ओ कलाळण मदवो आवै बाघजो
दारूडी रो भीज्यो आवै बाघजी

मास बटक्के दारू गटक्कं, चुडले चूंप चटक्क
भारमली रा घाट पै बाघो लूंब लटक्क
ओ जी ओ कलाळण मदवो आवै बाघजी
दारूडो रो भीज्यो आवै बाघजी

कोई ज कंवे बाघजो ज्यारे लाल कसूमल पाग
चपला वरणो वाघजी ज्या लाल कसूमल पाग
ओ जी ओ कलाळण मदवो आवै बाघजी

जह तरवर तह मोरिया जह सरवर तह हस
जह बाघो तह भारमली जह दारू तह मस

सवेरे सवेरे धनाश्री राग मे बाघा का नाम गाकर लें। उसका नाम लेने से भूखे को भोजन मिलता है, गढपति राजा को गाव मिलते हैं।

कलालिन ! मदवा बाघा मदिरा मे मस्त हो रहा है। सवेरे ही सवेरे कही कजूस के दर्शन न हो जाये। उससे भेंट भी हो तो तीसरे पहर भले ही हो। दाता के पाव का जूता सूम के सिरमौर के बराबर होता है।

आम फलने पर नीचे झुकता है, अरड आकाश की ओर बढता है। पैसा आने पर दाता दातारी करता है सूम गढा करके घन रखता है।

बाघा मदिरा मे अलमस्त है।

सूरज आधे आकाश पर आ गया है, छज्जे की छाह ढलने लगी है। नीदाळु बाघा, उठ अब तो, गले मे डाली बाहो को छोडो।

बाघजी

परभाते धानी गाईजै, लीजै वाघ को नाम
भूखा नै भोजन मिले, गढपतिया नै गाम
ओ जी ओ कलाळण मदवो आवै बाघजी
दुबारा रो छकियो

सूम सवारं मिळजो मती, मिळजो तीजा पौर
दातारा रा खूसडा, सूमा रा सिरमोड
ओ जी ओ कलाळण मदवो आवै बाघजी
दुवारा रो छकियो आवै बाघजी

आम फळै नीचौ नमै, अरड जावै अकास
दातार व्हेतो रीझ करै, सूमडियो सिट जाय
ओ जी ओ कलाळण मदवो आवै बाघजी
दुबारा रो छकियो आवै बाघजी

दिन मथारै आवियो छाजा ढळ री छाह्
उठो बाघजी नीदाळवा, छोडो गळ रो बाह्
ओ जी ओ कलाळण मदवो आवै वाघजी
दुवारा रो छकियो आवै बाघजी

गरण गरण घट्टी फरै पाणी भरै पणिहार
उण वेळा रो बाघजी घूमै कलाळी रे बार

ओ जो ओ कलाळण मदवो आवै वाघजो
टोळे टोळे खाजरू भट्टिया भट्टिया चार
जिण दोळे भेळा हुवा आसो नै रिडमाल
ओ जो ओ कलाळण मदवो आवै वाघजो
दारूडी रो भीज्यो आवै वाघजो

मास बटक्के दारू गटक्कं, चुडलं चू प चटक्क
भारमली रा घाट पै वाघो लू ब लटक्क
ओ जी ओ कलाळण मदवो आवै वाघजी
दारूडो रो भीज्यो आवै वाघजी

कोई ज वंवे वाघजो ज्यारे लाल कसूमल पाग
चपला वरणो वाघजी ज्या लाल कसूमल पाग
ओ जी ओ कलाळण मदवो आवै वाघजी

जह तरवर तह मोरिया जह सरवर तह हस
जह वाघो तह भारमली जह दारू तह मस

सवेरे सवेरे धनाश्री राग मे वाघा का नाम गाकर लें। उसका नाम लेने से भूखे को भोजन मिलता है, गढ़पति राजा को गाव मिलते हैं।

कलालिन ! मदवा बाघा मदिरा मे मस्त हो रहा है। सवेरे ही सवेरे कही कजूस के दर्शन न हो जाये। उससे भेंट भी हो तो तीसरे पहर भले ही हा। दाता के पांव का जूता सूम के सिरमौर के बराबर होता है।

आम फलने पर नीचे भुकता है, अरड आकाश की ओर बढता है। पैसा आने पर दाता दातारी करता है सूम गढा करके धन रखता है।

वाघा मदिरा म अलमस्त है।

सूरज आधे आकाश पर आ गया है, छज्जे की छाह ढलने लगी है। नीदाळु वाघा, उठ अब तो, गले मे डाली बाहो को छोडो।

तड़के सवेरे जब घरो मे घरण धरण चक्की पीसने की आवाज आ रही है, पनिहारिनें पानी भरने जा रही हैं, उस समय बाधा कलाली के घर के बाहर मदिरा पीने खड़ा है।

मदिरा मे भीगा बाधा आ रहा है।

बकरे कट रहे हैं, शराब की भट्टिया निकल रहीं है उनके पास बाघा और उनका कवि मित्र आसा आ इकट्ठे हुए हैं।

मास के खरमजरो खाये जा रहे हैं। मदिरा की मनुहारें दी जा रही हैं। प्रेयसी भारमली रूपी घाट पर बाघा लट्टू है।

बाघा का चपे के फल जैसा रग है। लाल कसूमल पाग सिर पर बधी है।

वृक्ष होगे वहा मोर अवश्य होगे, सरोवर होगा वहा पर हसो का निवास होगा। जहा मदिरा होगी, वहा मांस होगा ही। ऐस ही जहा बाघा होगा, वहा भारमली का होना निश्चित है।

लोहारी

लोहारडी रो रणको झणको मैं सूण्यो रे लाल
ऊग्रेरी पीड्या वेलण सारसी रे
ऊग्रेरो जाघ्या देवळ थाम रे

लोहारडी रो रणको झणको म्हे सुण्यो रे लाल
लोहारडी रो रणको झणको रे लाल ठणको जेसलमेर
ऊंरे पखवाडे बीजळ खीवे रे लाल
ऊ ग्रेरो पेट पीपल रो पान रे

लोहारडी रो रणको रे झणको मारू देस मे रे लाल
हिवडो रे सचो ढाळियो रे लाल
ऊ ग्रेर दात दाडमरा बीज रे

लोहारडी रो रणको झणको मारू देस मे रे लाल ठणको जैसलमेर
ऊग्रेरी ग्राख्या रतनाळिया रे लाल
ऊग्रेरी नाक खाडा री धार रे

लोहारडी रो ठणको मारू देस मे रे लाल
ई रे भू वारा भमरा भमें रे लाल
ई रो ललवट ग्रागल चार रे

लोहारडी रो ठणको मारू देस मे रे लाल
ई री चोटी वासग नाग सी रे लाल
सीस नाळर रे मान रे
लोहारडी रो रणको रे भणको म्हे सुण्यो रे लाल

लोहारिन गढ से उतर कर ग्राई। लोहारिन की रुनक-भुनक मैंने सुनी।

उसकी पिंडली बेलन सरीखी है। जाघ देवालय के स्तम्भ जैसी।

लोहारिन के रूप की झंकार मैंने सुनी है। उसके ग्रग बिजली की भांति चमकते हैं। पेट तो पीपल का पत्ता है।

लोहारिन के रूप की शोहरत से मरुदेश झकृत हो रहा है।

सीना तो उसका साचे मे ढला है दात ग्रनार के बीज हैं।

लोहारिन के रूप की शोहरत से मरू देश झकृत हो उठा है, उसका ठाठ जैसलमेर तक प्रसिद्ध है।

लाल-लाल ग्राखें, खाडे की धार सी नाक। भौह भ्रमर के सदृश।

लोहारिन के सौन्दर्य की झन्कार पूरे मरू देश मे फैल रही है।

उसका ललाट चार ग्रगुल है, चोटी वासुक्निाग जैसी, नारियल-सा मस्तक।

लोहारिन की रुनक झुनक मैंने सुनी है।

प्यारा लागो म्हारा मजनूं

प्यारा लागो म्हारो मजनू रे
था विन घडियन ग्रावडे रे
मजनू दाखा रो बगलो छवाय
था री ने बैठक म्हारो खेलणो रे
प्यारा लागो म्हारा मजनू रे
था विन घडियन ग्रावडे रे
मजनू धोळे घोडे ग्रसवार
राती डाडी रो सोवन चावको रे
प्यारा लागो म्हारा मजनू रे
था विना घडियन ग्रावडे रे
प्यारा मजनूं फूला छाई सेज
कथ विना कैसी कामणी रे
प्यारा लागो म्हारा मजनू रे
था विन घडियन ग्रावडे रे
मजनू खायग्यो खजाना रो माल
भूठा दिलासा घण ने दे गयो रे
प्यारा लागो म्हारो मजनू रे
था विन घडियन ग्रावडे रे
मजनूं टूटी रे तबूरा री तात

लोहारिन गढ़ से उतर कर आई। लोहारिन की रुनक-भुनक मैंने सुनी।

उसकी पिंडली बेलन सरीखी है। जांघ देवालय के स्तम्भ जैसी।

लोहारिन के रूप की झकार मैंने सुनी है। उसके अंग बिजली की भांति चमकते हैं। पेट तो पीपल का पत्ता है।

लोहारिन के रूप की शोहरत से मरुदेश भकृत हो रहा है।

सीना तो उसका साचे मे ढला है दांत अनार के बीज हैं।

लोहारिन के रूप की शोहरत से मरू देश भकृत हो उठा है, उसका ठाठ जैसलमेर तक प्रसिद्ध है।

लाल लाल आखें, खाडे की धार सी नाक। भौंह भ्रमर के सदृश।

लोहारिन के सौन्दर्य की झन्कार पूरे मरू देश मे फैल रही है।

उसका ललाट चार अंगुल है, चोटी वासुकिनाग जैसी, नारियल-सा मस्तक।

लोहारिन की रुनक झुनक मैंने सुनी है।

प्यारा लागो म्हारा मजनूं

प्यारा लागो म्हारो मजनूं रे
थां विन घड़ियन आवडे रे
मजनूं दाखां रो वंगलो छवाय
थां री ने बैठक म्हारो खेलणो रे
प्यारा लागो म्हारा मजनूं रे
थां विन घडियन आवड़े रे
मजनूं धोळे घोड़े असवार
राती डाडी रो सोवन चावको रे
प्यारा लागो म्हारा मजनूं रे
थां बिना घड़ियन आवडे रे
प्यारा मजनूं फूलां छाई सेज
कथ विना कैसी कांमणी रे
प्यारा लागो म्हारा मजनूं रे
थां विन घड़ियन आवड़े रे
मजनूं खायग्यो खजांना रो माल
झूठा दिलासा घण ने दे गयो रे
प्यारा लागो म्हारो मजनूं रे
था विन घड़ियन आवड़े रे
मजनूं टूटी रे तंबूरा रो तांत

रणको फूटो वादल मेल मे रे
प्यारा लागो म्हारा मजनू
था बिन घडियन आवडे रे
मजनू टोपी परी रे उतार
पचरग लैर्‌या बाध लो रे
लाल लपेटा वाघ लो रे
प्यारा लागो म्हारा मजनू रे
था विन घडियन आवडे र
मजनू धूणी रे परी उठाव
काळा पडे धण रा गोखडा
प्यारा लागो म्हारा मजनू रे
था विन घडियन आवडे रे
मजनू थू छ दिल्ली रो दीवाण
म्हूँ छू नागर ब्रामणी
मजनू गुळ सू मीठी खाड
मिसरी सू मीठा धण रा सायबा र
प्यारा लागो म्हारा मजनू रे
था विन घडियन आवडे रे
प्यारा मजनू आप सरीखा सण
जुग मे आया ना मिले र
प्यारा लागो म्हारा मजनू र
था विन घडियन आवड र

मरे मजनू बडे प्यारे लगते हो मुझ तुम ? तुम विना एक घडी जी नहीं लगता।

मजनू बडे प्यारे लगते हो। एक घडी भी तुम्हारे विना जी नहीं लगता।

मजनूं ने दाखो की वेल का बंगला बना रखा है। तुम्हारी वहा बैठक है, मेरा वह खेलने का स्थान है।

सफेद घोडे पर मजनूं सवार है, हाथ मे लाल रग की डाडी का चाबुक है। मजनूं कितना प्यारा लगता है।

मजनूं, सेज फूलो से ढकी हुई है, प्रिय के बिना प्यारी की कैसी शोभा ? मजनूं बिना घडी भर जी नही लगता।

मजनू, मेरे खजाने का माल खा गये, सर्वस्व ले गये। झूठे दिलासा दे गये।

मजनू ने जोगी बन धूनी रमा ली। तबूरा बजाने लगा। बजाते-बजाते तंबुरे का तार टूट गया। स्वर-लहरी से बादल गूंज उठा।

मजनूं, कितने प्यारे लगते हो तुम? एक घडी तुम्हारे बिना जी नही लगता।

मजनूं, टोपी को उतार कर फेंक दे, पचरग पगडी बाध ले। लाल रग का लपेटा बाध।

मजनूं, अपनी धूनी उठाले यहाँ से। तेरी प्रिया के झरोखे काले पड जायेंगे।

मजनूं, कितने प्यारे लगते हो तुम। तुम्हार बिना जी एक घडी नही लगता।

मजनू, गुड से मीठी खाड होती है। खाड से मीठी मिश्री होती है मिश्री से भी मीठा प्रियतम होता है।

मजनूं, तुम्हारे जैसा प्रेमी ससार मे खोजने पर भी नही मिलेगा।

मजनूं, तुम मुझे बडे मीठे लगते हो। तुम्हारे बिना एक घडी जी नही लगता।

मजनूं, तुम तो दिल्ली के दीवान हो। मैं नागर ब्राह्मणी ठहरी।

कीम कर जाऊं

कीम कर जावू रे परदेस व्हाला जी
व्हालो लागे राणाजी रो देसडो रे लोल

ऊंचा राणाजी थारा गोखडा रे लोल
ए नीची पीछोला थारी पाळ व्हालाजी
व्हालो लागे राणाजी रो देसडो रे लोल

सरवर पाणी मैं गई रे लोल
ए भीजे म्हारा साळुडा री कोर व्हालाजी
व्हालो लागे राणाजी रो देसडो रे लोल

रमझम बिछिया वाजणा रे लोल
ए निरखे म्हारो पातळियो स्याम व्हालाजी
व्हालो लागे राणाजी रो देसडो रे लोल

बादळ छाया देस मे रे लोल
ए चमक चमक झडलाय व्हालाजी
व्हालो लागे राणाजी रो देसडो रे लोल

कीम कर जावू रे परदेस व्हालाजी
व्हालो लागे राणाजी रो देसडो रे लोल

परदेश कैसे जाऊं ? मुझे राणा जी का देश प्यारा लगता है।

ऊपर राणाजी के गोखड़े हैं। नीचे पीछोला सरोवर है।

मुझे राणाजी का देश सुन्दर लगता है।

पीछोला सरोवर पर जल भरने गई। मेरा दुपट्टा भीग गया।

मुझे राणाजी का देश अच्छा लगता है।

झुनक झुनक मेरे बिछिया बज रहे हैं। मेरा पातलिया श्याम निरख रहा है।

देश मे बादल छा रहे हैं। दामिनी दमक रही है। वर्षा की झड़ी लगेगी।

ऐसे देश को छोड़कर परदेश कैसे जाऊं।

मुझे राणाजी का देश प्रिय है।

नेड़ी तो नेड़ी करजो पिया चाकरी

नेडी तो नेडी करजो पिया चाकरी जी,
साभ पड़्यां घर आय जावो गोरी रा वालमा जी

कुणी तो चाळा थाने चाळिया जो कुणी थाने दीधी सीख
अब घर आय जावो गोरी रा वालमा जी

साथीडा चाळा गोरी चाळिया रावजी दीधो म्हाने सीख
अब घर आय जावो गोरी रा वालमा जी

साथीडा पै पडजो ढोला वीजळी जी रावजी ने खाज्यो काळो साप
अब घर आय जावो आसा थारी लग रही जी

कुणी दिसा चाल्या पिया चाकरी जा कुणी दिसा जोवु थारी वाट
अव घर आय जावो गोरी रा वालमा जी

घराऊ चाल्या गोरी चाकरी जी लकाऊ जोवो म्हारी वाट
अव घर आय जावो फूल गुलाव रा जी

जावो ता राधू पिया खीचडी जी रैवो तो राधू उजळा भात
अव घर आय जावो गोरी रा वालमा जी,

जावो तो ओढू पिया पोमचो जी रैवो तो ओढू दखणी चोर
अव घर आय जावो गोरी रा वालमा जी

देख चलाला गोरी पोमचो जी निरख चलाला दखणी चीर
अव घर आय जावो मिरगानैणी रा वालमा जी

३

जावो तो ढाळुं पिया ढोलियो जी रैवो तो घालूं हिंगळाट
अव घर आय जावो गोरी रा वालमा जी

पोढ चलाला प्यारी ढोलियो जी माण चलाला हिंगळाट
अव घर आय जावो बरखा लूंव रही जो

छपर पुराणा पिया पड गया जी तिडकण लागा वोदा वास
अव घर आय जावो गोरी रा सायबा जी

बादळ मे चमकैं ढोला वीजळी जी म्हेला मे डरपैं घर री नार
अव घर आय जावो बरखा लू व रही जी

गोरी तो भीजे गोखडे जी आलीजो भीजे फोजा माय
अव घर आय जावो फूल गुलाब रा जी

कुवो व्हे तो ढोला थागलूं जी समदर थाग्यो नी जाय
अव घर आय जावो मिरगानैणी रा वालमा जी

टाबर व्हे तो पिया राखलूं जी जोवन राख्यो नी जाय
अब घर आय जावो फूल गुलाब रा जो

कागद व्हे तो पिया बाचलूं जी करम नी बाच्यो जाय
अव सुध लेवो गोरी रा सायवा जी

अस्सी ने टका री पिया चाकरी जी लाख मोहर री नार
अव घर आय जावो मिरगानैणी रा वालमा जी

घोडो तो भीजे पिया नोलखो जी भीजे वनाती जीण
अव घर आय जावो बरखा रुत लू व रही जी

दौरी तो दिखण री ढोला चाकरी जी दौरो नरवदा रो तीर
अव घर आय जावो गोरी रा बालमा जी

पलग पुराणों भवरजी हो गयो जी
कोई वडकण लाग्या ए जी ए साल
अव घर आओ गोरी रा सायवा जी

चाकरी करनी है तो घर के पास ही करो। साझ होते ही घर आ जाओ।

तुम्हे किसने सुझाया है चाकरी पर जाने को। किसने तुम्हे इजाजत दे दी जाने को।

मेरे साथियो ने सुझाया। यहा के रावजी ने इजाजत दी।

साथियों पर बिजली गिरे। रावजी को नाग डसे।

किस दिशा की ओर आप प्रस्थान कर रहे हैं। कौनसी दिशा से लौट कर आयेंगे।

उत्तर दिशा की ओर जा रहे हैं। दक्षिण दिशा से लौटेंगे।

आप जा रहे हो तो खिचडी बनाऊ। रुकते हो तो उजला भात पकाऊ।
खिचडी भी खालूगा भात भी चख कर जाऊ गा।
जा रहे हो तो पोमचा ओढु। रुकते हो तो दक्षिण का चीर पहनू।

गोरी, पामचा ओढे भी देखू गा और दक्षिणी चीर भी निरखता जाऊगा।

जारहे हो तो पलग डालू। रुकते हो तो हिंगळाट (झूलता पलग) डालू।
प्यारी, पलग पर भी सोयेंगे। हिंगळाट का भी आनन्द लेकर जाऊगा।

परदेश चले गये चाकरी पर। लबा समय हो गया। छप्पर पुराना पड गया। बास पुराने होकर तिडकने लग गये। अब तो घर आ जाओ।

बादल मे बिजली चमक रही है। घर म तुम्हारी प्रिया अकेली डर रही है। अब घर आ जाओ। वर्षा की की झडी लग रही है।

तुम कही सेना मे भीग रहे होगे। मैं गोखे मे भीग रही हू। मेरे गुलाब के फूल घर आ जाओ।
प्रियतम, कुआ हो तो उसकी गहराई नाप लू। समुद्र की गहराई तो नापी नही जाती। मृगनयनी के बालम अब घर आ जाओ।

बच्चा हो तो सभाल लू। यौवन को कैसे सभालू। गुलाब के फूल, आ जाओ।
पत्र हो तो पढ लू। किस्मत तो पढी नही जाती। अब तो गोरी की सुधि लो।

अस्सी टके की चाकरी के लिए लाख मोहर की पत्नी मे वियोग भोग रहे हो। मृगनयनी के राजा, घर आ जाओ।

तुम्हारा नवलखा घोडा भीग रहा होगा, कीमती बनात का बना जीन भी भीग रहा होगा। वर्षा रितु यौवन पर है। घर आ जाओ।

ढोला, दक्षिण की चाकरी बडी कठिन है। नर्मदा का पानी भी कठोर है। गोरी के वालमा आ जाओ।

अपना पलग भी पुराना हो गया उसकी चौखट मे भी दरारें आने लगी है। घर आओ ना।

धूंसो

धूंसो वाजे रे महाराजा अभेसिंघ रो (वाह–वाह) धूंसो वाजे रे।
जोधाणे रो राजा कवर कन्हैया, हुक्म दियो रे खेलो होळी
वाह वाह घूसो वाजे रे महाराजा थारी मारवाड मे धूंसो वाजेरे
जीवणो मिसल माहि चापा कूंपा, ऐ ओपे मारू रण थाळ
डावो रे मिसल ऊदा मेडतिया, जोधा है सूरा री ढाल
आउवो आसोप तो माणक मूंगा, ज्यूं सोहे रतनां री माळ
रीया रायपुर खेरवो, दीपे ज्यूं मारू करमाळ।
जमल हूओ मुलक मे चावो, अमरो हिन्दवा लज रखवाळ।
मुकन जैदेव गोरा जसधारी धिन दुरगो राखियो अजमाल
जठी रे जावे जठी फते कर आवे, बाकी है फौज राठौडा री।
बाका बाका पेच राठौडा ने सोहे, पिचरग डुढाड भूपाळ।
कडा ने किलगी राठौडा ने फावे, मोरिया री पाख कछावां लाल।
लाख लाख वारे तोप रहकळा, अणगिण ऊंट रसाला लार।

मारवाड के राजा अभेयसिंहजी का धूसा (युद्ध का नकारा) बज रहा है। जोधाणे का राजा कुंवर कन्हैया ने हुक्म दिया है, "होली खेलो।" वाह वाह। महाराजा। आपकी मारवाड मे आपका धूसा विजय का डका बज रहा है।

मारवाड की सेना मे दाहिनी तरफ कूपावत और चापावत रण बाकुरे शोभित है। सेना के बायें भाग मे मेडतिया और ऊदावत राठौड है जो शूरवीर और ढाल की भाति राज्य की रक्षा करने वाले है।

आऊवा और आसोप के ठाकुर वीरो की रत्न माला मे माणक और मूगे की भाँति मूल्यवान है।

रींया, रायपुर और खेरवा मरूभूमि की चमकती हुई तलवार जैसे है।

जयमल्ल राठौड तो जगतप्रसिद्ध योद्धा हुए है। मुकनसिंह, जयदेव, गोरा उज्जवल यश धारी हुए है। धन्य हे दुर्गादास राठौड, जिन्होंने राजा अभयसिंह की औरगजेब से रक्षा की, दिल्ली की सल्तन्त से टक्कर ली।

जिधर यह रण बाके राठौडो की सेना जाती है वहाँ विजय के झण्डे फहरा कर आती है।

राठौडो को बाके बाके पेचों की पगडी शोभा देती है।

ढूढाड के (जयपुर) सरदारा को पचरगी पगडिया शोभित करती हैं।

कडे और कलगी राठौडो को भले लगते हैं।

मोरपख कछवाहो को सुहावने लगते हैं।

इनकी फौज मे लाखो छोटी बडा ताप हैं।

अनगिनत ऊट और रिसालो से राठौडो की सेना सुसज्जित है।

I

---

* यह गीत मारवाड राज्य का राजकीय गीत रहा है।

जयमल्ल अमरसिंह, मुकन, जयदेव, गोरा, दुर्गादास मारवाड के प्रसिद्ध योद्धा हुए हैं। कुपावत, जोधा, चांपावत, ऊदावत, मेडतिया आदि राठौड वश की शाखायें हैं। आउवा, आसोप, रींया, खरवा, रायपुर, राठौड सामन्तों की जागीर के गांव हैं।

जांगड़ो दुर्गादास जी को

जूनी दिल्लडी तप साहजादा, बका जोध विलू विया
ग्रोरगसाह धरै क्यूं जावै, राह दुरगे रुधा । जूनी ।

झूलर झूर मिरगानैणी, सारिया काजळ टीकी
पाँच हजार मुगल पाडिया, दुर्गे ग्रसावत राठौड । जूनी ।

को काछबसुत वात, कमधज दो ग्रडिया कठै
सूनी करी दिन सात, दुर्गे ग्रसावत दिल्लडी । जूनी ।

दुरगो ग्रासावत रो, नित उठ बागा जाय
ग्रमल ग्रौरग रा उतरे, दिल्लो धडका खाय । जूनी ।

ग्रौरग ग्रा जाणीह, माडाणी मुरधर मिलै
राणी हाडाणीह, पाँणी दुरगो पावियो ।।
जूनी दिल्लडी

जसवत कहियो जोय, घर रखवाळो गूदडो
साची कोधी सोय, ग्राछी ग्रासकरणवत ।।
जूनी दिल्लडी तपे

जणणी जण ग्रहडा ज्ण, जहडा दुरगादास
मार मडासो थामियो, विण थभे ग्राकास ।।
जूनो दिल्लडी

वारहमासा वीह, पाडव ही रहिया प्रछन्न
दुरगो हेको दीह, ग्राछत रहयो न ग्रासवत ।।
जूनी दिल्लडी

दिल्ली पर शाहजादो का शक्तिशाली शासन है। परन्तु औरगजेब का मार्ग दुर्गादास ने रोक रखा हैं।

आसकरण के पुत्र दुर्गादास राठौड ने पाच हजार मुगलो की सेना को धराशायी कर दिया है। उनकी मृगनयानिया जो काजल बिन्दी से सुश्रृंगारित रहती थी, अब आसूं वहा रही है।

वीर वर दुर्गादास ने ऐसा युद्ध किया कि सात दिन तक दिल्ली सूनी पड़ी रही।

आसकरण के पुत्र दुर्गादास के भय से औरगजेब का नशा उतर जाता है। दिल्ली के लोगो के दिल धडकने लगते हैं।

औरगजेब ने सोचा था, मारवाड पर मैं आसानी से कब्जा कर लूंगा। परन्तु हाडी रानी ने और दुगादास ने औरगजेब के सारे मनसूबे ढेर कर दिये।

मारवाड के राजा जसवन्तसिंह ने बालक दुर्गादास की ठीक पहचान कर कहा था, एक दिन यह बालक मेरे घर की रक्षा करने वाला होगा। उस बात को दुर्गादास ने सच्चा साबित कर दिया।

माता, तू जन्म दे तो दुर्गादास जैसा वीर उत्पन्न कर जिसने बिना खंभा लगाये आकाश को अपने मस्तक पर झेल लिया।

पूरे बारह महिने पाडवो को छिपकर रहना पडा। परन्तु दुर्गादास वर्षों तक औरगजेब से भिडता हुआ, एक दिन भी छिप कर नहीं रहा। खुल कर लडा।

भाखर रा भोमिया

सूवरिया रे धीरो मधरो चाल
चाल रे भाखर रा भोमिया राज
सूवरिया धीरो मधरो चाल

एरण खटको म्हे सुण्यो लोहो घडे लुहार
सूरा सारू सेलडो भू डण सारू भाल
सूवरिया रे धीरो मधरो चाल
चाल रे भाखर रा भोमिया राज
सूवरिया धीरो मधरो चाल

सूरो सूतो भाड मे भू डण पैरा देय
जाग निंदाळु सायवा कटक हिलोळा लेय
सूवरिया रे धीरो मधरो चाल
चाल रे भाखर रा भोमिया राज
सूवरिया धीरो मधरो चाल

पाळा मारू पाचसो पाखरिया हजार
गयन्द गुडाद्रू टूड सू म्हू भू डण भरतार
सूवरिया रे धीरो मधरो चाल
चाल रे भाखर रा भोमिया राज
सूवरिया धीरो मधरो चाल

सूरो रडकलो चढ गयो भू डए भागो जाय
भाई वो जो बावडो माल पुराणो जाय
सूवरिया रे धीरो मधरो चाल
चाल रे भाखर रा भोमिया राज
सूवरिया धीरो मघरो चाल

फोजा दळ ने फेरने जीतरा ऊभो जग
चपा वरणी दातळी भरी कसूमल रग
सूवरिया रे घीरो मधरो चाल
चाल रे भाखर रा भोमिया राज
सूवरिया धीरो मघरो चाल

काटी खाणा सूवरिया मु ह सभाळ ने वोल
ऐसी धमोड़ू थाप री धूळ भेळो व्हे जाय
सूवरिया रे धीरो मधरो चाल
चाल रे भाखर रा भोमिया राज
सूवरिया धीरो मघरो चाल

ढाढी खाणा नारडा मु ह सभाळ ने वोल
ऐसी धमोडू टू ड री धूळ भेळो व्हे जाय
सूवरिया रे धीमो मधरो चाल
चाल रे भाखर रा भोमिया राज
सूवरिया धीरो मघरो चाल

नार सूर भेळा हुवा मिलग्या जोवा जग
सूरे वाही दातळी कीधा कसूमल रग
सूवरिया रे धीरो मधरो चाल
चाल रे भाखर रा भोमिया राज
सूवरिया धीरो मधरो चाल

भाखर रा भोमिया

सूवरिया रे धीरो मधरो चाल
चाल रे भाखर रा भोमिया राज
सूवरिया धीरो मधरो चाल

एरण खटको म्हे सुण्यो लोहा घडे लुहार
सूरा सारू सेलडो भू डण सारू भाल
सूवरिया रे धीरो मधरो चाल
चाल रे भाखर रा भोमिया राज
सूवरिया धीरो मधरो चाल

सूरो सूतो भाड मे भू डण पैरा देय
जाग निंदाळु सायबा कटक हिलोळा लेय
सूवरिया रे धीरो मधरो चाल
चाल रे भाखर रा भोमिया राज
सूवरिया धीरो मधरो चाल

पाळा मारू पाचसो पाखरिया हजार
गयन्द गुडादू टूड सू म्हू भू डण भरतार
सूवरिया रे धीरो मधरो चाल
चाल रे भाखर रा भोमिया राज
सूवरिया धीरो मधरो चाल

सूरो रडकलो चढ गयो भू डण भागो जाय
भाई वो जो दावडो माल पुराणो जाय
सूवरिया रे धीरो मधरो चाल
चाल रे भाखर रा भोमिया राज
सूवरिया धीरो मधरो चाल

फोजा दळ ने फेरने जीतण ऊभो जग
चपा वरणी दातळी भरी कसूमल रग
सूवरिया रे धीरो मधरो चाल
चाल रे भाखर रा भोमिया राज
सूवरिया धीरो मधरो चाल

काटी खाणा सूवरिया मु ह सभाळ ने बोल
ऐसी धमोडू थाप री धूळ भेळो व्हे जाय
सूवरिया रे धीरो मधरो चाल
चाल रे भाखर रा भोमिया राज
सूवरिया धीरो मधरो चाल

ढाढी खाणा नारडा मु ह सभाळ ने बोल
ऐसी धमोडू टू ड री धूळ भेळो व्हे जाय
सूवरिया रे धीमो मधरो चाल
चाल रे भाखर रा भोमिया राज
सूवरिया धीरो मधरो चाल

नार सूर भेळा हुवा मिलग्या जोधा जग
सूरे वाही दातळी कीधा कसूमल रग
सूवरिया रे धीरो मधरो चाल
चाल रे भाखर रा भोमिया राज
सूवरिया धीरो मधरो चाल

पहाडियो के राजा शूकर, धीरे धीरे चल ।

लोहार के यहा से लोहा घडने की आवाज सुनाई दे रही है। शूकर की शिकार के लिये सेल और शूकरी की शिकार के लिये भाले घडे जा रहे हैं। वराह घनी झाडियो मे सो रहा है और भू डरण पहरा दे रही है। शिकारियो का दल चढकर आया देख, शूकरी कहती है, मेरे नींद्रालु पति, जाग । फौजे चढ कर आ गई है ।

शूकर बोला, पैदल पाच सौ को और हजार घुडसवारो को मार डालू । हाथियो को अपनी टू ड से गिरादू । आखिर मैं तुम्हारे जैसी वीर भू डरण का पति हू । शिकारियो के दल को चीरता हुआ शूकर पहाडी पर चढ गया । शूकरी भी निकल गई ।

शिकारियो ने आवाज लगाई भाइयो दौडो, अपनी शिकार जा रही है । शिकारियो के दल को हरा कर रण विजयी शूकर खडा है । उसकी चम्पे के फूल जैसी धवल दतुली खून से कसूमल लाल रग की हो गई है । फौजें लौटा कर शूकर पानी पीने गया । वहा शेर मिल गया, उनके आपस मे सघर्ष हो गया ।

शेर ने कहा, काटी खाने वाले शूकर, जबान सभाल कर बात कर । ऐसी थाप की मारू गा कि धूल मे मिल जायेगा । शूकर ने उत्तर दिया, अरे ओ पशु भक्षी नाहर, जबान सभाल कर बोल । एसी टू ड की मारू कि यहा ढेर हो जायेगा ।

उन दोनो मे जग छिड गया । शूकर ने अपनी दतुली से शेर को चीर डाला । उसकी दतुली रक्त से रग गई ।

सुपनो

सुपनो तो आयो सरब सुलखणो जो म्हारा राज
अगूठडो तो मोडयो गोरी रे पाव रो जी
सुपने मे देख्या भवरजी ने आवता जी
कोई माथै पचरग ए पाग
काधे सबज ए जी ए रूमाल
हाथ मे सीसो प्यालो प्रेम रो जी
आगण मोचड्या भवरजी री मचकी जी
कोई थेळी ठमक्यो ए जी ए सेल
गोरी रे आगण खुडको कुण कियो जी
लीलडो बाधी भवरजी ठाण मे जी
कोई सेल धर्‌यो साळ
आप पधार्‌या मारूजी म्हल मे जी
टग टग म्हेला भवरजो चढ गया जी
कोई खोल्या घण रा बजड किवाड
साक्ळ खोली बीजळसार री जो
हाथ पकड भवर बैठी करी जी
कोई बूझो म्हारे मनडे री बात
अखिया निमाणी पापण खुल गई जी
सुपना रे वैरी थने मार दू जो
कोई थारी कतळ ए जी ए कराय

सूतो नै ठगली भंवरजी री गोरडी जी
क्याने ए गोरी धरण म्हाने मरावो जी
कोई क्यूं म्हारो कतळ ए जी ए कराय
म्हे छा सुपना ढळती रैण रा जी
मृपना रा वैरी थें ग्रसी करी जी
कोई जैसी करे ना ए जी ए काय
धोखे सं छळ ली भवरजी री गोरडी जी
म्हे छो सुपना सरव सुलखणा जी
कोई विछड्या ने देवा ए जी ए मिलाय
म्हे छा सुपना ढळती रैण रा जी

मुझे वडा सुन्दर सपना ग्राया ।

उन्होने ग्राकर मेरे पाव का ग्रगूठा मोड कर जगाया । मैंने सपने मे मवर को ग्राते देखा । पचरग पाग बाध रखी थी । हाथ मे सब्ज रग का(हरिया) रूमाल शोभा दे रहा था । हाथ में प्रेम का प्याला लिये ।

ग्रागन म उनके पाव की मोजडिया चरमराई, देहलीज पर उनका भाले के टकराने की ग्रावाज ग्राई ।

ग्ररे मेरे ग्रागन मे यह ग्रावाज किसकी ग्राई । मवरजी ने ग्रपनी नीली घोडी को ठाण म बाधा । भाले को ग्रपने कमरे मे रखा । ग्राप महल पर चढे । टिक टिक करते मेरे महल म चढ ग्राये । किवाड खोला, बीजलसार लोहे की बनी साकल खोली । हाथ पकड कर मवरजी ने मुझे उठाया । मेरे मन की वात बूझी । उसी समय पापिन ग्राखें खुल गई ।

वैरी सपने, तुझे मार दू । तेरा कत्ल करा दूँ । तूने मुझे नीद मे ठग लिया ।

गोरी, क्या मुझे मारना चाहती हो ? क्यो मेरा कत्ल कराती हो । हम तो ढलती रात के स्वप्न है ।

मेरे शत्रु स्वप्न, तुमने मरे साथ चोट की वैसी किसी ने नही की । सोई हुई को छल लिया ।

गोरी, हम तो ढलती रात के स्वप्न है । बिछुडे लोगो का मिलाप करा देते हैं । स्वप्न मे ही सही, क्षणिक सुख तो देही देते हैं ।

मनड़ा मोती

म्हारा मनडा मोती हालो तो ले चालू म्हारे देस

मोती फूटयो बिधता, मन फाटयो इक बोल
मोती फेर मगावस्या, मन नही मिलसी मोल । म्हारा ।

मन मोती गहणे मेल्यो, मीत तुमारे पास
प्रेम ब्याज वढण लगो, नही छूटण की आस । म्हारा ।

देस विदेसा म्हें फिरी, मोती मिलिया अनेक
मनडा मोती ना मिल्या, यू लाखा मे अेक । म्हारा ।

छेद छिदयो परहथ बिंधयो, छोड कुटंब की लाज
अतरा दुख म्ह सहया, या अधरा के काज । म्हारा ।

देस विदेसा म्ह फिरू जो, मोती हिवडे माय
आसूडो ढळ जाय तो जी, मोतीडो मिल जाय । म्हारा ।

म्हारा मनडा मोती हालो तो ले चालू म्हारे देस

मेरे मन के मोती चलो मेरे देश ले चलता हू ।

मानी बिधते समय टूट गया । मन भी एक बोल से टूट गया ।

मोती तो और मगा लिये जायेंगे । मन तो मोल नही मिलेगा ।

सूती नै ठगली भंवरजी री गोरड़ी जी
क्याने ए गोरी धरण म्हाने मरावो जी
कोई क्यूं म्हारो कतळ ए जी ए कराय
म्हे छा सुपना ढळती रैण रा जी
सुपना रा बैरी थें असी करी जी
कोई जैसी करे ना ए जी ए काय
धोखे सं छळ लो भवरजी री गोरडी जी
म्हे छो सुपना सरब सुलखणा जी
कोई विछड्या ने देवा ए जी ए मिलाय
म्हे छा सुपना ढळती रैण रा जी

मुझे बड़ा सुन्दर सपना आया।

उन्होने आकर मेरे पाव का अगूठा मोड कर जगाया। मैंने सपने मे भवर को आते देखा। पचरग पाग बाध रखी थी। हाथ म सब्ज रग का(हरिया) रूमाल शोभा दे रहा था। हाथ मे प्रेम का प्याला लिये।

आगन मे उनके पाव की मोजडिया चरमराई, देहलीज पर उनका भाले के टकराने की आवाज आई।

अरे मेरे आगन मे यह आवाज किसकी आई। भवरजी ने अपनी नीली घोडी को ठाण मे बाधा। भाले को अपने कमरे मे रखा। आप महल पर चढे। टिक टिक करते मेरे महल मे चढ आये। किवाड खोला, बीजलसार लोहे की बनी साकल खोली। हाथ पकड कर भवरजी ने मुझे उठाया। मेरे मन की बात बूझी। उसी समय पापिन आखें खुल गई।

वैरी सपने, तुझे मार दू। तेरा कत्ल करा दूं। तूने मुझे नीद मे ठग लिया।

गोरी, क्यो मुझे मारना चाहती हो? क्यो मेरा कत्ल कराती हो। हम तो ढलती रात के स्वप्न है।

मरे शत्रु स्वप्न, तुमने मेरे साथ चोट की वैसी किसी ने नही की। सोई हुई को छल लिया।

गोरी, हम तो ढलती रात के स्वप्न है। बिछुडे लोगो का मिलाप करा देते हैं। स्वप्न मे ही सही, क्षणिक सुख तो देही देते हैं।

मनड़ा मोती

म्हारा मनडा मोती हालो तो ले चालू म्हारे देस

मोती फूटयो बिधता, मन फाटयो इक बोल
मोती फेर मगावस्यां, मन नही मिलसी मोल । म्हारा ।

मन मोती गहणे मेल्यो, मींत तुमारे पास
प्रेम ब्याज वढण लगो, नही छूटण की आस । म्हारा ।

देस विदेसा म्हैं फिरी, मोती मिलिया अनेक
मनडा मोती ना मिल्या, थूं लाखा मे अेक । म्हारा ।

छेद छिवयो परहथ विंवयो, छोड कुटंब की लाज
अतरा दुख म्हे सहया, या अधरा के काज । म्हारा ।

देस विदेसा म्हैं फिरू जो, मोती हिवडे माय
आसूडो ढळ जाय तो जी, मोतीडो मिल जाय । म्हारा ।

म्हारा मनडा मोती हालो तो ले चालू म्हारे देस

मेरे मन के मोती चलो मेरे देश ले चलता हू ।

मोती बिंधते समय टूट गया । मन भी एक बोल से टूट गया ।

मोती तो और मगा लिये जायेंगे । मन तो मोल नहीं मिलेगा ।

मित्र, मन रूपी मोती को मैंने तुम्हारे पास गिरवी रखा है।

प्रेम ब्याज बढ़ता जा रहा है। अब छूटने की कोई आशा नहीं।

देश विदेश खूब घूमी मोती की तलाश मे। अनेक मोती मिले भी सही।

मेरे मन का मोती कहीं नही मिला लाखो मे जाकर तुम एक मिले हो।

मैंने अपने कलेजे को छिदाया, पराये हाथो बिका।

कुटुंब की लज्जा भी त्यागी। यह सब किया ईन अधरो का रस लेने।

मोती की तलाश मे देश विदेश घूम रही हो। परन्तु मोती तो हृदय के भीतर है। यदि आमूडा ढल जायेगा तो मोती भी मिल जायगा।

मेरे मन के मोती, चलो मेरे देश चलो।

कुरजा

सूती छी सुख नीद मे सुपनो भयो ए जजाळ
भवर सुपने वतळाईजो
थनें सुपना मारस्यू रे कै कतल कराय
सुपना वैरी भूठो क्यू आयो रे
क्याने गोरी म्हाने मारस्यो ए क्यू म्हारो कतळ कराय
गोरी थारे पीव ने मिलाया ए
आज सवारी उठिया जी गई मायड के पास
सुए मांयड थाने बात कहू ए कहता आवै लाज
व्याई छू क कुवारी ए जै को अरथ बताय
मांयड म्हाने साच बता दे ए
ब्याय चढया था पीळ पोतड ए हो गई जोध जुवान
नळ राजा को डीकरो ए परए दिसावर जाय
बाई थांने साच सुणावा ए
आज सवारी उठिया जो गई कुरजा के पास
थू छै धरम की भायली ए एक सदेस पु चाय
पत्री लिख दू प्रेम की ए दीज्यो पियाजी ने जाय
कुरजा म्हारे पीव ने मिला दे ए
माणस होय तो मुख कहै जी म्हासू बोल्यो ए न जाय
भायली म्हारा पाखा पर लिख दे ए
वी लसकरिया ने जाय कहो ए क्यू परणी छो मोय

ओ तो परण पिराछत क्यू लियो ए
रह्यो क्यू ना अखन कुंवार
कुंवारी ने वर तो घणा छा जो
काजळ टीकी को थारी धण पण लियो जी
बिंदली को सरव सुहाग
गोटे मिसरू थारी धण पण लियो जी
चुनडी को सरव सुहाग
दूध दही थारी धण पण लियो जो
अन्न बिना रह्यो न जाय
कुरजा म्हारी भवर मिला दे ए
आज सवारी उडिया जी गई गई कोस पचास
डेरो तो हरिया बागा मे दीनो जी डाल
ढोलो मारूणी पासा ढाळिया जो कुरजा रही कुरळाय
हाथ रा पासा हाथ रह्या वाजो रह्यो पासा माय
कुण जिनावर बोलिया जी जं को करो विचार
साथी म्हाने भेद बतावो ए
हाथा का पासा डाल दो जी बाजी राळो ना दोय चार
घणाई जिनावर बोले देस का जी
क्या को करो विचार भवर थे तो पासा खेलो जो
वो गयो ढोलो वो गयो गयो बागां के माय
हूं छ चपा बाग मे जो बैठी अत्रीया री डाळ
कुरजा कुरळावण लागी जी
कुणियारा भेज्या अठै आईया जो कुणियारा कागद हाथ
कुरजा म्हाने साच बताओ ए
थारी धण रा भेज्या अठ आइया जी
थारी धण रा कागद हाथ
भवर म्हारी पाखा वांचलो जी

आज अपूठा सोय रह्या जी रह्यो क अदेसा छाय
कं चित्त आयो थारे देसडो जी
कै चित्त आया थारे माय ने बाप
भवर दिलगीरी क्यू लावो जी

ना चित्त आयो देसडो जी ना चित्त आया माय ने बाप
एक चित्त आई म्हारी गोरडी जी वा घरा घरा ए उदास
भायली म्हाने गोरी चित्त आई जी
वो गयो ढोलो वो गयो गयो जी करवा के पास
म्हारो गोरो ने मिलाय दो जी

कै गळ घालू घूघरा रे कै गळ घालू रेसम डोर
तू करवा म्हारे बाप को रे लगडो होकर बैठ
छिटक पडैगो तेरो पेट करवा रे बैरो सागे मत जाई रे
पारगी तो पीवा ठडै हौद को ए चरस्या म्हे नागर वेल
जास्या म्हे ढोला के सासरै ए मन मे घरगी ए उमेद
गोरी ए म्हे तो सागे जास्या ए

माळोडा की डोकरी ये थू छै धरम को वेन
थारे कन कर ढोलो नीसर्यो ए किसो ए उमारै जाय
वाई म्हाने भेद बतादे ए

म्हारे कने कर ढोलो नीसर्यो ए जारगे ल्होडी परगन जाय
वाई थाने साच सुणावा ए

वेरा की बड बोरडी ए थू छै धरम को बेन
थारे कनै कर ढोला नीसर्यो ए गळ्यो क्यू नो जिलमाय
भायली म्हाने पियो चित्त आवै ए

तोड्या छा चाख्या नही ए लोना गोजा मे घाल
वाई थाने साच सुणावा ए
ढोलो पु चायर ओठी वावडी जी जै को आवै रोज

चूल्हे पाणी गंर लियो जी धूंवा के मिस रोय
भवर म्हाने छोड़ सिधाया जो
करवा चाल उतावळो रे दिन थोडो घर दूर
दो गोर्‌या रो सायवो रे रह्‌या मैं अकेलो आज
करवा म्हारी गोरी सं मिला दे रे
दातण करो कुवा वावडी जी भल भल करो असनान
चाद उग्या सूरज छिप्या जो देस्या थारी मारूणी मिलाय
भवर थानें वेग पुंचावा जी

मारूणी गहरी नीद मे सो रही है। उसे सपना आया। ढोला ने उससे सपने मे बातें की।

सपना तुझे मरा दूंगी, कत्ल करवा दू गी। वैरी तू झूठा क्यो आया ?

गोरी, मुझे क्यो मारती हो ? मैंने तो तुम्हे साजन से मिलाया है।

सवेरे उठते ही मारूणी मा के पास गई। मा तुम से एक बात कहू पर कहते हुए लाज लगती है। बता मेरा ब्याह हो गया या कवारी हू ? मा, मुझे सच सच बता दे।

मा ने बताया, बेटी तेरा विवाह तो तभी हो गया था। जब तू पोतडो मे ही थी। नल राजा के बेटे के साथ तेरा विवाह हो चुका है।

मारूणी तो सीधी कुरज पक्षी के पास गई। कुरज तुम तो मेरी धर्म की बहिन हो। मेरा एक सन्देश पहुचा दो। प्रेमपत्री प्रियतम तक पहुचा दो। कुरज बोलो, हम मनुष्य तो है नही जो मुख से बोलें। तुम मेरे पखो पर सदेश लिख दो। मैं जाकर बता दू गी।

मारूणी ने कहा, तुम ज कर उस लसकरिया से कहना कि तुमने विवाह कर यह पाप क्यो किया ? नहीं ले जाते हो तो मुझे क्वारी ही रहने देते। क्वारी को कोई और वर मिल जाता।

तुम ढोला से कहना, तुम्हारी मारूणी ने काजल आजना छोड दिया है। सुहाग चिन्ह होने से बिन्दी तो लगाती ही है। उसने गोटे किनारी के वस्त्र त्याग दिये हैं, हा सुहाग चिन्ह होने से चू दडी तो पहिनती ही है। तुम्हारे विरह मे दूध दही खाना छोड दिया है, अन्न केवल जीवित रहने को ही खाती है।

कुरज उड कर गई और बाग मे डेरा डाला।

ढोला अपनी पत्नी के साथ चौपड खेल रहा था। कुरज की वोली सुन हाथ के पासे हाथ में रह गये।

ये कौन पक्षी बोल रहा है ? उसके बोलने मे कोई भेद है।

पत्नी बोली, तुम पासे डालो, किस विचार मे पड गये ? बहुत से पक्षी बोला करते है। आओ खेलें।

ढोला बाग म पहुचा। कुरज चम्पा बाग मे आम की डाली पर बैठी थी। कुरज, सच बताओ, किसकी भेजी हुई आई हो ? किसका पत्र लाई हो ? कुरज ने उत्तर दिया तुम्हारी विवाहिता पत्नी का सन्देश लेकर आई हू। मेरे पखो पर है पढलो। सन्देश पढकर ढोला उदास हो गया। ढोला रात को पीठ फेर चुपचाप सो गया। पत्नी पूछा, आज ऐसे कैसे सो रहे हो ? किसकी याद आ गई है। देश याद आया ह या मा बाप ?

न तो देश की याद आई है न मा बाप की। मेरी गौरी मेरे बिना दुखी हो रही है। प्रिये, मुझे अपनी मारूणी याद आ रही है।

ढोला ऊटो के टोले मे गया और पूछा, मुझे कौन मारूणी से मिलाने का साहस रखता है ? किसके गले मे घुघरू पहिनाऊ ? किसके गले मे मैं रेशम डोर डालू ? उसने एक ऊट को सजाया। पत्नी ने जाकर उस से कहा, करहा, तू मेरे बाप का है, ढोला को मत ले जाना, लगडे होने का बहाना करले।

ऊट वोला, मुझे तो ढोला की ससुराल जाने की बडी उमग है। ठडे पानी के हौद से मुझे पानी पिलायेंगे, नागर बेल चरने को देंगे। मैं तो ढोला के साथ जरूर जाऊगा।

ढोला ऊट पर बैठ रवाना हो गया। वह जाकर मालो की लडकी म

पूछती है, तू मेरी बहिन के समान है, बता तेरे पास होकर ढोला निकला ? बता किस उत्साह मे वह जा रहा था ?

माली की लडकी बोली, बाई, सच कहती हू ढोला तो इस उत्साह और उमग से जा रहा था मानो विवाह करने जा रहा हो।

कुए पर बडबोर की शाखा से पूछने लगी, अरी तू भी मेरी धर्म की बहिन है। तेरे पास होकर ढोला निकला और तूने उसे बिलमा कर रख क्यो न लिया ? सखी, मुझे प्रिय बडा याद आ रहा है।

बडबोर की शाखा ने उत्तर दिया, मैं क्या करती, उसने मेरे बेर तोडे ये पर चखा नहीं। जेब मे डाल दिये।

पत्नी ढोला को पहुचा कर आई तो उसे रोना आया। चूल्हे को पानी डाल कर बुझा दिया और धुवे का मिस कर रोने लगी। सवर मुझे छोड कर चला गया।

ढाला ऊट से जल्दी करने लगा, तेज चल, दिन थोडा रह गया है और घर बडी दूर है। करहा, मुझ अपनी गोरी से शीघ्र मिला दे।

ऊट बाला, ढोला, तुम भजन करके स्नान करो, सूरज छिपते छिपते और चाद निकलते निकलते तुम्हे मारुणी से मिला दू गा।

परिणहारी

काळी रे कळायण ऊमडी ए पणिहारी जोयलो
छोटोडा छाटा रो बरसँ मेह सैणांजो

श्राज धराउ धू धळो ए पणिहारी जोयलो
मोटोडी छाटा रो बरसे मेह सैणाजो

भर नाडा भर नाडिया ए पणिहारी जोयलो
भरियो भरियो समद तळाव सैणाश्रो

किणजी खुणाया नाडा नाडिया पणिहारी जोयलो
किणजी खुणाया भीम तळाव सैणाजो

सासुजो खुणाया नाडा नाडिया ए पणिहारी जोयलो
सुसरे जी खुणायो भीम तळाव सैणाजो

किण सू वधावो नाडा नाडिया ए पणिहारी जोयलो
किण सू वधावो भीम तळाव सैणाजो

नाळरा बधावा नाडा नाडिया ए पणिहारी जोयलो
मोतीडा बधावा भीम तळाव सैणाजो

सात सहेल्यां रे झूलरो ए पणिहारी जोयलो
पाणी ने चाली रे तळाव सैणाजो

घडो ना डूबै ताल मे ए पणिहारी जोयलो
ई डोणी रे तिर तिर जाय सैणाजो

पूछती है, तू मेरी बहिन के समान है, बता तेरे पास होकर ढोला निकला ? बता किस उत्साह से वह जा रहा था ?

माली की लडकी बोली, बाई, सच कहती हू ढोला तो इस उत्साह और उमग से जा रहा था मानो विवाह करने जा रहा हो।

कुए पर बडबोर की शाखा से पूछने लगी, अरी तू भी मेरी धर्म की बहिन है। तेरे पास होकर ढोला निकला और तूने उसे विलमा कर रख क्यो न लिया ? सखी, मुझे प्रिय बडा याद आ रहा है।

बडबोर की शाखा ने उत्तर दिया, मैं क्या करती, उसने मेरे बैर तोडे थे पर चखा नहीं। जेब मे डाल दिये।

पत्नी ढोला को पहुचा कर आई तो उसे रोना आया। चूल्हे को पानी डाल कर बुझा दिया और धुवे का मिस कर रोने लगी। भवर मुझे छोड कर चला गया।

ढोला ऊट से जल्दी करने लगा, तेज चल, दिन थोडा रह गया है और घर बडी दूर है। करहा, मुझे अपनी गोरी से शीघ्र मिला दे।

ऊट बोला, ढोला, तुम मजन करके स्नान करो, सूरज छिपते छिपते और चाद निकलते निकलते तुम्हे मारूणी से मिला दू गा।

पणिहारी

काळी रे कळायण ऊमडो ए पणिहारी जोयलो
छोटोडा छाटा रो वरसै मेह सैणांजो

आज धराउ घू घळो ए पणिहारी जोयलो
मोटोडी छाटा रो बरसे मेह सैणाजो

भर नाडा भर नाडिया ए पणिहारी जोयलो
भरियो भरियो समद तळाव सैणाओ

किणजो खुणाया नाडा नाडिया पणिहारी जोयलो
किणजी खुणाया भीम तळाव सैणाजो

सासुजो खुणाया नाडा नाडिया ए पणिहारी जोयलो
सुसरे जी खुणायो भीम तळाव सैणाजो

किण सू वधावो नाडा नाडिया ए पणिहारी जोयलो
किण सू वधावो भीम तळाव सैणाजो

नाळरा वधावा नाडा नाडिया ए पणिहारी जोयलो
मोतीडा वधावा भीम तळाव सैणाजो

सात सहेल्या रे झूलरो ए पणिहारी जोयलो
पाणी ने चाली रे तळाव सैणाजो

घडो ना डूबै ताल मे ए पणिहारी जोयलो
ई डोणी रे तिर तिर जाय सैणाजो

सात सहेल्या पाणी भर चाली ए पणिहारी जोयलो
पणिहारी रे रही रे तळाव सैणाजो

वेवते ग्रोठी ने हेलो मारियो ए लजा ग्रोठी जोयलो
घडियो उखणावतो जाय सैणाजो

सात सहेल्या रे काजळ टीलडी ए पणिहारी जोयलो
पणिहारी रा फीका नैण सैणाजो

सात सहेल्या रे ग्रोढण चू दडी ए पणिहारी जोयलो
पणिहारी रो धु धळो वेस सैणाजो

सातू सहेल्या रा सायवा घरे बसे ग्रो पणिहारी जोयलो
पणिहारी रा वसे छै परदेस सैणाजो

घडो तो पटक दे ताल मे ए पणिहारी जोयलो
थें चालो नी म्हारे लार सैणाजो

फाटो तो भागै थारी जीभडी ए लजा ग्रोठी जोयलो
खायजो थनें काळो नाग सैणाजो

हालो तो घडाय दू थनें वाडलो ए पणिहारी जोयलो
चालो तो घडाऊ नवसर हार सैणाजो

एडा तो वाडलिया घरे घणा रे लजा ग्रोठी जोयलो
खू टी टग्यो नवसर हार सैणाजो

हालो तो चीराऊ थांरे चूडलो ए पणिहारी जोयलो
हालो तो ग्रोढावू दखणी रो चीर सैणाजो

चूडलो चीरासी धण रो सायबो ए लजा ग्रोठी जोयलो
ग्रोढणिया ग्रोढासी मा जायो वीर सैणाजो

घडो तो भर नें पाछी वळी पणिहारी जोयलो
ऊभीयोडो फळसे सू वा'र सैणाजो

घडो तो पटक दू ऊभी चौक में ए म्हारी सासू जोयलो
वेगो रे म्हारो घडलियो उतार सैणाजो

किए थाने मोसो मारियो ए वहुवड जोयलो
कुए थाने दीनो गाळ सैणाजो

एक ओठोडै म्हाने यू कह्यो म्हारी सासू जोयलो
चाले नी म्हारे लार सैणाजो

किसो तो ओठी फूटरो ए वहुवड जोयलो
किए जी रो आवे उणिहार सैणाजो

देवर जी सरीसो ओठी फूटरो ए म्हारी सासू जोयलो
नणदल वाई रो आवे उणिहार सैणाजो

ओ ही तो वहू जी म्हारो डीकरो ए वहुवड जोयलो
ओ ही थारो भरतार सैणाजो

काली घटा उमड आई, है छोटी मोटी बूदें बरस रही है उत्तर दिशा धुघली हो रही है, छोटे छोटे ताल तलैया सब भर गये है और वडा सरोवर भी लबालब भर गया है।

इन ताल तलैयो को किसने खुदवाया है और इस विशाल सरोवर को खुदवाने वाला कौन है ?

इन ताल तलैयो को तो मेरी सास ने खुदवाया है और इस बडे तालाब को ससुरजी ने।

इन ताल तलैयों का और इस विशाल सरोवर का कैसे स्वागत सम्मान करें। ताल तलैयो की नारियलो से और इस भीम सरोवर की मातियो के अक्षतो से अर्चना की जाय।

सात सहेलियों के साथ पनिहारिन सरोवर पर पानी भरने गई। घडा जल म डूब नहीं रहा है और ईडुणी पानी के ऊपर तैर रही है। अपने परदेशी प्रियतम की याद मे पनिहारिन बैठी रह गई और साता सहेलिया पानी भर कर चली गई।

घडा भर लिया। मार्ग जाते एक ऊट सवार को देखा तो पनिहारिन ने पुकारा, जरा मेरा घडा उठवा दो।

ऊट सवार ने कहा, सातो सहेलियो ने तो काजल बिंदी स ऋृगार कर रखा है, पनिहारिन, तेरे नेत्र फीके क्या हैं ? साता सहेलिया न सुरगी चूदडी ग्रोढ रक्खी है, पनिहारिन, तेरे वस्त्र मैले क्यों हैं ?

उन सातो सहेलियो के पति तो घर पर हैं, मेरे पति विदेश मे हैं इसलिये मेर नयन फीके ग्रौर वस्त्र मैले हैं।

ऊट सवार कहने लगा, सुन्दरी इस घडे को यहीं पटक दो ग्रौर मेरे साथ चलो।

पनिहारिन ने गर्ज कर कहा, तेरी जीभ के काटा लगे, तुझे काला नाग डस जाय।

सवार प्रलोभन देने लगा, मेरे साथ चल, तुझे गले का गहना बाडला बनवा दूगा, नौसर हार ला दूगा।

ऐसे बाडले मेरे घर मे बहुत हैं ग्रौर नौसर हार खू टियो पर टगे हुए हैं।

सुन्दरी, मेरे साथ चली चल तुझे चूडा मोल ले दूगा, दक्षिणी चीर ला दूगा।

चूडा मेरा पति लायेगा ग्रौर चीर मेरा भाई। पनिहारी ने उसे निरतर कर दिया।

पनिहारी घडा भर घर को चली। द्वार के बाहर ग्रा खडी हुई। सासुजी, मेरा जल्दी घडा उतारो नहीं तो इसे मैं यही ग्रागन मैं फैंकती हू।

वहू को क्रोधित देख सास ने पूछा वहू, तुझको किसी ने ताना मारा है या किसी ने गाली दी है।

मुझे एक ऊट सवार ने ग्रपन साथ चलने को कहा।

वह सवार कैसा है ? कैसी सूरत है ?

वह देवरजी जैसा तो सुन्दर है ग्रौर ननद से उसकी सूरत मिलती है।

बहू, जब वह मेरा पुत्र है ग्रौर तेरा पति है।

मुड़ियो नांहि महेस

कूंपा राजा कोटा गढा रे किंवाड
थ्रो थानै रग सौ कूंप नरेस

दिखणी आयो सज दळा, पृथी भरावण पेस
कूंपा तो बिन कुण करे म्हारी मदत महेस ।। कूंपा राजा ।।

सुख म्हेला नेंह सोवणो, भार न झल्ले सेस
तो ऊभा दलपत तणा, मुरधर जाय महेस ।। कूंपा राजा ।।

विदा हुआ व्रजपाळ सू, कीनी अरज महेस
जीवूं जब लग जाणजो, कदेयन मिळसी देस ।। कूंपा राजा ।।

जानीवासो मेडते माढो दिखणी देस
दळ दिखणी रे ऊपरा, वगियो वीद महेस ।। कूंपा राजा ।।

महेस कहे सुण मेडता, साची साख भरेस
कुण भिडसी कुण भागसी, देखे जसी कहेस ।। कूंपा राजा ।।

कूंपे वाही कोप कर, तोना मे तरवार
डिवोई ने मारता, गई सतारे वात ।। कूंपा राजा ।।

दूजा ज्यूं भागो नहीं, दाग ज लागो देस
बागा खागा बारुडो, मही बाको महेस ।। कूंपा राजा ।।

पग जडिया पताळिया, अडिया भुज अमरेस
तन भडिया तरवारिया, मुडियो नाहि महेस ।।

कूंपा राजा कोटा गढा रे किंवाड
ओ थानै रग सौ कूप नरेस

कूपावत राजा महेश! तुम गढ और किलो के रक्षक हो। तुम्हे वार वार धन्य है।

दक्षिण से मरहठे सेना सजाकर आये है। वीरवर महेश तुम्हारे सिवाय हमारी मदद कौन कर सकता है?

अन्याय का बोझ इतना बढ गया है कि शेष नाग सहन नही कर पा रहा है। ऐसे समय सुख महलो मे नही सोया जाता। पराक्रमी दलपत के पुत्र, तुम्हारे रहते हमारी मरूधरा जा रही है।

जोधपुर से रवाना होते समय वीरवर महेश ने मरूधर नरेश से अर्ज की मेरे रहते हमारी मरूधरा कभी नही जा सकती।

बरात के ठहरने की जगह मेडता है और दक्षिण देश वाले आक्रामक, वधू पक्ष के हैं। दक्षिणी दल के ऊपर वर बनकर कूपावत महेश चढा।

महेश कहता है, हे मेडता सुनो, तुम सच्ची साक्षी देना। तुम्हारे इस सग्राम क्षेत्र मे कौन लडता है और कोन भागता है। जैसा देखो वैसा कहना।

कूपावत महेशदास ने क्रुद्ध हो, तोपों पर तरवारो से हमला बोल दिया। फ्रैंच जनरल डिवोय पर वार किया। दक्षिण की राजधानी सतारे तक गूज पहुची।

देश को दाग लगाकर दूसरों की तरह कूपावत वीर भागा नही। अत्यन्त दक्ष रणबका महेश पृथ्वी पर एक अनोखा वीर था।

ऐसा जम कर लड़ा कि जैसे पाताल में पाँव जड़ गये हों। उसकी विशाल भुजायें आकाश को छूती थी। तलवारों से उसकी बोटी बोटी कट गई पर वीरवर महेश मुड़ा नहीं।

कूंपावत राजा महेश, तुम कोट और गढ़ों रक्षक हो। तुम धन्य हो, तुम धन्य हो।

नोट—दक्खिन के मरहठा सैनापति तुकवा ने मेड़ता पर आक्रमण किया। साथ में फ्रेंच जनरल डिवोय का तोपखाना था। उसका मुकाबला आसोप के ठाकुर महेसदास जी कूंपावत ने किया। फ्रेंच जनरल डिवोय की गोले उगलती हुई तम्भों तोपों को चीर कर मरहठा सेना पर टूट पड़े। यह गीत पराक्रमी ठाकुर महेसदासजी का कीर्ति स्तम्भ है। जनरल डिबोय ने यह संस्मरण फ्रांसिसी भाषा में लिखा है तथा कर्नल जेम्स टॉड की फौज में जनरल डिवोय से मुलाकात हुई तब बड़े ओजस्वी शब्दों में उन्होंने इस युद्ध की चर्चा की थी।

ओलुं

माथा ने मेंमद घड़ावजो सा
ओळुं रखड़ी रे बीच
ओळुं घणी आवे म्हारा राज
जी नीद नही आवे म्हारा राज
राज री ओळु म्हे करा ओ
हाँ ओ गढपतिया राजा
म्हारी करेयन कोय
ओळुं घणी आवे म्हारा राज
नीद नही आवे म्हारा राज
ओळुं तो हरिया डूंगरा ओ
हा ओ मुरधरिया राजा
ओळुं हरिये रूमाल
ओळुं घणी आवे म्हारा राज
धान नही भावे म्हारा राज
हिवड़ा ने हांस घडावजो सा
ओळुं छतियाँ रे बीच
ओळुं घणी आवे म्हारा राज
घड़ी ए ने आवड़े म्हारा राज
ओळुं कर पीली पड़ी
लोग जांणे पंड रोग

छाने लाघण म्हे करा
पिया मिलण रे जोग
ओळु घणी आवे म्हारा राज
कागद थोडा हेत घणा
कू कर लिखूं बणाय
सागर मे पाणी घणो
गागर कोण समाय
ओळु घणी आवे म्हारा राज
नीद नही आवे म्हारा राज

सिर के आभूषण और रखड़ी के बीच आपकी ओळु सजी रखी है।

आपकी बडी ओळु आती है नीद नही आती आपकी याद तो मैं रात दिन करती हू। गढपति, मेरी याद तो आप करते नही होगे।

बहुत ओळु आती है। नीद नही आती। अनाज नही भाता।

मरुधर के निवासी, इन हरे पहाडों को देखकर आपकी ओळु आती है। आपका रूमाल देख देख याद करती हू।

छाती के बीच आपकी याद समा रही है। एक घडी भी जी नही लगता। आपकी ओळु कर के मैं पीली पड गई। लोग सोचते हैं मुझे पाडु रोग हो गया।

छिप छिप कर लघन करती हू इन व्रतो के करन से आप से मिलन हो जाय।

कागज का टुकडा तो छोटा है, अपने प्रेम को ओळु को, कैसे लिखू जैसे सागर का पानी घडे मे नही समा सकता। बडी याद आती है। नीद नही आती, जो नही लगता। अनाज नही भाता।

गोरबन्द लूंबालो

ईलाले बिलाले री जान चढ, म्हारो भूरियो श्रडोळो लागे रे
म्हारो गोरबन्द लू बाळो ।

गादी माड गदेला माडिया, दोय दोय तगडा ताण्या रे
म्हारो गोरबन्द लू बाळो ।

खारा समद सू कोडा मगाया, गढ बीकाणे जाय पोयो राज
म्हारो गोरबन्द लू बाळो ।

गाया रे चरावती गोरबन्द गू थियो, भैस्यां चरावती पोयो पोयो राज
म्हारो गोरबन्द लू बाळो

देराण्या जेठाण्या मिल गोरबन्द गू थियो, नणदल साचा मोती
पोयो पोयो राज
म्हारो गोरबन्द लू बाळो ।

श्रासे पासे मैं लाला जडाई बीच रेशम रा फू दा श्रो राज
म्हारो गोरबन्द लू बाळो ।

सिन्ध रे सिन्धुडे म्हारे गोरबन्द गू थियो, बीकाणे रे रायके पोयो
श्रो राज
म्हारो गोरबन्द लू बाळो ।

बारा महिना बेगरडो कातो
म्हारो गोरबन्द लू बाळा ।
तेरा बीसी रो म्हारो तेलियो जाखोडो, नव बीसा रो सजाई श्रो राज
म्हारो गोरबन्द नखराळो ।

म्हारो गोरबदियो वतावे जिए ने, भूराळी भोटी दे दू ओ राज
म्हारो गोरबन्द नखराळो ।

म्हारो गोरबन्द वतावे जिए ने, लाख बधाई दे दू ओ राज
म्हारो गोरबन्द लू बाळो ।

मेला बैठ्योडी मैं अरज करू, म्हारा रूठ्योडा जवाई ने मनावो राज
म्हारो गोरबन्द लू बाळो ।

गाव गांव रा पागी बुलाया, म्हारो गोरबन्द ने सोभायो राज
म्हारो गोरबन्द लू बाळो ।

इणी रे राया रे गाव मे, इबराळो पागी रे सुणोजे
म्हारो गोरबन्द लाय ने देवो देवो राज

मासी सासुसा रे छोकरे छिपायो, भाटी हकनाव सी न दियो ओ राज
म्हारो गोरबन्द लाय ने देवो ।

भूरियो रे ऊट म्हारो काकोडी सू बधियो,
तेलियो अळेटो खावे खावे ओ राज
लाध्यो गोरबन्द नखराळो ।

पूछ भूरावे रो फैल जेवी आड तिरतो जावे ओ राज
लाध्यो गोरबन्द लू बाळो ।

बेलीडा साथीडा ने रामा साम्हो कीजो, गाव रे धणी ने डोडो मुजरो राज
म्हारो गोरबन्द लू बाळो ।

डूगर चढ ने गोरबन्द गायो, जोधाणा री कछेड़ी सामळयो राज
म्हारो गोरबन्द लू बाळो ।

लडरी लू बा भू बा रे, म्हारो गोरबन्द नखराळो ।

इलाला बिलाला को बारात चढ रही है। मेरा ऊट अडोळा (फीका) लग रहा है। गोरबन्द किसी ने चुरा लिया। लू वाला गारवन्द।

गादी गद्दे लगाये, पत्ताण लगाया। एक नहीं दो दो तग से कसा।

खारे समुद्र से कौडिया और कोडे मगाये। बीकानेर मे बैठ कर उसे पोया।

गोरबन्द लूंबालो

ईलाले बिलाले री जान चढ, म्हारो भूरियो अडोळो लागे रे
म्हारो गोरबन्द लू वाळो ।

गादी माड गदेला माडिया, दोय दोय तगडा ताण्या रे
म्हारो गोरबन्द लू वाळो ।

खारा समद सू कोडा मगाया, गढ वीकाणे जाय पोयो राज
म्हारो गोरबन्द लू वाळो ।

गाया रे चरावती गोरबन्द गू थियो, भैंस्याँ चरावती पोयो पोयो राज
म्हारो गोरबन्द लू वाळो

देराण्या जेठाण्या मिल गोरबन्द गू थियो, नणदल साचा मोती
पोयो पोयो राज
म्हारो गोरबन्द लू वाळो ।

आसे पासे मैं लाला जडाई, बोच रेशम रा फूदा ओ राज
म्हारो गोरबन्द लू वाळो ।

सिन्ध रे सिन्धुडे म्हारे गोरबन्द गू थियो, बीकाणे रे रायके पोयो
ओ राज
म्हारो गोरबन्द लू वाळो ।

बारा महिना वेगरडो कातो
म्हारो गोरबन्द लू बाळो ।
तेरा बोसो रो म्हारो तेलियो जाखोडो, नव बोसा रो सजाई ओ राज
म्हारो गोरबन्द नखराळो ।

म्हारो गोरवदियो वतावे जिण ने, भुराळी भोटी दे दू ओ राज
म्हारो गोरवन्द नखराळो ।

म्हारो गोरवन्द वतावे जिण ने, लाख बधाई दे दू ओ राज
म्हारो गोरवन्द लू वाळो ।
मेला वैठ्योडी मैं अरज करू, म्हारा रुठ्योडा जवाई ने
मनावो राज
म्हारो गोरवन्द लू वाळो ।
गाव गाव रा पागी बुलाया, म्हारो गोरबन्द ने सोभायो राज
म्हारो गोरवन्द लू वाळो ।
इणी रे राया रे गाव मे, इवराळो पागी रे सुणीजे
म्हारो गोरवन्द लाय ने देवो देवो राज
मासी सासुसा रे छोकरे छिपायो, भाटी हकनाव सो न दियो ओ राज
म्हारो गोरवन्द लाय ने देवो ।
भूरियो रे ऊट म्हारो काकोडी सू बधियो,
तेलियो अळेटो खावे खावे ओ राज
लाध्यो गोरवन्द नखराळो ।
पू छ भुरावे रो केल जेवी आड तिरतो जावे ओ राज
लाध्यो गोरवन्द लू वाळा ।
वेलीडा साथीडा ने रामा साम्हो कीजो, गाव रे धणी ने डोडो मुजरो राज
म्हारो गोरवन्द लू वाळो ।
डू गर चढ ने गोरवन्द गायो, जोधाणा री कचेडी सामळयो राज
म्हारो गोरवन्द लू वाळो ।
लडरी लू वा भू वा रे, म्हारो गोरवन्द नखराळो ।

इलाला बिलाला की बारात चढ रही है । मेरा ऊट अडोळा (फीका) लग
रहा है । गोरवन्द किसी ने चुरा लिया । लू वाला गोरवन्द ।

गादी गद्दे लगाये, फ्ञाए लगाया । एक नहीं दो दो तग से कसा ।

खारे समुद से कौडिया और कोडे मगाये । बीकानेर में बैठ कर उसे
पाया ।

गायें चराती हुई गोरबन्द को गूथा। भैंस चराती हुई उसे पोया। मेरा लूबाळा गोरबन्द। मेरा गोरबन्द नखराला था।

देवराणी और जेठाणी ने मिलकर गोरबन्द गूंथा। ननद ने सच्चे सच्चे मोती उसमे पिराये। आसपास मे लालें जडी बीच बीच मे रेशम के फूदे डाले।

नखरावा, लूबाला गोरबन्द।

सिध के रहने वाले सिंधी ने मेरा गोरबन्द गूथा। बीकानेर के रायके ने इसे पिरोया। इसे बनाने के लिये पूरे साल मैंने वेगरडी (ऊट की जट) चरखे पर काती। कातते-कातते मेरे हाथ सुन्न पड गये।

मेरा लूबाला, भूमाला नखराला गोरबन्द।

तेरह बीस (२६०) रुपयों का मेरा वह सुन्दर काले रग जाखोडा (बढिया सवारी का ऊट) है उसका जीन पूरे नौ बीस (१८०) रूपये का।

मेरा कोई खोया हुआ गोरवन्द बतादे तो इनाम मे भूरी भैंस दे दू। मुंह मागा इनाम दू।

मैं महलो से बैठी हाथ जोड कर अर्ज करती हू गोरवन्द चोरी चले जाने से जवाई रूठ गया है। जवाई को मनालो।

गाव गाव मे खोजिये खोजी बुलाये गये। इवराला नाम के खोजी की प्रशसा सुनते है। मेरा गौरवन्द तलास करके मुझे दे दो।

उक्त खोजी ने पता लगा लिया। मौसी सास के बेटे ने गोरबन्द चुराया और हकनावसी भाटी को जाकर दिया। मेरा गोरबन्द मुझे जल्दी दिलावो।

भूरा ऊट काकोडी पड से बधा गोरबन्द के वियोग मे बळ खा रहा है। गोरवन्द मिल गया देखो अब मेरे ऊट की शान देखो। पानी मे आड तिरती हो इस तरह चला जा रहा है। साथियो को राम-राम। गाव के धणी को ड्योढे मुजरे।

ऊची पहाडी पर चढ कर मैंने इस गोरवन्द गीत को गाया। जोधपुर की कचहरी म इसे लोगो ने सुना।

मेरा नखराळा गोरबंद. लूंबाला गोरबन्द। लूबाला गोरवन्द।